www.swatantramat.com

स्वतंत्र मत

■ वर्ष 29 अंक 76 | डाक/नगर संस्करण | ■ जबलपुर मंगलवार 10 सितम्बर 2024 | ■ पृष्ठ 12 | ■ मूल्य रु. 3.00

7

जवान के प्रदर्शन के...

10

इटली के जैनिक...

रेलवे ने मंजूर किया विनेश और बजरंग का इस्तीफा

चंडीगढ़। कांग्रेस में शामिल हुए पहलवान बजरंग पूनिया और विनेश फोगाट का इस्तीफा रेलवे ने मंजूर कर लिया है। बता दें कि बजरंग पूनिया और विनेश फोगाट दोनों रेलवे में ओएसडी के पद पर तैनात थे। 6 सितंबर को दोनों ने रेलवे को अपना इस्तीफा भेजा था। विनेश फोगाट को कांग्रेस ने जुलाना विधानसभा सीट से अपना प्रत्याशी बनाया है, जबकि बजरंग पूनिया को किसान कांग्रेस का कार्यकारी अध्यक्ष बनाया गया है।

एलओसी पर दो आतंकवादी मारे गए

राजौरी। जम्मू कश्मीर में चल रही चुनावी प्रक्रिया के बीच राजौरी जिले के नौशेरा सेक्टर में एलओसी पर घुसपैठ की कोशिश को नाकाम करते हुए भारतीय सैनिकों ने दो आतंकियों को मार गिराया है। इस मुठभेड़ के बाद चलाए गए सर्च ऑपरेशन में मौके से दो एके-47 राइफल और एक पिस्तौल बरामद हुई है। इसके अलावा अन्य आतंकियों की तलाश के लिए पूरे इलाके में सर्च ऑपरेशन चलाया जा रहा है।

सर्पदंश से एक ही परिवार के 3 की मौत

ओडिशा। बौध में एक हैरान करने वाला मामला सामने आया है। यहां एक ही परिवार में चार लोगों को सांप ने काट लिया। सांप काटने की वजह से तीन सगी बहनों की मौत हो गई। वहीं उनके पिता की भी हालत गंभीर बताई गई है। तीन बहनों के नाम सुधिरेखा 13 साल, शुभरेखा मलिक 12 साल और सौरभी मलिक 3 साल हैं। घटना रविवार रात की है।

मणिपुर राजभवन पर पथराव, 20 घायल

इंफाल। मणिपुर की राजधानी इंफाल में सोमवार को सैकड़ों की संख्या में प्रदर्शन कर रहे स्टूडेंट्स ने राजभवन पर पत्थरबाजी की। इस दौरान सुरक्षाकर्मी भागते दिखे। पुलिस और सुरक्षाबलों ने प्रदर्शनकारियों को बैरिकेड लगाकर रोका। कई राउंड आंसू गैस के गोले और रबर बुलेट दागे। इसमें 20 स्टूडेंट्स घायल हो गए। मैतेई समुदाय के ये छात्र मणिपुर में अचानक बढ़ी हिंसक घटनाओं को लेकर 8 सितंबर से प्रदर्शन कर रहे हैं।

29 आईएएस, 20 राप्रसे अफसरों के तबादले

भोपाल। राज्य सरकार ने 29 आईएएस और 20 राज्य प्रशासनिक सेवा के अफसरों के तबादले किए हैं। 11 जिलों में जिला पंचायत सीईओ के खाली पदों पर आईएएस पदस्थ किए हैं। एक अन्य आदेश में 20 राज्य प्रशासनिक सेवा के अफसरों का तबादला किया है। पश्चिम क्षेत्र विद्युत वितरण कंपनी के सीएमडी को बदल दिया गया है।

बदल जायेंगी जिलों की सीमाएं

संभाग और जिलों का फिर से होगा परिसीमन : मुख्यमंत्री

भोपाल

मध्यप्रदेश में जल्द ही प्रशासनिक इकाइयों की सीमाओं का पुनर्गठन किया जाएगा। राज्य सरकार ने संभाग, जिला, तहसील और ब्लॉक जैसे प्रशासनिक क्षेत्रों की सीमाओं को भौगोलिक आधार पर फिर से तय करने का निर्णय लिया है। यह काम अक्टूबर के अंत तक शुरू होने की संभावना है। इसके लिए प्रशासनिक पुनर्गठन इकाई आयोग में नियुक्तियों की प्रक्रिया तेज कर दी गई है। मध्यप्रदेश में संभागों, जिलों और तहसीलों का सीमांकन नए सिरे से करने के लिए सरकार ने परिसीमन आयोग के गठन को मंजूरी दे दी है। आयोग का अध्यक्ष रिटायर्ड एसीएस मनोज श्रीवास्तव को बनाया गया है। सदस्यों की संख्या पर निर्णय बाद में लिया जाना है। आम लोग इस आयोग को अपने क्षेत्र की प्रशासनिक संरचना को लेकर सुझाव दे सकेंगे। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव

ने सोमवार सुबह बीना रवाना होने से पहले एक वीडियो जारी कर यह जानकारी दी। मुख्यमंत्री ने कहा- कई टोले, मजरे और पंचायतों के लोगों को जिला, संभाग, तहसील, विकासखंड जैसे मुख्यालयों तक पहुंचने के लिए 100 से 150 किमी का चक्कर लगाना पड़ रहा है, जबकि ऐसे क्षेत्रों से दूसरे जिले, संभाग, विकासखंड और तहसील मुख्यालय नजदीक हैं। कई संभाग बड़े-छोटे हो गए हैं। ऐसी विसंगतियां दूर करने के लिए नया परिसीमन आयोग बनाया गया है। इसके माध्यम से नजदीकी जिला मुख्यालय से जोड़कर जनता की बेहतरी के लिए जो अच्छा हो सकता है, वह करना है।

...तो हर विधायक मांगेगा जिला

उप नेता प्रतिपक्ष हेमंत कटारे ने कहा है कि जिलों का गठन विधायकों के कहने के अनुसार नहीं होना चाहिए। इसे जनता की मांग के अनुसार होना चाहिए। विधायक अपनी राजनैतिक रोटियां सेंक रहे हैं। ये गलत है। कल कोई भी नेता आकर खड़ा हो जाए और कहे कि मेरी विधानसभा या क्षेत्र को जिला बना दें। ये कोई मजाक है क्या? जिले की पूरी प्रशासनिक व्यवस्था बनती है।

इस आधार पर होंगे नए सीमांकन

सीमाओं का सही परिसीमन नहीं होने के कारण कई क्षेत्रों के लोगों को मुख्यालयों तक पहुंचने में असुविधा होती है। कुछ गांव और पंचायतों को जिला, तहसील और विकासखंड मुख्यालय तक पहुंचने के लिए 100 से 150 किलोमीटर की लंबी दूरी तय करनी पड़ती है, जबकि अन्य जिलों या तहसीलों के मुख्यालय उनके नजदीक होते हैं। इस असुविधा के समाधान के लिए प्रशासनिक पुनर्गठन इकाई आयोग द्वारा रिपोर्ट तैयार की जाएगी, इसके आधार पर नए सीमांकन का फैसला किया जाएगा।

कम होंगी लोगों की समस्याएं

सरकार ने इस पुनर्गठन के लिए एक विशेष आयोग का गठन किया है, जिसमें राजनीतिक और प्रशासनिक दोनों क्षेत्रों के अधिकारियों की नियुक्ति की जाएगी। आयोग की रिपोर्ट के आधार पर सीमाओं के पुनर्गठन का काम आगे बढ़ाया जाएगा। हालांकि, राजनीतिक क्षेत्र से किन लोगों को जिम्मेदारी सौंपी जाएगी, यह अभी तय नहीं हुआ है। इस कदम से प्रदेश में प्रशासनिक इकाइयों का पुनर्गठन और सीमाओं का नया निर्धारण होगा, जिससे लोगों की समस्याएं कम होंगी और प्रशासनिक प्रक्रियाएं सुचारू होंगी।

मनोज श्रीवास्तव को आयोग की जिम्मेदारी

मुख्यमंत्री ने कहा कि अपर मुख्य सचिव स्तर के रिटायर्ड अधिकारी मनोज श्रीवास्तव को आयोग के अध्यक्ष की जिम्मेदारी दी गई है। सागर, उज्जैन, इंदौर, धार जैसे कई बड़े जिले हैं, जहां कई कठिनाइयां है। जैसे- बीना में रिफाइनरी बन गई, यह बड़ा स्थान हो गया। आने वाले समय में यहां युक्तिकरण के माध्यम से विचार किया जाएगा। जैसे हमने पुलिस थानों की सीमाएं बदली थीं और जनता को थानों के नजदीक पहुंचाने का प्रयास किया था, उसी तरह प्रशासनिक दृष्टि से यह निर्णय भी कारगर सिद्ध होगा।

रक्षा मंत्रालय ने एचएएल के साथ किया समझौता

नई दिल्ली। भारतीय वायुसेना के मजबूत विमान एसयू-30एमकेआई के लिए रक्षा मंत्रालय ने 240 एयरो-इंजन की खरीद के लिए सरकारी एयरोस्पेस प्रमुख हिंदुस्तान एयरोनॉटिक्स लिमिटेड के साथ 26,000 करोड़ रुपये का सौदा किया। जानकारी के मुताबिक एयरो-इंजन का निर्माण एचएएल के कोरापुट डिवीजन की तरफ से किया जाएगा और उम्मीद है कि यह एसयू-30 बेड़े की परिचालन क्षमता को बनाए रखने के लिए भारतीय वायु सेना की जरूरत को पूरा करेगा। एक आधिकारिक बयान में कहा गया है कि आत्मनिर्भर भारत पहल को बढ़ावा देते हुए रक्षा मंत्रालय ने 26,000 करोड़ रुपये से अधिक की लागत से एसयू-30एमकेआई विमान के लिए 240एएल-31एफपीएयरो इंजन के लिए एचएएल के साथ एक अनुबंध पर हस्ताक्षर किए। रक्षा सचिव गिरिधर अरामने और वायु सेना प्रमुख एयर चीफ मार्शल वीआर चौधरी की उपस्थिति में मंत्रालय और एचएएल के वरिष्ठ अधिकारियों ने अनुबंध समझौते पर हस्ताक्षर किए। जानकारी के मुताबिक इन इंजनों में 54 प्रतिशत से अधिक स्वदेशी सामग्री होगी, जो एयरो इंजन के कुछ प्रमुख घटकों के स्वदेशीकरण के कारण बढ़ी है। इनका निर्माण हिंदुस्तान एयरोनॉटिक्स लिमिटेड के कोरापुट डिवीजन में किया जाएगा।

एसयू-30एमकेआई जेट के इंजन के लिए 26000 करोड़ रुपये की डील

देश की रक्षा तैयारियों को मिलेगी मजबूती

सुखोई-30 एमकेआई लड़ाकू विमान भारतीय वायुसेना का सबसे शक्तिशाली और रणनीतिक रूप से महत्वपूर्ण बेड़े में से एक है। हिंदुस्तान एयरोनॉटिक्स लिमिटेड की तरफ से इन एयरो-इंजनों की आपूर्ति भारतीय वायुसेना के बेड़े की आवश्यकताओं को पूरा करेगी, ताकि वो अपने निर्बाध संचालन को जारी रख सकें और देश की रक्षा तैयारियों को मजबूत कर सकें।

आसमान में दिखी जल थल और नभ की ताकत

नई दिल्ली। भारत के आसमान में आज तीनों सेनाओं का तेजी, ताकत और तालमेल की वो ताकत दिखाई दी, जिसे देखकर चीन हो या पाकिस्तान सभी की घीघी बंध गई। भारतीय सैन्य क्षमता का प्रदर्शन करते हुए तीनों सेनाओं के उप प्रमुखों ने तेजस में उड़ान भरी। यह पहला मौका है जब एक साथ तीनों सेनाओं के प्रमुखों ने उड़ान भरी है। रक्षा मंत्रालय ने बताया है कि तीनों सेनाओं के ही उपप्रमुखों ने एकीकरण और बेहतर तालमेल का प्रदर्शन करते हुए स्वदेशी लड़ाकू विमान तेजस में उड़ान भरी। देश में चल रहे तरंग शक्ति अभ्यास के दौरान सोमवार को भारतीय वायु सेना उप प्रमुख एयर मार्शल एपी

सिंह ने तेजस को स्वयं उड़ाया। वहीं भारतीय सेना उप प्रमुख लेफ्टिनेंट जनरल एनएस राजा सुब्रामणि और नौसेना उप प्रमुख वाइस एडमिरल कृष्ण स्वामीनाथन ने वायु सेना के पायलटों के साथ ट्वीन सीटर तेजस विमान में उड़ान भरी। इस मौके पर तीनों शीर्ष अधिकारियों ने अभ्यास में हिस्सा लेने वाली वायु सेना के अधिकारियों के साथ बातचीत भी की। भारतीय वायु सेना से मिली जानकारी के अनुसार तीनों सेना प्रमुखों ने 45 मिनट तक उड़ान भरी। 12 सितंबर को अमरीका, ऑस्ट्रेलिया, सिंगापुर, ग्रीस, श्रीलंका, यूएई और जापान के एयर चीफ मार्शल जोधपुर पहुंचेंगे और स्वदेशी विमान तेजस और सुखोई में उड़ान भरेंगे। इस मौके पर रक्षामंत्री राजनाथ सिंह भी पहुंच सकते हैं।

कालिंदी एक्सप्रेस को पलटाने की साजिश

ट्रैक पर सिलेंडर से टकराई ट्रेन, पेट्रोल-बारूद मिला

कानपुर

उत्तर प्रदेश के कानपुर जिले में एक बड़ा रेल हादसा टल गया। अज्ञात लोगों ने प्रयागराज से भिवानी जा रही कालिंदी एक्सप्रेस के सामने पटरी पर रसोई गैस सिलिंडर रख दिया, जिसे देखकर चालक ने इमरजेंसी ब्रेक लगाए और सिलिंडर उससे टकराकर दूर जा गिरा। रेलवे ने इस सिलसिले में अज्ञात लोगों के खिलाफ एफआईआर दर्ज कराई है। पुलिस ने 6 संदिग्धों को हिरासत में लिया है। घटना के बाद आरपीएफ-जीआरपी और रेलवे के सीनियर अफसरों ने जांच की। मामले की जांच के लिए वरिष्ठ अधिकारियों की अगुवाई में 5 टीमें गठित की

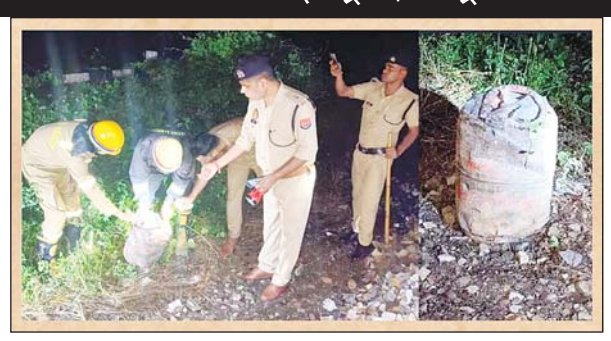

गई हैं। घटना में आतंकवादियों का हाथ होने की आशंका के मद्देनजर आतंकवाद निरोधी दस्ते ने भी मामले की अलग से जांच शुरू की है। इस मामले में पुलिस ने 6 संदिग्धों को पूछताछ के लिए उठाया है। पुलिस ने रडार पर इलाके के जमातियों को भी लिया है। डीसीपी वेस्ट राजेश कुमार सिंह ने बताया कि आस-पास से आने वाले जमातियों की जांच की जा रही है। कहां-कहां से जमाती आए हैं और कहां ठहरे हैं, इसकी भी पड़ताल की जा रही है। साथ ही सीसीटीवी कैमरों से भी जांच पड़ताल की जा रही है।

सिलेंडर फटा नहीं, ट्रेन से टकराकर गिरा

संयुक्त पुलिस आयुक्त हरीश चंद्र ने सोमवार को यहां बताया कि रविवार रात 8 बजकर 20 मिनट पर प्रयागराज से भिवानी जा रही कालिंदी एक्सप्रेस के चालक ने बिल्हौर रेलवे स्टेशन से कुछ दूर पहले पटरी पर एक रसोई गैस सिलेंडर रखा देखा। उसने आपातकालीन ब्रेक लगाए मगर ट्रेन सिलेंडर से टकरा गई और थोड़ा आगे जाकर रुक गई। सिलिंडर भी उछलकर दूर जा गिरा। उन्होंने कहा कि सिलेंडर इंजन में फंसकर फटा नहीं, वरना बड़ा हादसा हो सकता था।

ड्यूटी पर तुरंत लौटें डॉक्टर: सुप्रीम कोर्ट

नई दिल्ली। कोलकाता में चिकित्सक से दुष्कर्म और हत्या मामले से संबंधित याचिका पर उच्चतम न्यायालय में सुनवाई हुई। इस दौरान केंद्रीय अन्वेषण ब्यूरो ने मामले की जांच को लेकर स्टेटस रिपोर्ट पेश की। बंगाल सरकार ने भी कोर्ट को स्थिति रिपोर्ट सौंपी। सुनवाई के दौरान वरिष्ठ अधिवक्ता कपिल सिब्बल ने सुप्रीम कोर्ट को बताया कि पश्चिम बंगाल सरकार ने स्थिति रिपोर्ट दाखिल की है। इसमें बताया गया है कि जब डॉक्टर काम नहीं कर रहे थे, तब 23 लोगों की

मौत हो गई। सुनवाई के बाद कोर्ट सीबीआई से नई स्टेटस रिपोर्ट मांगी है। कोर्ट ने जांच एजेंसी को एक हफ्ते का समय दिया है। इसके बाद कोर्ट ने मामले पर सुनवाई 17 सितंबर तक के लिए स्थगित कर दी। सुप्रीम कोर्ट ने याद दिलाया कि उसने डॉक्टरों के काम पर लौटने के बाद उनके खिलाफ कोई कार्रवाई न करने का निर्देश दिया है। कोर्ट ने टिप्पणी की है कि अब भी अगर वे काम पर नहीं लौटते हैं तो हम राज्य सरकार को कार्रवाई करने से नहीं रोक सकते हैं। इस पर वरिष्ठ अधिवक्ता गीता लूथरा ने जवाब दिया कि डॉक्टरों को धमकाया जा रहा है। सुप्रीम कोर्ट ने डॉक्टरों से कल शाम 5 बजे तक काम पर लौटने को कहा। कोर्ट ने आश्वासन दिया कि उनके खिलाफ कोई कार्रवाई नहीं की जाएगी। हालांकि, शीर्ष अदालत ने चेतावनी दी कि अगर काम से लगातार दूर रहना जारी रहा तो उनके खिलाफ अनुशासनात्मक कार्रवाई की जा सकती है।

गठबंधन पर कांग्रेस-आप में नहीं बनी बात

आम आदमी पार्टी ने हरियाणा में जारी की पहली लिस्ट

नई दिल्ली। हरियाणा में कांग्रेस के साथ बनते-बिगड़ते गठबंधन की खबरों के बीच आम आदमी पार्टी ने अपने उम्मीदवारों की पहली लिस्ट जारी कर दी हैण् इस लिस्ट में पार्टी ने 20 प्रत्याशियों के नाम का ऐलान किया है। आम आदमी पार्टी ने अपने उम्मीदवारों की ये लिस्ट ऐसे समय में जारी की है जब दोनों दलों के बीच गठबंधन की चर्चा चल रही थी और आप या कांग्रेस की तरफसे गठबंधन होने या नहीं होने को लेकर औपचारिक ऐलान नहीं किया गया। दरअसल हरियाणा में गठबंधन को लेकर आप कांग्रेस से 10 सीटें मांग रही थी, लेकिन अब आम आदमी पार्टी ने अपने 20 उम्मीदवारों की लिस्ट जारी कर दी है, जिससे लगता है कि हरियाणा में अब कांग्रेस-आप का गठबंधन नहीं होगा। वहीं आम आदमी पार्टी की प्रवक्ता प्रियंका कक्कर ने आप के उम्मीदवारों को बधाई दी है। उन्होंने कहा कि आज जो सूची जारी हुई है उन सभी 20 उम्मीदवारों को बहुत बधाई।

सभी 90 सीटों पर लड़ेगी आप- इससे पहले सोमवार को आम आदमी पार्टी के हरियाणा के अध्यक्ष सुशील गुप्ता ने कहा कि अगर कांग्रेस विधानसभा चुनाव के लिए उसके साथ गठबंधन को अंतिम रूप देने में विफल रहती है तो पार्टी सभी 90 सीटों पर प्रत्याशी उतारेगी।

कैंसर की दवा और नमकीन पर टैक्स घटा

जीएसटी-काउंसिल मीटिंग में फैसला

नई दिल्ली। जीएसटी काउंसिल की 54वीं मीटिंग 9 सितंबर को हुई। इसमें हेल्थ, एजुकेशन और फूडिंग सेक्टर से जुड़े कुछ अहम फैसले हुए। मीटिंग के बाद प्रेस कॉन्फ्रेंस में वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने बताया कि कैंसर की दवाओं पर जीएसटी 12 प्रतिशत से घटाकर 5 प्रतिशत कर दिया गया है। वहीं, नमकीन पर अब 18 प्रतिशत की जगह 12 प्रतिशत जीएसटी लगेगा। वित्त मंत्री ने बताया कि, हेल्थ इंश्योरेंस प्रीमियम पर लगने वाले जीएसटी में कटौती पर अब नवंबर में फैसला होगा। इसके अलावा अब केंद्र और राज्य से मान्यता प्राप्त यूनिवर्सिटीज और रिसर्च सेंटर को ग्रांट लेने पर जीएसटी नहीं चुकाना होगा। हेल्थ इंश्योरेंस प्रीमियम पर 18 प्रतिशत जीएसटी में कटौती को लेकर वित्त मंत्री ने कहा कि इस मामले में ग्रुप ऑफ मिनिस्टर्स का गठन किया गया है। जीओएम अक्टूबर के अंत तक रिपोर्ट सौंपेगा और नवंबर की मीटिंग में इस पर विचार किया जाएगा। हाल ही में केंद्रीय परिवहन मंत्री नितिन गडकरी ने भी हेल्थ इंश्योरेंस में प्रीमियम पर लगने वाले जीएसटी को हटाने की बात कही थी।

'देवता' का अर्थ भगवान नहीं

राहुल गांधी ने अमेरिका दौरे के दौरान दी नई परिभाषा

नई दिल्ली।

नेता प्रतिपक्ष और कांग्रेस सांसद राहुल गांधी इन दिनों अमेरीका दौरे पर है। इस दौरान टेक्सास के डलास में बातचीत के दौरान राहुल गांधी ने आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और नौकरियों पर इसके संभावित प्रभाव के बारे में चिंताओं को संबोधित करते हुए 'देवता' शब्द की अपनी अनूठी व्याख्या साझा की। भारतीय संस्कृति के बारे में बोलते हुए, राहुल ने समझाया कि 'देवता' शब्द को अक्सर भगवान या देवता के समानार्थी के रूप में गलत

समझा जाता है। इसके बजाय, उन्होंने स्पष्ट किया कि भारतीय परंपरा में 'देवता' एक ऐसे व्यक्ति को संदर्भित करता है जिसके आंतरिक विचार और भावनाएं उनके बाहरी अभिव्यक्तियों के साथ पूरी तरह से मेल खाती हैं- एक वास्तव में पारदर्शी व्यक्ति। उन्होंने कहा, एक देवता वह होता है जो अपनी हर बात को खुलकर व्यक्त करता है या सोचता है। उन्होंने भारतीय राजनीति की जटिलताओं पर आगे विचार किया, इस बात पर जोर देते हुए कि कैसे व्यक्तियों को दूसरों के डर, महत्वाकांक्षाओं और लालच को बेहतर ढंग से समझने और उनके साथ सहानुभूति रखने के लिए दबाना चाहिए। गांधी की टिप्पणियों ने सांस्कृतिक मूल्यों और राजनीतिक गतिशीलता के बीच संबंध स्थापित करते हुए पारदर्शिता और प्रामाणिकता के महत्व के बारे में बताया। प्रौद्योगिकी के भविष्य पर बात करते हुए राहुल गांधी ने एआई के बढ़ते प्रभाव और रोजगार पर इसके संभावित प्रभावों पर बात की। उन्होंने मौजूदा बहस की तुलना अतीत में कंप्यूटर और कैलकुलेटर के आगमन से जुड़ी आशंकाओं से की।

राहुल गांधी अब पप्पू नहीं: पित्रोदा

कांग्रेस नेता राहुल गांधी को लेकर इंडियन ओवरसीज कांग्रेस के अध्यक्ष सैम पित्रोदा ने कहा है कि राहुल गांधी पप्पू नहीं हैं, वे गहरी सोच रखने वाले रणनीतिकार हैं। सैम पित्रोदा ने ये बयान राहुल गांधी के साथ टेक्सास में भारतीय प्रवासियों को संबोधित करते वक्त दिया है। इंडियन ओवरसीज कांग्रेस के अध्यक्ष ने आगे कहा कि राहुल गांधी समावेशिता के हिमायती हैं। सैम पित्रोदा ने अपने बयान में कहा कि राहुल गांधी के पास एक ऐसा दृष्टिकोण है, जो भाजपा की तरफ से करोड़ों रुपये खर्च करके प्रचारित किए जाने वाले दृष्टिकोण से बिलकुल अलग है।

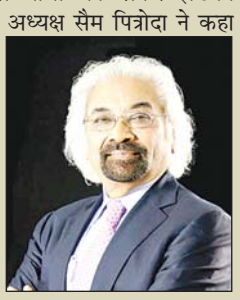

अधिकारी छात्रावासों का करें निरीक्षण, छात्रावासों में मिलने वाली सुविधाओं की करें जांच : कलेक्टर

शहडोल ।

कलेक्टर डॉ. केदार सिंह की उपस्थिति में सोमवार को कलेक्टर कार्यालय के विराट सभागार में समयावधि पत्रों की समीक्षा बैठक सम्पन्न हुई। समयावधि पत्रों की समीक्षा बैठक में कलेक्टर डा. केदार सिंह ने सभी विभागों की विभागवार समीक्षा की तथा आवश्यक निर्देश दिए। समीक्षा बैठक में कलेक्टर डॉ. केदार सिंह ने राजस्व विभाग की समीक्षा करते हुए समस्त राजस्व अधिकारियों को निर्देश दिए कि सीमाकंन, बंटाकन, नामातंरण जैसे अन्य राजस्व प्रकरणों का निराकरण प्राथमिकता के साथ कराए किसी भी स्थिति में राजस्व के प्रकरण लंबित न रहे यह सुनिश्चित करें। उन्होनें कहा कि जिस प्रकरण में दोनों पक्षों से शिकायत की जाती हैं ऐसे प्रकरण में राजस्व अधिकारी दोनों पक्षों के बीच आपसी समन्वय स्थापित कर प्रकरणों का निराकरण करना सुश्चित करें। बैठक में कलेक्टर ने निमार्ण कार्यों की समीक्षा करते हुए

कलेक्टर ने की समयावधि पत्रों की समीक्षा

कहा कि जिले में जितने भी निर्माण कार्य होने हैं उन निर्माण कार्यों के लिए जमीन आबंटन कराने से पूर्व निर्माण संबंधित संपूर्ण कार्यवाही सम्पन्न कर ले इसके बाद जमीन आबंटन करा कर तत्काल कार्य प्रारम्भ कर दे, ताकि आबंटित जमीन में किसी प्रकार का अतिक्रमण न किया जा सके।बैठक में कलेक्टर डॉ. केदार सिंह ने पीएम जनमन की समीक्षा करते हुए कहा कि पीएम जनमन अंतर्गत किये जा रहे कार्यों को प्राथमिकता के साथ शत-प्रतिशत पूर्ण कराना सुनिश्चित करें, उन्होंनें कहा कि पीएम जनमन के किसी भी कार्य में लापरवाही नहीं बरती जाएगी। उन्होंने पीएम जनमन अंतर्गत आधार, आयुष्मान एवं जाति प्रमाण पत्र के लक्ष्य को पूर्ण करने हेतु संबंधित विभाग के अधिकारियों को निर्देशित करते हुए कहा कि पीएम जनमन के तहत आने वाले हितग्राहियों का आधार, आयुष्मान एवं जाति प्रमाण पत्र बनाना सुनिश्चित करें।

बैठक में कलेक्टर ने शिक्षा विभाग की समीक्षा करते हुए शिक्षा अधिकारी एवं सहायक आयुक्त जनजातीय कार्य विभाग को निर्देश दिए कि जिले के समस्त छात्रावासों का निरीक्षण करें तथा छात्र छात्राओं को छात्रावासों में मिलने वाली सुविधाओं की जांच करें। उन्होनें कहा कि निरीक्षण के दौरान छात्रावासों की साफ-सफाई एवं छात्र-छात्राओं को मिलने वाले भोजन की गुणवत्ता की जांच करें तथा छात्र-छात्राओं को गुणवत्ता युक्त भोजन एवं स्वच्छ पानी मिले यह सुनिश्चि करें।इसी प्रकार कलेक्टर ने, खाद्य विभाग, जनजातीय कार्य विभाग, जल संसाधन विभाग, पंचायत एवं ग्रामीण विकास विभाग, वित्त विभाग, श्रम विभाग, सहकारिता विभाग सहित अन्य विभागों की भी समीक्षा की एवं आवश्यक निर्देश दिए।बैठक में मुख्य कार्यपालन अधिकारी जिला पंचायत राजेश जैन, अनुविभागीय अधिकारी राजस्व सोहागपुर अरविंद शाह, प्रगति वर्मा, ज्योती परस्ते, नरेन्द्र सिंह धुर्वे, डिप्टी कलेक्टर भागीरथी लहरे,एन्टोनियो एक्का सहित अन्य विभागीय अधिकारी उपस्थित रहे।

रामभजन को मिला पक्का आवास, प्रधानमंत्री, मुख्यमंत्री का माना आभार

कटनी। प्रधानमंत्री आवास योजना बेघर और बेसहारा लोगों के लिए एक नई उम्मीद की किरण लेकर आई है। इस योजना से लाभान्वित हितग्राही सरकार के प्रति आभार प्रगट करते नजर आ रहे है। इन्ही में से कटनी जिले के ग्राम भदौरा निवासी एक हितग्राही रामभजन यादव का भी प्रधानमंत्री आवास योजना के तहत पक्का मकान बनकर तैयार हो गया है। रामभजन बताते है की पहले वे परिवार के साथ अपने कच्चे मकान में रहते थे और उन्हें बारिश आदि के समय में जगह जगह से पानी रिसने के कारण परेशानी का सामना करना पड़ता था। सरकार की प्रधानमंत्री आवास योजना की जानकारी मिलने पर उन्होंने अपने दस्तावेज एकत्रित कर अपना फार्म जनपद कार्यालय में जमा किया। योजना के तहत कार्यवाही पूर्ण होने के पश्चात शीघ्र ही उनका पक्का आवास स्वीकृत हुआ और बनकर तैयार भी हो गया। रामभजन का कहना है कि कच्चा मकान अब पक्का हो जाने के कारण अब वे अपने परिवार के साथ बिना किसी डर और चिंता के साथ अपना जीवन यापन कर रहे है।

बुढ़ार क्षेत्र में 4 सपेरे पकड़े गये

दुर्लभ सांप सेंड बोआ की बरामदगी

शहडोल।

शहडोल जिले के बुढ़ार क्षेत्र में जिला अस्पताल के पास चार सपेरे पकड़े गए, जो झांसी के रहने वाले बताए जा रहे हैं। इन सपेरों के पास से 6 सांप, जिनमें 5 कोबरा और एक सेंड बोआ शामिल था, बरामद किए गए। स्थानीय लोगों द्वारा जब उनसे पूछताछ की गई तो पता चला कि ये सपेरे सांपों को दिखाकर लोगों से पैसे मांग रहे थे। इस घटना की जानकारी मिलते ही सर्प विशेषज्ञ सोनू कुमार प्रजापति को फोन किया गया, जिन्होंने अपनी रेस्क्यू टीम के साथ मौके पर

पहुंचकर इन सपेरों को पकड़ा। इसके बाद वन विभाग को तुरंत सूचित किया गया, वन विभाग तत्काल कार्रवाई करते हुए इन सांपों को स्वतंत्र विचरण के लिए जंगल में छोड़ दिया।बरामद सांपों में से एक सेंड बोआ बहुत ही दुर्लभ प्रजाति का था, जिसे बहुत कम देखा जाता है। इस सफल रेस्क्यू ऑपरेशन के बाद, वन विभाग एवं सर्प विशेषज्ञ टीम की स्थानीय लोगों द्वारा सराहना की।

कसौंधन वैश्य समाज ने हर्षोल्लास से मनाई महर्षि कश्यप की जयंती

शहडोल।

श्री कसौंधन वैश्य समाज द्वारा वैश्य समाज के उपाध्येय देव महर्षि कश्यप जी की जयंती के अवसर पर स्थानीय पंचायती मंदिर में कार्यक्रम का आयोजन किया गया कार्यक्रम का शुभारंभ जिला संरक्षक विजय गुप्ता ने महर्षि कश्यप जी के छायाचित्र पर माल्यार्पण एवं पुष्प अर्पित कर पूजा अर्चना कर किया । तत्पश्चात् क्रमशः अध्यक्ष रामचरण गुप्ता, रामजी गुप्ता, पुष्कर महाजन, श्रीकांत गुप्ता, अनिल गुप्ता, संतोष गुप्ता, सीताराम गुप्ता, कमलेश गुप्ता, ओमप्रकाश गुप्ता, प्रकाश गुप्ता एवं उपस्थित सामाजिक बांधो एवं महिलाओं ने पूजा अर्चना किया एवं रामायण पाठ का आयोजन किया । उक्त अवसर पर वरिष्ठों का सम्मान नृत्य प्रतियोगिता रंगोली प्रतियोगिता का कार्यक्रम भी आयोजित किया गया इसके बाद भोजन प्रसाद बंजारे का आयोजन किया।

क्रमशः अध्यक्ष रामचरण गुप्ता, राम गुप्ता, पुष्कर महाजन, श्रीकांत गुप्ता, अनिल गुप्ता, संतोष गुप्ता, सीताराम गुप्ता, कमलेश गुप्ता, ओमप्रकाश गुप्ता, प्रकाश गुप्ता एवं उपस्थित सामाजिक बंधु एवं महिलाओं ने पूजा अर्चनाकी एवं रामायण पाठ का आयोजन किया। उक्त अवसर पर कसौंधन समाज के वरिष्ठों का सम्मान किया गया। इस अवसर पर नृत्य एवं रंगोली प्रतियोगिता का कार्यक्रम भी आयोजित किया गया इसके बाद भण्डारे प्रसाद वितरित किया गया।

चौपाल लगाकर दी संतुलित आहार और कुपोषण की जानकारी

शहडोल।

भारत सरकार के महिला एवं बाल विकास मंत्रालय द्वारा चलाए जा रहे पोषण आहार माह के अंतर्गत पंडित शंभूनाथ शुक्ला विश्वविद्यालय की राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई के स्वयंसेवकों द्वारा आंगनवाड़ी केंद्र क्र.2,3,4 में एक महिला चौपाल का आयोजन किया गया। चौपाल का विषय संतुलित आहार और कुपोषण उन्मूलन रहा। इस कार्यक्रम का उद्देश्य महिलाओं को पोषण के प्रति जागरूक करना और संतुलित आहार के महत्व को रेखांकित करना था। वरिष्ठ दलनायक शैली निगम द्वारा पोषण आहार के विभिन्न पहलुओं पर चर्चा की गई और महिलाओं को बताया गया कि किस प्रकार संतुलित आहार से परिवार की सेहत में सुधार लाया जा सकता है।

वरिष्ठ स्वयंसेवक सुचिता तिवारी ने विभिन्न पोषक तत्वों,

आहार योजनाओं और स्थानीय खाद्य पदार्थों के उपयोग के बारे में जानकारी दी, जिससे हर आयु वर्ग के लिए स्वस्थ आहार को समझना आसान हो सके। इसके साथ ही च्पोषण की थालीज्ज खेल का आयोजन किया गया, जिसमें महिलाओं ने खेल के माध्यम से पोषण से जुड़े विभिन्न पहलुओं को सीखा। इस खेल में प्रतिभागियों को एक संतुलित थाली का निर्माण करने के लिए कहा गया, जिसमें प्रोटीन, विटामिन, खनिज, कार्बोहाइड्रेट, और फाइबर जैसे सभी आवश्यक पोषक तत्वों को शामिल करना था। विभिन्न खाद्य समूहों का उपयोग कर प्रतिभागियों ने अपनी थाली सजाई और सही पोषण की समझ को प्रदर्शित किया। साथ ही दिनांक 07 सितंबर को पंडित शंभूनाथ शुक्ला विश्वविद्यालय एवं शासकीय उत्कृष्ट विद्यालय रघुराज क्रमांक 2 के संयुक्त तत्वाधान में पोस्टर निर्माण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। जिसका विषय कुपोषण एवं संतुलित आहार रहा। इस प्रतियोगिता का उद्देश्य छात्रों और समाज में कुपोषण के प्रति जागरूकता बढ़ाना और पोषण आहार के महत्व को उजागर करना था।

प्रतियोगिता में छात्रों ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया और अपने पोस्टरों के माध्यम से कुपोषण की समस्या और संतुलित आहार के महत्व को रचनात्मक तरीके से प्रस्तुत किया। विभिन्न रंगों और चित्रों के माध्यम से उन्होंने कुपोषण के दुष्प्रभावों और पोषण आहार के फायदों को प्रभावी ढंग से दर्शाया।कार्यक्रम में विश्वविद्यालय महिला इकाई कार्यक्रम अधिकारी डॉ ज्योति सिंह, उत्कृष्ट विद्यालय प्राचार्य पी के मिश्रा, उप प्राचार्य डॉ मनोज श्रीवास्तव एवं कार्यक्रम अधिकारी अख्तर हुसैन व लालजी तिवारी द्वारा महत्वपूर्ण सहयोग एवं भूमिका निभाई गई। साथ ही वरिष्ठ दलनायक अनुराग कुमार मौर्य, दलनायक उत्तरा विश्वकर्मा, हर्ष तिवारी, स्वयंसेवक शाहीन खान,अनामिका सिंह, निलेश प्रजापति आदि ने सहभागिता दी।

दो चोरियों का हुआ खुलासा, दो आरोपी गिरफ्तार

सोने चांदी के जेवर, नगदी एवं दो नग मोटर सायकल सहित कुल 18 लाख से अधिक कीमत का मशरूका जब्त

ब्योहारी।

पुलिस अधीक्षक शहडोल कुमार प्रतीक के निर्देशन मे एवं अति. पुलिस अधीक्षक शहडोल एवं एस.डी.ओ.पी. ब्यौहारी के मार्गदर्शन मे उक्त गंभीर चोरी की दो वारदातों का खुलासा करने एवं चोरी का मशरूका जप्त करने मे ब्योहारी पुलिस को सफ्लता प्राप्त हुई है ।

क्या है मामला

ब्योहारी पुलिस द्वारा दिनांक 13.05.2024 को फरियादी विवेक सोनी पिता शिवनरेश सोनी उम्र 25 वर्ष निवासी वार्ड क्र. 02 सूखा रोड गांधी नगर ब्यौहारी के सूने घर मे दिन मे ताला तोडकर अज्ञात व्यक्ति घुसकर चोरी की एक बडी वारदात को अंजाम देते हुए सोने चांदी के जेवर नगदी सहित चोरी कर लिये थे फरियादी विवेक सोनी की रिपोर्ट पर थाना ब्यौहारी मे अपराध क्र. 289/24 धारा 454,380 भादवि का प्रकरण पंजीबद्ध कर विवेचना मे लिया गया था इसी प्रकार दिनांक 10-11.08.2024 की दरम्यानी रात्रि गोदावल दुर्गा मंदिर के दान पेटी एवं कमरे से अज्ञात व्यक्तियों द्वारा घुस कर ताला तोडकर 8400 रू. नगद चोरी कर लिया गया था । फरियादी खुशीराम की रिपोर्ट पर अप.क्र. 515/24 धारा 331(4),305 बी.एन.एस. का प्रकरण पंजीबद्ध कर विवेचना मे लिया गया था ।

दो आरोपी पकड़ाये

उक्त चोरी की वारदातों को गंभीरता से लेते हुए पुलिस अधीक्षक शहडोल द्वारा

एसडीओपी ब्यौहारी एवं थाना प्रभारी ब्यौहारी को घटनाओं की बारीकी से विवेचना कर पतारसी करने का निर्देश दिया गया था । थाना प्रभारी ब्यौहारी द्वारा पुलिस अधीक्षक महोदय के निर्देशानुसार उक्त घटनाओं की पतारसी हेतु तीन अलग अलग टीमें गठित कर लगातार अज्ञात आरोपियों की पतारसी किया जा रहा था । दौरान पतारसी मुखबिर से सूचना प्राप्त हुई की उक्त चोरी की वारदात को जिला कटनी के सातिर नकबजन एवं थाना माधवनगर जिला कटनी के निगरानी बदमाश राकेश उर्फ खन्ना पिता चमरू सिंह बादी उम्र 42 वर्ष निवासी ग्राम निवार द्वारा अपने साथी अजय सिंह बादी पिता करण सिंह बादी उम्र 20 वर्ष निवासी ग्राम दलको कोठार थाना पपौंध जिला शहडोल के साथ मिलकर अंजाम दिया गया है तथा उक्त आरोपी पुनः किसी गंभीर चोरी की वारदात को अंजाम देने की फिराक मे है । मुखबिर सूचना के आधार पर आरोपी राकेश सिंह उर्फ खन्ना बादी एवं अजय सिंह बादी को दिनांक 08.09.2024 को पुलिस अभिरक्षा मे लिया जाकर आरोपीगण से बारीकी से पूछताछ की गई जिस पर आरोपीगण द्वारा दिनांक 13.05.2024 को विवेक सोनी के मकान मे चोरी की वारदात को अंजाम देना तथा दिनांक 10.08.2024 को गोदावल दुर्गा मंदिर मे चोरी की वारदात को अंजाम देना स्वीकार किया गया है ।

सोने चांदी के आभूषण सहित मोटर सायकल की हुई जप्ती

प्रकरण की विवेचना के दौरान दोनो आरोपीगणों के कब्जे से उनके पेश करने पर क्रमशः निवार कटनी एवं ग्राम दलको कोठार से सोने चांदी के जेवरात बरामद किये गये है जिसमे सोने के बरामद जेवरात मे से - एक नग सोने का हार, एक जोड़ सोने का झुमका, चार नग सोने की कील, दो जोड़ सोने की बाली, एक फीस साइन सोना वट्टी, एक मनचली माला जिसमे चौदह पीस सोने का दाना एवं नौ पीस मनचली है, एक सोने का मंगल सूत्र, चार पीस सोने का दाना, एक मनचली माला सोने की जिसमे आठ पीस मनचली है, एक सेट महाराष्ट्रीयन लाकेट एवं चार गुरिया सोने की, एक सोने का हार, चार पीस सोने की अंगूठीएवं चांदी के बरामद जेवरात मे से - पांच जोड़ फैंसी पायल चांदी की, एक जोड़ बचकानी छड़ा, तीन जोड़ बचकानी चूड़ी, एक जोड़ फैंसी झूलादार पायल, एक जोड़ फैंसी पायल, एक पीस कछुआ अंगूठी, एक जोड़ तीन सेट वाली बिछिया, एक पीस कटोरी एवं चम्मच, एक जोड़ बिछिया रिंग, एक जोड़ फैंसी झूलादार पायल, एक नग चांदी की करधन, दो पीस चांदी की चैन, एक जोड़ फैंसी झूलादार चांदी की पायल, एक जोड़ पायल, एक जोड़ सकरी, एक जोड़ पायजेहर एवं नगदी रकम को बरामद करने मे पुलिस को सफ्लता प्राप्त हुई है साथ ही आरोपी राकेश उर्फ खन्ना द्वारा चोरी के पैसे से खरीदी गई एक पल्सर मोटर सायकल 150 सीसीकी रजिस्ट्रेशन क्रमांक डच्21क् 5935 को बरामद करने मे सफ्लता प्राप्त हुई है । आरोपीगण के कब्जे से घटना मे प्रयुक्त एक अन्य होण्डा साइन मोटर सायकल एमपी 18 एमएस 7844 को भी पुलिस द्वारा जप्त किया गया है ।

आरोपीगण के कब्जे से बरामद सोने चांदी के जेवरात एवं अन्य सामग्री की कुल कीमत 1800000 (अठारह लाख रू.) से अधिक होना पाई गयी है । आरोपीगण के कब्जे से घटना घटित करने मे उपयोग किया गया आलाजरब भी जप्त किया गया है । प्रकरण मे उल्लेखनीय है की गिरफ्तार आरोपी राकेश उर्फ खन्ना सातिर नकबजन है तथा थाना माधवनगर जिला कटनी का निगरानी बदमाश है जिसके विरुध्द करीबन 01 दर्जन से अधिक मामले दर्ज है तथा न्यायालय से दंण्डित हो चुका है ।

इनकी रही अहम भूमिका

उक्त चोरी के मामले का खुलासा करने मे थाना ब्यौहारी के निरी. अरूण पाण्डेय, उनि मोहन पडवार, उनि विजेन्द्र मिश्रा, प्र.आर. नरेन्द्र उपाध्याय, प्र.आर. अजय उपाध्याय, प्र.आर. ललिता पटेल आर. संजय द्विवेदी, आर. अमृत यादव, आर. गंगासागर गुप्ता, आर. त्रिलोक सिंह, आर. सुखदेव सिंह, आर. पुष्पेन्द्र सिंह, आर. सत्रुधन सिंह सेंगर एवं सायबर सेल शहडोल की टीम से आर. सत्यप्रकाश मिश्रा, आर. हिमवंत चन्द्र मिश्रा, आर. प्रकाश द्विवेदी की भी महत्वपूर्ण भूमिका रही है । इस महत्वपूर्ण घटना क्रम के खुलासे हेतु पुलिस अधीक्षक महोदय शहडोल द्वारा सम्पूर्ण टीम को पुरूस्कृत करने की घोषणा की गई है ।

जिले की 193239 लाड़ली बहनों के खाते में 24 करोड़ से अधिक की राशि हस्तांतरित

शहडोल । प्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने सोमवार को कृषि उपज मंडी बीना जिला सागर में आयोजित कार्यक्रम में वर्चुअली रूपये मुख्यमंत्री लाड़ली बहना योजना के तहत लाड़ली बहनों के खाते में 1574 करोड़ रूपये की राशि अंतरित की। उक्त कार्यक्रम का सीधा प्रसारण कलेक्टर कार्यालय के एनआईसी कक्ष में वीडियों कान्फ्रेंसिंग के माध्यम से किया गया, जिसे कलेक्टर डॉ. केदार सिंह, मुख्य कार्यपालन अधिकारी जिला पंचायत राजेश जैन, जिला कार्यक्रम अधिकारी महिला बाल विकास मनोज लारोकर सहित लाडली बहनों ने देखा एवं सुना। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने वर्चुअली रूप से शहडोल जिले के 193239 लाड़ली बहनाओं के खातें में 241548750 रूपये की राशि अंतरित की।

युवाओं ने डीआईजी को भेंट की इकोफ्रेंडली गणेश प्रतिमा

शहडोल । डीआईजी शहडोल जोन सविता सुहाने को ग्रीन गणेश अभियान के अंतर्गत उमरिया जिले के युवाओं द्वारा गोबर व मिट्टी के बने इको फ्रेंडली गणेश प्रतिमा भेंट की। डीआईजी शहडोल जोन सविता सुहाने ने उमरिया जिले के युवाओं की टोली व युवा टीम द्वारा किये जा रहे विभिन्न कार्यों सराहना भी की। इस अवसर पर युवाओं की टोली में श्री हिमांशु तिवारी, खुशी सेन, अंकित गौतम केवट उपस्थित रहे।

जिला योजना समिति के गठन हेतु सम्मिलन एवं निर्वाचन कार्यक्रम स्थगित

शहडोल । कलेक्टर डॉक्टर केदार सिंह ने अध्यक्ष सचिव नगर पलिका एवं नगर परिषद, मुख्य कार्यपालन अधिकारी जिला पंचायत एवं समस्त नगर पालिका परिषद अधिकारी को पत्र जारी किया है कि अपरिहार्य कारणों से 13 सितम्बर 2024 को जिला योजना समिति शहडोल के गठन हेतु होने वाले सम्मिलन एवं निर्वाचन कार्यक्रम को स्थगित किया गया है। आगामी तिथि निर्धारित होन पर पृथक से सूचित किया जावेगा तथा आप अपने क्षेत्र एवं निकाय के अध्यक्षों एवं सदस्यों को स्थगन की सूचना प्रदान करें।

जनपद पंचायत ढीमरखेड़ा के सभाकक्ष में कलेक्टर आज करेंगे जनसुनवाई

कटनी, (स्वतंत्रमत)। कलेक्टर दिलीप कुमार यादव मंगलवार 10 सितंबर को प्रातः 11 बजे आयोजित होने वाली नियमित जनसुनवाई के दौरान विकासखंड ढीमरखेड़ा के जनपद पंचायत सभाकक्ष में स्वयं मौजूद रहकर नागरिकों की समस्याओं और शिकायतों का आवेदन प्राप्त कर सुनवाई करेंगे और अधिकारियों को उनके निराकरण हेतु निर्देश देंगे । कलेक्टर श्री यादव ने ढीमरखेड़ा में मंगलवार को आयोजित होने वाली जनसुनवाई कार्यक्रम में सभी विभागों के जिला अधिकारियों को उपस्थित रहनें हेतु निर्देशित किया है। कलेक्टर श्री यादव ने जिला स्तरीय जनसुनवाई कार्यक्रम को अनुविभाग स्तर पर पहुंच कर समस्याओं और शिकायतों के निराकरण की अभिनव पहल की है। इसके पूर्व कलेक्टर श्री

प्रसाद विगत मंगलवार को विकासखंड बहोरीबंद स्थित जनपद पंचायत कार्यालय के सभाकक्ष में जनसुनवाई आयोजित कर नागरिकों की समस्याओं से रू-ब-रू होकर इनके निराकरण हेतु आवश्यक निर्देश अधिकारियों को दिए थे। शासन द्वारा जब से जनसुनवाई का कार्यक्रम शुरू किया गया है तब से जिले के इतिहास में यह दूसरी बार हो रहा है कि कोई कलेक्टर स्वयं अनुविभाग स्तर के स्थल में पहुंच कर जनसुनवाई कार्यक्रम में जनता की समस्याओं को जानने और सुनने की पहल कर रहे हैं। इसके पहले होता यह था कि ग्रामीण जन की जो समस्याएं अनुविभागए तहसील और विकासखंड स्तर पर निराकृत नहीं हो पाती थीए वे मंगलवार को जनसुनवाई में कलेक्टर श्री यादव को अपनी समस्याएं बताने कटनी कलेक्ट्रेट कार्यालय पहुंचते थे। अब कलेक्टर श्री यादव ने लोगों के पास खुद जाकर उनकी शिकायतों और समस्याओं को जानने. सुनने और निराकरण करने का संवेदनशील प्रयास कर सुशासन के नजरिए से जवाबदेह और जनोन्मुखी प्रशासन की नजीर पेश की है। कलेक्ट्रेट कार्यालय में मंगलवार 10 सितंबर को प्रातः 11 बजे आयोजित होने वाली जनसुनवाई में अपर कलेक्टर श्रीमती साधना परस्ते सहित अन्य अधिकारी उपस्थित रहकर जनसुनवाई करेंगे और लोगों की समस्याओं का निराकरण करेंगे।

केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड ने 1 अक्टूबर तक तय की समय-सीमा

स्कूलों में सिर्फ एनसीईआरटी या एससीईआरटी की पुस्तकें सभी क्लास के लिये अनिवार्य होंगी

जबलपुर (स्वतंत्र मत)। केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड द्वारा निजी विद्यालयों में पाठ्य पुस्तकों का उपयोग किए जाने के संबंध में पूर्व में जारी दिशा-निर्देश में संशोधित कर नवीन दिशा निर्देश जारी किये हैं। जिसमें कहा गया है कि कक्षा 1 से कक्षा 8 तक के लिए सीबीएसई द्वारा स्कूलों को सख्त सलाह दी गई है कि स्कूलों में केवल एनसीईआरटी या एससीईआरटी की पाठ्यपुस्तकों को ही लागू किया जाये।
कलेक्टर दीपक सक्सेना ने कहा कि कक्षा 9वीं से लेकर कक्षा 12वीं के लिए सीबीएसई ने एनसीईआरटी की पुस्तक को पाठ्यक्रम में शामिल करना अनिवार्य कर दिया है। यदि एनसीईआरटी की पुस्तक उपलब्ध नहीं हैं तो उसे वेबसाइट से डाउनलोड किया जा सकता है।

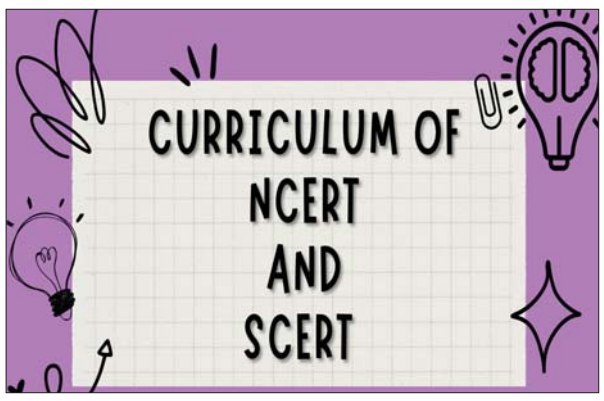

वेबसाइट पर बुक लिस्ट अपलोड अनिवार्य

कलेक्टर श्री सक्सेना ने कहा कि स्कूल को अपनी वेबसाइट पर सभी कक्षाओं के लिए निर्धारित पुस्तकों की एक सूची अपलोड करना अनिवार्य होगा। सूची के साथ प्रबंधक और प्राचार्य द्वारा संयुक्त रूप से विधिवत हस्ताक्षरित लिखित घोषणापत्र भी अपलोड करना होगा कि उन्होंने स्कूल द्वारा निर्धारित पुस्तकों की सामग्री का भलीभाँति परीक्षण कर लिया है और वह इसके लिए जिम्मेदार हैं। यदि किसी स्कूल में आपत्तिजनक सामग्री वाली किताब का उपयोग किया जाना पाया जाएगा तो इसकी पूरी ज़िम्मेदारी स्कूल की होगी और सीबीएसई द्वारा स्कूल के विरुद्ध कार्रवाई की जाएगी। जबलपुर में स्थित समस्त सीबीएसई स्कूलों को आदेशित किया है कि आगामी शिक्षण सत्र 2025.26 से कक्षा 1 से कक्षा 8 तक में यथासंभव एनसीईआरटी की पुस्तकों का ही उपयोग किया जाये। औचित्यपूर्ण कारण होने पर ही निजी प्रकाशकों की पुस्तक का उपयोग किया जाये। सीबीएसई द्वारा एनसीईआरटी की पुस्तक उपलब्ध नहीं होने पर उन्हें वेबसाइट से डाउनलोड किया जाना अनुमत किया गया है। एनसीईआरटी की पुरानी पुस्तक भी आसानी से उपलब्ध हैं अत: कक्षा 1 से कक्षा 8 तक के लिए एनसीईआरटी के स्थान पर किन्ही अन्य पुस्तकों का उपयोग किया जाना केवल इस आधार पर औचित्यपूर्ण नहीं माना जाएगां कि एनसीईआरटी की पुस्तक उपलब्ध नहीं है। वेबसाइट पर सभी कक्षाओं के लिए निर्धारित पुस्तकों की एक सूची 1 अक्टूबर तक अपलोड करना सुनिश्चित करें। ऐसा नहीं करने पर स्कूल प्रबंधन के विरुद्ध मान्यता निरस्त करने के साथ-साथ कठोर कार्यवाही की जाएगी।

डीईओ इस ओर गंभीर रहें

कलेक्टर श्री सक्सेना ने कहा कि ज़िला शिक्षा अधिकारी उक्त आदेश की प्रति समस्त सीबीएसई स्कूल को तामिल करवाकर पावती सुरक्षित रखना सुनिश्चित करें और उक्त स्कूलों द्वारा आगामी शिक्षण सत्र 2025.26 से उपयोग की जाने वाली पुस्तकों की जानकारी जिला समिति के समक्ष 15 अक्टूबर 2024 तक प्रस्तुत करना सुनिश्चित करें।

मप्र में 3 दिनों तक बनी वर्षा की संभावना

जबलपुर समेत 4 संभागों में अलर्ट

जबलपुर (स्वतंत्र मत)। बंगाल की खाड़ी में अवदाब का क्षेत्र बना हुआ है। मौसम विज्ञानियों के मुताबिक अवदाब के क्षेत्र के सोमवार दोपहर तक पुरी और दीघा के मध्य पहुंचकर गहरे अवदाब के क्षेत्र में परिवर्तित होने के आसार हैं। मानसून द्रोणिका भी मध्य प्रदेश से होकर गुजर रही है। इन मौसम प्रणालियों के प्रभाव से सोमवार से प्रदेश में वर्षा का सिलसिला शुरु होने की संभावना है। विशेषकर जबलपुर, शहडोल, सागर एवं रीवा संभाग में कहीं-कहीं भारी वर्षा भी हो सकती है। शेष क्षेत्रों में हल्की से मध्यम वर्षा हो सकती है। रुक-रुककर वर्षा का दौर 13 सितंबर तक चल सकता है।

ऊपर भाग में बना है चक्रवात

मौसम विज्ञान केंद्र से मिली जानकारी के मुताबिक, मानसून ट्रफ बीकानेर, नारनौल, झांसी, दमोह, माना, पुरी से होकर पश्चिम-मध्य और उससे लगे उत्तर-पश्चिम बंगाल की खाड़ी के ऊपर निर्मित अवदाब के क्षेत्र तक बनी हुई है। राजस्थान के मध्य में हवा के ऊपरी भाग में एक चक्रवात बना हुआ है। केरल से लेकर कर्नाटक तक एक अपतटीय द्रोणिका बनी हुई है। पाकिस्तान के आसपास एक पश्चिमी विक्षोभ द्रोणिका के रूप में बना हुआ है।

13 तक बारिश की स्थिति

मौसम विज्ञान केंद्र के वरिष्ठ विज्ञानियों का कहना है कि अवदाब के क्षेत्र के सोमवार दोपहर तक पुरी और दीघा के मध्य पहुंचकर गहरे अवदाब के क्षेत्र में परिवर्तित होने के आसार हैं। इसके असर से सोमवार से प्रदेश में अच्छी वर्षा की शुरुआत हो सकती है। रुक-रुककर वर्षा का सिलसिला 13 सितंबर तक बना रह सकता है।

जबलपुर बनेगा स्वच्छता में नम्बर 1 : निगमायुक्त

टीम को दिये टिप्स, मलीन बस्तियों में लगाये चौपाल

जबलपुर (स्वतंत्र मत)। जबलपुर शहर को स्वच्छता में नम्बर 1 बनाने, सम्मान दिलाने निगमायुक्त प्रीति यादव लगातार दिन रात कड़ी मेहनत कर रहीं हैं। श्रीमती यादव एक ओर जहाँ सफाई व्यवस्था का आकस्मिक निरीक्षण कर रहीं हैं वहीं दूसरी ओर स्वच्छता के संबंध में प्राप्त दिशा निर्देशों के अनुरूप फील्ड में काम करने स्वास्थ्य अमले को प्रशिक्षण देने के साथ-साथ बैठक आयोजित कर स्वास्थ्य अमले को फील्ड में कैसे काम करें के संबंध में टिप्स भी बतलाए जा रहे हैं। इसी कड़ी में उनके द्वारा स्वच्छता की समीक्षा बैठक स्मार्ट सिटी के मिनी हॉल में आयोजित की गई, जहाँ पर उन्होंने स्वास्थ्य अमले को स्वच्छ सर्वेक्षण अभियान 2024 में जबलपुर को पहले पायदान पर पहुँचाने ईमानदारी से मेहनत करने के निर्देश दिये। बैठक में डोर टू डोर कचरा कलेक्शन, त्यौहारों पर चाक चौबंद सफाई व्यवस्था, मच्छर जनित रोगों पर रोक लगाने दवाईयों का छिड़काव, के साथ-साथ शासन द्वारा संचालित स्वच्छता ही सेवा अभियान को सफल बनाने की प्राथमिकता पर निगमायुक्त ने जोर देते हुए स्वास्थ्य अमले को अमल करने के निर्देश प्रदान किये।

स्लम इलाकों में बैठक हुई

बैठक के दौरान श्रीमती यादव ने शहर के नागरिकों से यह आव्हान किया है कि अपने शहर जबलपुर के लिए जागरुकता का परिचय दें और शहर को साफ सुथरा रखने के साथ-साथ गंदगी हटाएँ। सोमवार को शहर की मलीन बस्तियों में स्वच्छता की चौपाल लगाई गई। स्वछता टीम के सदस्यों द्वारा अभियान चलाकर बस्तियों के नागरिकों को स्वच्छता से जुड़ी जानकारियाँ दी गई। स्वच्छता सर्वेक्षण 2024 के अंतर्गत जन-जागरूकता अभियान आज संभाग क्रमांक 15 वार्ड क्रमांक 75 महुआखेड़ा में (स्लम क्षेत्रों में बैठक) गतिविधि कराई गई। सफाई के लिये टोल फ्री नंबर 14420 पर काल कर ही सेप्टिक टेंक की सफाई करवानी चाहिये।

शहर में लगेगा विज्ञान प्रौद्योगिकी, आरोग्य मेला

जबलपुर (स्वतंत्र मत)। महाकौशल विज्ञान परिषद द्वारा मध्यप्रदेश विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी परिषद, ट्रिपल आईटीडीएम एवं जिला प्रशासन के सहयोग से नवम्बर माह में जबलपुर में महाकौशल विज्ञानए प्रौद्योगिकी एवं आरोग्य मेला का आयोजन किया जायेगा। मेले की तैयारियों को लेकर सोमवार को कलेक्टर दीपक सक्सेना की अध्यक्षता में इसकी रूपरेखा पर विस्तार से चर्चा की गई। बैठक में बताया गया कि विज्ञान भारती की प्रांतीय इकाई महाकौशल विज्ञान परिषद द्वारा आयोजित किये जा रहे इस मेले में इसरो, डीआरडीओ, सीएसआईआर, आईसीएमआर जैसे देश के लगभग 40 प्रतिष्ठित एवं ख्योतिलब्ध वैज्ञानिक संस्थानों की सहभागिता होगी। ये संस्थान मेले में आधुनिकतम प्रौद्योगिकी एवं नवीनतम वैज्ञानिक उपलब्धियों का प्रदर्शन करेंगे। मेले के आयोजन से विद्यार्थी, शोधार्थी, शिक्षक, किसान, प्राध्यापक, तकनीकीविद एवं आम नागरिक लाभांवित होंगे। जबलपुर, सागर, शहडोल, रीवा संभाग को मिलाकर पहली बार आयोजित किया जा रहा यह मेला विद्यार्थियों में विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी की अभिरुचि जागृत करने का कार्य करेगा। कलेक्टर ने मेले में आर्टीफिशियल इंटेलिजेंस के स्टॉल लगाये जाने की सलाह भी दी। कहा कि महाकौशल विज्ञान, प्रौद्योगिकी एवं आरोग्य मेला के आयोजन को भव्यता प्रदान करने नगर निगम और स्मार्ट सिटी सहित सभी शासकीय विभागों को इससे जोड़ा जायेगा। विद्यार्थी इस मेले का लाभ उठा सके इसके लिए जिला शिक्षा अधिकारी एवं अतिरिक्त संचालक उच्चय शिक्षा के माध्यम से स्कूल एवं कॉलेज के छात्र-छात्राओं की सहभागिता सुनिश्चित करने के निर्देश दिये।

कुल्हाड़ी मारकर युवक की हत्या

जबलपुर (स्वतंत्र मत)। खमरिया थाना क्षेत्र अंतर्गत गधेरी के मुड़िया टेला पास जमीनी विवाद के चलते 40 वर्षीय अखिलेश यादव की कुल्हाड़ी मार कर हत्या कर दी। घटना को अंजाम देने के बाद आरोपी मौके से फरार हो गया। वहीं घटना की सूचना मिलने के बाद मौके पर पहुंची पुलिस ने पंचनामा कार्यवाही का शव को पोस्टमार्टम के लिए मेडिकल अस्पताल भिजवाते हुए मामले की जांच शुरू कर दी है। जानकारी के मुताबिक चचेरे भाई ने जमीनी विवाद के चलते इस घटना को अंजाम दिया है। मामले की जानकारी लगते ही मौके पर पहुंची पुलिस ने हत्या का मामला दर्ज करते हुए फरार आरोपी की तलाश शुरू कर दी।

रेलवे स्टेशनों पर पकड़े गए 56 अवैध वेंडर

जबलपुर (स्वतंत्र मत)। मंडल के वाणिज्य विभाग ने जबलपुर के स्टेशन पर बिकने वाली खाद्य समाग्री एवं वेंडरों की जांच का अभियांन चला कर अनेक अवैध वेंडरों को पकड़कर जुमार्ना वसूलने के साथ ही अमानक समाग्री नष्ट करने का अभियान चलाया गया । मंडल रेल प्रबंधक विवेक शील के निर्देश पर वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक डॉ मधुर वर्मा के नेतृत्व एवं मंडल वाणिज्य प्रबंधक श्री शशांक गुप्ता के मार्गदर्शन में चलाये गए इस अभियान मे प्लेटफार्म एक से प्लेटफार्म 6 तक कार्यवाही की जा रही हैं जिसमे प्लेटफार्म पर अनाधिकृत रूप से अन्दर आने वाले बेंडरों कि जांच की जा रही हैं। रेलवे अधिनियम की धारा 144 के तहत अगस्त माह में जबलपुर स्टेशन सहित मंडल पर 56 अवैध वेंडरों को पकड़कर आरपीएफ के सुपुर्द किया गया एवं 39 वेंडरो को मानक नियमों का उलंघन करने पर 21590 रूपये का जुमार्ना वसूलने के साथ ही अमानक खाद्य सामाग्री को नष्ट कर उन पर अर्थ दंड लगाया गया। इसी क्रम में वाणिज्य विभाग एवं आरपीएफ की संयुक्त टीम के विशेष ड्राइव चलने के कारण पिछले माह की तुलना में अवैध वेंडरों में कमी आई हैं जिससे अवैध वेंडरों में भय का माहौल पैदा हुआ है। यह कार्यवाही जबलपुर के साथ ही कटनी, मैहर, सतना, दमोह, सागर, करेली, नरसिंहपुर, पिपारिया आदि स्टेशनो पर भी की जा रही है।

पीडब्लूडी मंत्री ने विजन डॉक्यूमेंटस पर की बैठक

जबलपुर (स्वतंत्र मत)। लोक निर्माण मंत्री राकेश सिंह के आवास कार्यालय में आज पश्चिम विधानसभा क्षेत्र के विजन डक्यूमेंट पर बैठक आयोजित की गई है। बैठक में कलेक्टर दीपक सक्सेना, ननि आयुक्त प्रीती यादव के साथ अन्य अधिकारीगण उपस्थित रहें। उन्होंने पश्चिम विस क्षेत्र की मुख्य समस्याओं, आवश्यकताओं एवं प्राथमिकताओं पर विस्तार से चर्चा की गई। जिसमें बीएसएनएल की रानीताल स्थित जमीन के बारे में कहा कि यदि इस भूमि आवंटन का उद्देश्य पूरा हो गया है तो नियमानुसार इस भूमि का उपयोग जनहित में जबलपुर शहर की प्राथमिकताओं एवं स्थानीय आवश्यकताओं को ध्यान में रख कर किया जाना चाहिये। ग्वारीघाट मुक्तिधाम का जनसहयोग से निर्माण होना चाहिए, संग्राम सागर तालाब का पर्यटन की दृष्टि से विकास की अनेक संभवनाएं मौजूद हैं।

अचानक रोकी ट्रेन, दूसरी ओर से आ रही थी दानापुर एक्सप्रेस

जबलपुर-इटारसी रेल ट्रेक पर हादसा टला पटरी पर फंसा ट्रैक्टर, इमरजेंसी ब्रेक से काबू

जबलपुर (स्वतंत्र मत)। पश्चिम मध्य रेलवे के जबलपुर रेल मंडल के इटारसी रेलखंड पर सोमवार सुबह एक बड़ा रेल हादसा बाल-बाल बच गया। दरअसल बागरातवा और गुर्रमखेड़ी के बीच अचानक एक ट्रैक्टर बीच ट्रैक पर पहुंच गया और सामने से दानापुर-उधना ट्रेन आ रही थी, वहीं जिस ट्रेक पर ट्रैक्टर फंसा था। उस पर दानापुर-उधना एक्सप्रेस के आने का सिग्नल था। सोमनाथ एक्सप्रेस के लोको पायलट की सतर्कता से दूसरी ट्रेन के चालक दल को सतर्क किया गया, जिससे हादसा टल गया। रोकनी पड़ी सोमनाथ-दानापुर एक्सप्रेसबताया जाता है कि नर्मदापुरम जिले के अंतर्गत बागरातवा और गुरमखेड़ी के बीच में एक ट्रैक्टर सुबह 10 बजे के लगभग रेलवे ट्रैक क्रॉस करते समय पटरी पर फंस गया। इससे सोमनाथ एक्सप्रेस और दानापुर एक्सप्रेस ट्रेन रोकनी पड़ गईं। एक ट्रेन के लोको पायलट ने कंट्रोल रूम को सूचना दी। इसके बाद दूसरी ट्रेन के लोको पायलट को अलर्ट करने के लिए ट्रैक पर एक किलोमीटर पहले पटाखे चलाए। इससे दूसरी ट्रेन का लोको पायलट अलर्ट हो गया और उसने इमरजेंसी ब्रेक लगाकर ट्रेन रोक दी।

ट्रेन रुकवाने फोड़े पटाखे

सोमनाथ एक्सप्रेस अप ट्रैक पर इटारसी से जबलपुर जा रही थी। बागरातवा और गुरमखेड़ी के बीच लोको पायलट को बीच में डाउन ट्रैक पर ट्रैक्टर पटरी क्रॉस करते दिखा। यह देखकर उसने स्पीड कम करते हुए ट्रेन रोक दी। गार्ड ने गुरमखेड़ी रेलवे स्टेशन को सूचना दी, स्टाफ ने उतर कर देखा, तो ड्राइवर ट्रैक्टर छोड़कर भाग गया। इस घटना की जानकारी लोको पायलट ने कंट्रोल रूम को सूचना दी, दूसरे ट्रैक पर आने वाली ट्रेन के पायलट को अलर्ट करने 1 किमी आगे जाकर पटाखे फोड़े। इससे दूसरी ट्रेन के पायलट ने इमरजेंसी ब्रेक लगाए। जिसके बाद दूसरी ट्रेन को इमरजेंसी ब्रेक लगाकर रोक दिया गया/ इस बीच ट्रैक्टर ड्राइवर अपने साथियों के साथ आया और लकड़ियों के सहारे ट्रैक्टर निकालकर भाग गया। उसकी तलाश की जा रही है। बताया जा रहा है कि जिस जगह ट्रैक्टर क्रॉस किया जा रहा था, वहां से दो किमी दूर रेलवे फाटक है। डीजल और समय बचाने के लिए कई बार ट्रैक्टर चालक जान जोखिम में डालकर पटरी पार कर रहा था।

धान उपार्जन के लिये ट्रेनिंग प्लान करें : कलेक्टर

जबलपुर (स्वतंत्र मत)। खरीफ 2024.25 के धान उपार्जन के संबंध में संबंधित अधिकारियों की कलेक्टर दीपक सक्सेना की अध्यक्षता में बैठक आयोजित की गई। जिसमें तहसीलवार धान उपार्जन की जानकारी ली गई। उन्होंने कहा कि धान उपार्जन में पूरी पारदर्शिता हो, जहां कहीं भी गड़बड़ी समझ में आता है तो तुरंत एफआईआर दर्ज करायें। उन्होंपने सभी ब्लॉरकों में धान उपार्जन केन्द्रग व खाली वेयर हाउस की जानकारी लेकर कहा कि धान उपार्जन में कहीं भी गड़बड़ी न हो। इस दौरान उन्होंने धान उपार्जन पंजीयन, सिकमी पंजीयन, खाली व विवादरहित वेयर हाउस, ब्लैकलिस्टिड वेयर हाउस आदि की जानकारी लेकर कहा कि इस बार खरीदी सोसायटी ही करेगी। इसके साथ ही उन्हों ने उपार्जन संबंधी अन्य महत्वरपूर्ण विषयों पर चर्चा करते हुए कहा कि 19 सितम्बकर से धान पंजीयन शुरू होने जा रहा है। अत: उपार्जन को व्य वस्थित रूप से संपादित करने के लिए सभी संबंधित अधिकारियों.कर्मचारियों की ट्रेनिंग समय पूर्व सुनिश्चित कर ली जाये।

कार्यालय मध्य वनवृत्त स्टेशन रोड जबलपुर-482001
दूरभाष क्र. 0761-2624341 ई-मेल ccf.jbp@mp.gov.in

ईमारती काष्ठ, जलाऊ काष्ठ एवं बांस के परिवहन हेतु संक्षिप्त निविदा/नीलाम सूचना की विज्ञप्ति, वर्ष 2024-2025

मध्यवृत्त जबलपुर के अर्न्तगत वर्ष 2024-2025 में उत्पादन वनमण्डल डिण्डोरी/उत्पादन वनमण्डल मण्डला/सामान्य वनमण्डल जबलपुर /सामान्य वनमण्डल कटनी में उत्पादित ईमारती काष्ठ/जलाऊ काष्ठ/ बांस तथा कालपी डिपो से दिल्ली डिपो काष्ठ के परिवहन हेतु परिवहन समूहों की निविदायें कार्यालय मध्य वन वृत्त जबलपुर / संबंधित वनमंडल कार्यालय में निम्न तिथियों में मुहरबंद निविदाएँ निम्न चको की आर्मत्रित की जानी है, प्राप्त निविदाएँ उक्त दर्शित तिथियों में मध्यवृत्त कार्यालय जबलपुर में ही निविदाकारों के समक्ष खोली जावेंगी।

परिवहन समूहों का निविदा कार्यक्रम मध्य वन वृत्त कार्यालय जबलपुर

क्र.	निविदा क्रम	मध्य वन वृत्त कार्यालय जबलपुर में निविदा जमा करने की अंतिम तिथि व समय	संबंधित वनमंडल कार्यालय में निविदा जमा करने की अंतिम तिथि व समय	निविदा खुलने की तिथि व समय
1	प्रथम निविदा	27-09-2024 (14.00 बजे तक)	26-09-2024 (17.00 बजे तक)	27-09-2024 (15.00 बजे से)
2	द्वितीय निविदा	10-10-2024 (14.00 बजे तक)	09-10-224 (17.00 बजे तक)	10-10-2024 (15.00 बजे से)
3	तृत्तीय निविदा	21-10-2024 (14.00 बजे तक)	20-10-2024 (17.00 बजे तक)	21-10-2024 (15.00 बजे से)
4	नीलाम परिवहन समूह अवशेष रहने की स्थिति में	24-10-2024 को साय 14.00 बजे से वृत्त कार्यालय मध्य वन वृत्त जबलपुर में		

1. प्रत्येक परिवहन समूह के लिये निविदा अलग-अलग निविदा फार्म में दी जावेगी। निविदा हेतु निविदा फार्म एवं/ विस्तृत शर्तें, परिवहन समूहों की सूची एवं अन्य जानकारियों वृत्त कार्यालय एवं संबंधित वनमण्डल कार्यालय में कार्यालयीन दिवस व समय में प्राप्त की जा सकती है साथ ही निविदा फार्म 100 रुपये अदायगी कर प्राप्त किए जा सकते है।
निविदाकार के द्वारा दी गई निविदा के संबंध में यह माना जावेगा कि निविदाकार को निविदा की सभी शर्तें मान्य है। परिवहन समूहो के लिये प्रत्येक निविदा के साथ सत्यकार की राशि के रूप में रूपये 3000/- (तीन हजार) मात्र एवं दिल्ली डिपो मे परिवहन होने वाली काष्ठ के लिये सत्यकार की राशि रूप्ये 5000/- (पांच हजार) मात्र बैंक डिपाजिट/काल डिपाजिट जो स्टेट बैंक आफ इंडिया अथवा किसी अधिकृत बैंक का संलग्न करना अनिवार्य होगा किसी भी प्रकार के वाद विवाद होने की स्थिति में संबंधित वनसंरक्षक का निर्णय अंतिम होगा।
निविदा/नीलाम के संबंध में अन्य जानकारी उत्पादन वनमण्डल मण्डला कार्यालय के दूरभाष क्रमांक 07642-252449 उत्पादन वनमण्डल डिण्डोरी कार्यालय के दूरभाष क्रमांक 07644-234312, सामान्य वनमण्डल कटनी के दूरभाष क्रमांक 07622-227417 एवं सामान्य वनमण्डल जबलपुर के दूरभाष क्रमांक 0761-2624195 से प्राप्त की जा सकती है, एवं विभागीय बेवसाईट www.mpforest.gov.in पर भी देखी जा सकती है।

वनसंरक्षक
मध्यवृत्त जबलपुर

जी-15957/24

जबलपुर से होकर गुजरेंगी कई स्पेशल ट्रेनें

त्यौहारों को देखते हुए पमरे का फैसला

जबलपुर (स्वतंत्र मत)। आगामी त्यौहारी सीजन के लिए भारत के उत्तरी भागों की यात्रा करने वाले यात्रियों की भारी मांग को देखते हुए, रेलवे ने दिवाली और छठ त्योहारों के दौरान यात्रियों की अतिरिक्त भीड़ को कम करने के लिए स्पेशल ट्रेन सेवा चलाने का निर्णय लिया है। यह स्पेशल ट्रेन पश्चिम मध्य रेलवे के स्टेशनों से भी गुजरेगी। इसी क्रम में 01053 साप्ताहिक विशेष बुधवार 30 अक्टूबर और 06 नवम्बर को एलटीटी मुंबई से 12.15 बजे प्रस्थान करेगी और अगले दिन 04.05 बजे बनारस पहुंचेगी। गाड़ी संख्या 01054 साप्ताहिक विशेष गुरुवार दिनांक 31 अक्टूबर और 07 नवंबर को रात 08.30 बजे बनारस से प्रस्थान करेगी और अगले दिन रात 11.55 बजे एलटीटी मुंबई पहुंचेगी। यह गाड़ी कल्याण, इगतपुरी, नासिक रोड, भुसावल, खंडवा, इटारसी, पिपरिया, जबलपुर, कटनी, मैहर, सतना, मानिकपुर, प्रयागराज छिवकी और वाराणसी से गुजरेगी ।

एलटीटी-दानापुर का भी रहेगा ठहराव

0इसी प्रकार 1009 द्वि-साप्ताहिक विशेष दिनांक 26 अक्टूबर, 28 अक्टूबर , 02 नवंबर और 04 नवंबर को सोमवार और शनिवार को 12.15 बजे एलटीटी मुंबई से प्रस्थान करेगी और अगले दिन 05 बजे दानापुर पहुंचेगी। इसी प्रकार 01010 द्वि-साप्ताहिक विशेष दिनांक 27, 29 अक्टूबर, 03 और 05 नवंबर को प्रत्येक मंगलवार और रविवार को 06.15 बजे दानापुर से प्रस्थान करेगी और अगले रात 11.55 बजे एलटीटी मुंबई पहुंचेगी। यह गाड़ी कल्याण, इगतपुरी, नासिक रोड, भुसावल, खंडवा, इटारसी, पिपरिया, जबलपुर, कटनी, मैहर, सतना, मानिकपुर, प्रयागराज छेवकी, पं. दीन दयाल उपाध्याय जं.,बक्सर एवं आरा. से गुजरेगी।

एलटीटी-समस्तीपुर के बीच भी संचालन

गाड़ी संख्या 01043 साप्ताहिक विशेष गुरुवार दिनांक 31 अक्टूबर और 07 नवंबर को एलटीटी मुंबई से 12.15 बजे प्रस्थान करेगी और अगले दिन रात 09.15 बजे समस्तीपुर पहुंचेगी। 01044 साप्ताहिक विशेष दिनांक 01 नवंबर और 08 नवंबर तक शुक्रवार को रात 11.20 बजे समस्तीपुर से प्रस्थान करेगी और तीसरे दिन 07.40 बजे एलटीटी मुंबई पहुंचेगी। यह गाड़ी कल्याण, इगतपुरी, नासिक रोड, भुसावल, खंडवा, इटारसी, पिपरिया, जबलपुर, कटनी, मैहर, सतना, मानिकपुर, प्रयागराज छेवकी, पं. दीन दयाल उपाध्याय जंक्शन, बक्सर, आरा, दानापुर, पाटलिपुत्र, हाजीपुर और मुजफ्फरपुर से गुजरेगी ।

एलटीटी-प्रयागराज साप्ताहिक विशेष

इसी प्रकार 1045 साप्ताहिक विशेष मंगलवार दिनांक 29 अक्टूबर और 05 नवंबर को 12.15 बजे एलटीटी मुंबई से प्रस्थान करेगी और अगले दिन 11.20 बजे प्रयागराज पहुंचेगी। गाड़ी संख्या 01046 वातानुकूलित साप्ताहिक विशेष बुधवार दिनांक 30 अक्टूबर और 06 नवंबर को शाम 06.50 बजे प्रयागराज से प्रस्थान करेगी और अगले दिन दोपहर 04.05 बजे एलटीटी मुंबई पहुंचेगी। यह गाड़ी कल्याण, नासिक रोड, भुसावल, खंडवा, इटारसी, पिपरिया, जबलपुर, कटनी, सतना, मानिकपुर और शंकरगढ़ से होकर गुजरेगी।

मढ़ीबाग से सटे जंगल में मिला शव, मौत का कारण अज्ञात

उमरिया

शव के पास मिला हाथ से लिखा नोट

सोमवार 9 सितंबर को नगर के कोतवाली थाना अंतर्गत जिला मुख्यालय के नजदीक स्थित प्रसिद्ध मंदिर मढ़ीबाह के नजदीक कपिलधारा के पास संदिग्ध परिस्थितियों में एक शव बरामद किया गया। शव की हालत देख यह अनुमान लगाया जा सकता है कि उसकी मौत 4 से 5 दिन पहले हुई होगी। जानकारी के बाद मौके पर पहुंचे पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए अस्पताल भेजा है और आगे की जांच में जुटी है।

घटनास्थल मे शव के पास से आधार कार्ड और अन्य कागज से मृतक की पहचान प्रवीण शुक्ला पिता सूर्य प्रकाश शुक्ला उम्र 38 वर्ष निवासी रामपुर बिरसिंहपुर पाली के रूप में हुई है। इसके अलावा एक और अन्य नोट बरामद किया गया है, जिसमें हाथ से लिखा गया है कि उसकी डेड बॉडी मेडिकल कॉलेज को दे दी जाए उसके शरीर के जो भी अंग उपयोग के लायक है वह सभी मेडिकल कॉलेज को दिए जाएं।

लेकिन बड़ा सवाल यह कि बिरसिंहपुर पाली के पास रामपुर का रहने वाला यह प्रवीण शुक्ला नामक युवक आखिर उमरिया के मढ़ीबाह कैसे पहुंचा और युवक की मौत की क्या वजह रही होगी.? उसने आत्महत्या की है या उसकी हत्या की गई है यह तो पुलिस के जांच का विषय है। लेकिन उसके शव के पास से मिले आधार कार्ड के साथ हाथ से लिखा नोट को सच मान लिया जाए तो यह प्रथम दृष्टया आत्महत्या प्रतीत होती है।

बताया गया कि मृत युवक का संपर्क उसके बिरसिंहपुर पाली स्थित परिवार से एक हफ्ते से नहीं हुआ था संभवत इसी के बाद युवक ने उमरिया के मढ़ीबाह पहुंच गया होगा, जहां से उसका संदिग्ध परिस्थितियों में पुलिस ने शव बरामद किया है। फिलहाल पुलिस मामले की जांच में जुटी है। पुलिस जांच के बाद ही मामले की असली तस्वीर स्पष्ट हो सकेगी।

डायल 100 ने बचाई वृद्ध की जान

इलाज हेतु जिला अस्पताल में कराया भर्ती

उमरिया

सूचनाकर्ता इरफान खान ने डायल 100 पर सूचना दी कि खलेसर मोहल्ले में एक बुजुर्ग व्यक्ति अपने घर में फांसी लगाकार आत्महत्या करने की कोशिश कर रहा है। सूचना थाना कोतवाली से संबंधित होने पर थाना कोतवाली की डायल 100 को सूचना प्राप्त हुई जिस पर तत्समय डायल 100 डियूटी पर मौजूद प्र.आर. प्रकाश पटेल तत्काल मौके पर रवाना हुये एवं सूचना की तस्दीक किये जिस पर पता चला कि उधई साहू उम्र 73 साल निवासी खलेसर मोहल्ला अपने परिवारवालो से नाराज होकर अपने घर में फांसी लगाकर आत्महत्या करने की मंशा से अपने आप को कमरे के अंदर बंद कर लिया है। जिस पर प्र.आर. प्रकाश पटेल द्वारा अपनी व्यवसायिक दक्षता का शतप्रतिशत उपयोग करते हुये आस-पास के लोगो की मदद से दरवाजे को कटर के माध्यम से कटवाया गया एवं बुजुर्ग को गलत कदम उठाने से रोका गया बाद डायल 100 वाहन से तुरंत जिला अस्पताल ले जाकर भर्ती कराया गया जहां पर उधई साहू उम्र 73 साल इलाजरत है। संपूर्ण कार्यवाही के पश्चात उनके परिवारवालो को आवश्यक समझाइष दी गई कि उनका संपूर्ण ध्यान रखा जावे। किसी प्रकार का विवाद नही किया जाये। प्रकरण में विधिसंगत कार्यवाही की जा रही है। शासन की मंशानुरूप उमरिया पुलिस डायल 100 के माध्यम से सदैव आमजन की मदद हेतु तत्पर है उक्त कार्यवाही जिसका प्रत्यक्ष उदाहरण है। कार्यवाही में प्र.आर. प्रकाश पटेल थाना कोतवाली एवं मनोज डायल 100 ड्रायवर की सराहनीय भूमिका रही है।

स्वच्छता ही सेवा पखवाडा का आयोजन

14 सितंबर से 2 अक्टूबर तक

उमरिया

देश के प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के आव्हान पर पूरे प्रदेश में स्वच्छता ही सेवा पखवाडा का आयोजन 14 सितंबर से 2 अक्टूबर तक आयोजित किया जाएगा। कलेक्टर धरणेन्द्र कुमार जैन ने बताया कि पखवाडे के दौरान जन सहभागिता से अपने गांव, अपने घर, अपने शहर, अपने जलाशय, अपने कार्यालयों, अपनी गलियों, सडक मार्गो को स्वच्छ, एवं सुंदर बनानें के लिए सामूहिक रूप से जन सहभागिता के कार्यक्रम आयोजित किए जाऐगे। मुख्य कार्यक्रम 17 सितंबर को आयोजित किया जाएगा। यह जानकारी कलेक्टर सभागार में आयोजित कार्यशाला के दौरान दी गई। सीईओ जिला पंचायत अभय सिंह ने बताया कि जिला स्तर पर कलेक्टर की अध्यक्षता में तथा खण्ड स्तर पर संबंधित एसडीएम की अध्यक्षता में समितियों का गठन किया जाएगा। ग्रामीण क्षेत्रों में स्वच्छता के लिए सीईओ जिला पंचायत नोडल अधिकारी होंगे तथा शहरी क्षेत्रों के लिए संबंधित मुख्य नगर पालिका अधिकारी नोडल अधिकारी होगे। आपने बताया कि इन कार्यो में जन अभियान परिषद, एनआरएल एम, स्वयं सेवी संस्थाओं, सामाजिक एवं धार्मिक संगठनों, व्यापारी, ट्रांसपोर्ट एसोसिएशन, एनएसएफ स्काउट के छात्रों का भी सहयोग लिया जाएगा। वातावरण निर्माण हेतु स्कूलों एवं महाविद्यालयों में निबंध प्रतियोगिता, वाद विवाद, चित्रकला, रंगोली जैसी प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाएगा। स्वच्छता ही सेवा पखवाडा का उददेश्य प्लास्टिक अपशिष्ट प्रबंधन, स्वच्छता तथा कचरा मुक्त भारत है। यह तीन चरणों में आयोजित किया जाएगा। जिसमें भागीदारी लक्षित ईकाईयों के माध्यम से कार्य तथा सफाई मित्रों की सुरक्षा के लिए स्वा. शिविर का आयोजन आदि शामिल होगा। इस अभियान में उत्कृष्ट सहभागिता निभाने वाले व्यक्ति या संस्थाओं को सम्मानित भी किया जाएगा।

छात्रावास के 24 छात्र हुए बीमार

जिला अस्पताल में उपचार जारी

उमरिया । नगर के लालपुर स्थित नेताजी सुभाषचंद्र बोस छात्रावास के दो दर्जन छात्र अचानक हुए बीमार होने का समाचार प्रकाष में आया है। जिन्हे ,गंभीर हालत में जिला अस्पताल में भर्ती कराया गया । बताया गया है की छात्रों ने सुबह के भोजन के साथ गांव से लाया हुआ मक्का खाया था जिसके बाद छात्रों की तबीयत बिगड़ी है। फूड प्वाइजिंग की आशंका के तहत छात्रों का इलाज जारी है। कलेक्टर धरणेन्द्र कुमार जैन ने स्कूल शिक्षा विभाग और जिला अस्पताल प्रबंधन को आवश्यक उपचार के निर्देश दिए। जिला परियोजना समन्वयक राज्य शिक्षा केंद्र संजय सिंह ने बताया है की सभी छात्र चिकित्सकों की निगरानी में हैं स्वास्थ्य पर नियंत्रण है शीघ्र ही सभी को डिस्चार्ज कर दिया गया।

भोजन में गिरी छिपकली, स्थिति अभी स्पष्ट नहीं

अज्ञात कारणों से मासूमो की तबियत बिगड़ने के बाद विद्यालय से जिला अस्पताल पहुंचे छात्रों की हालत फिलहाल स्थिर है,हालांकि अभी भी छात्रों को जिला अस्पताल में भर्ती कर ऑब्सर्वेशन में रखा गया है।छात्रों की अचानक तबियत बिगड़ने की खबर से जिला प्रशासन अलर्ट हो गया था,कलेक्टर के निर्देश पर सभी जिम्मेदार अधिकारी जिला अस्पताल भी पहुंचे थे।जिला अस्पताल में पदस्त शिशु रोग चिकित्सक डॉ निपाने ने सभी बच्चों की हालत स्थिर और सामान्य बताया है। 'मुख्यालय स्थित लालपुर के करीब नेता जी सुभाष चन्द्र बोस छात्रावास में जिन छात्रों की हालत अचानक बिगड़ी थी,उनमें मुख्य रूप से हरेंद्र सिंह उम्र 13 वर्ष ,सोनू सिंह उम्र 13 वर्ष ,सचिन सिंह उम्र 14 वर्ष,ज्ञान सिंह उम्र 14 वर्ष ,वीर शाह उम्र 12 वर्ष,चन्द्र शेख सिंह उम्र 12 वर्ष,बसन्त लाल प्रजापति उम्र 12 वर्ष ,विपिन सिंह उम्र 11 वर्ष,आदर्श सिंह उम्र 12वर्ष ,प्रदीप सिंह उम्र 13 वर्ष,ओम प्रकाश सिंह उम्र 11 वर्ष,कृष्ण कुमार प्रजापति उम्र 13 वर्ष,कृष्णा काछी उम्र 11 वर्ष,जिंगर बसोर उम्र 14 वर्ष,जितेंद्र सिंह उम्र 12 वर्ष,नीलेश बैगा उम्र 15 वर्ष,आशीष सिंह उम्र14 वर्ष ,दिवाकर सिंह उम्र 13 वर्ष ,सुनील सिंह उम्र12 वर्ष ,गौर सिंह उम्र 12 वर्ष ,लाल सिंह उम्र 13 वर्ष,सन्नी सिंह उम्र 11 वर्ष,शिव कुमार सिंह उम्र 13 वर्ष ,योगेंद्र सिंह उम्र 14 वर्ष है।' दरअसल इस अतिसंवेदनशील मामले में भोजन में छिपकली गिरने की वजह से बच्चों की तबियत बिगड़ने का मामला प्राथमिक रूप से आया था, इसमे छात्रों को घबराहट,सांस लेने में दिक्कत और पेट दर्द जैसी समस्या हो रही थी। सिविल सर्जन ने भी मीडिया से बातचीत में ये बात स्वीकारते हुए कहा है कि उपचार से पूर्व जिम्मेदार वार्डन ने भोजन में छिपकली के गिरने की बात बताई थी, जिसके बाद इलाज शुरू हुआ। छात्रावास में भोजन करने के बाद दो दर्जन से अधिक छात्रों की हालत कैसे बिगड़ी,यह तो जांच का विषय है,हालांकि सूत्रों की माने तो छात्रावास पहुंचकर जिम्मेदार फूड अधिकारी ने भी भोजन की सैंपलिंग कराई है..!

अवारा पशुओं के लिए नगरीय क्षेत्रों तथा बड़े कस्बों में बाड़े बनाने के कलेक्टर ने दिए निर्देश

उमरिया । कलेक्टर धरणेन्द्र कुमार जैन ने समय सीमा की साप्ताहिक बैठक में आवारा पशुओ के कारण यातायात में होने वाली असुविधा तथा दुर्घटनाओं को रोकने हेतु नगरीय क्षेत्रों तथा जिले के बडे कस्बों में बाडा बनाने के निर्देश दिए। आवारा पशुओ को पकडने एवं उन्हें गौशालाओं में भेजने की समीक्षा करते हुए आपने कहा कि गौशालाओं में क्षमता से अधिक आवारा पशु भेजे जा चुके है, इसलिए आवश्यक है कि आवारा पशुओ को बाडे में भेजा जाए तथा उनकी सुरक्षा, भोजन आदि की व्यवस्था संबंधित निकायों व्दारा की जाए। इस अवसर पर सीईओ जिला पंचायत अभय सिंह, अपर कलेक्टर शिव गोविंद सिंह मरकाम, एसडीएम बांधवगढ रीता डेहरिया, एसडीएम पाली टीआर नाग, एसडीएम मानपुर कमलेश नीरज, डिप्टी कलेक्टर मीनाक्षी इंगले सहित जिला प्रमुख अधिकारी उपस्थित रहे।

अंतर्राष्ट्रीय साक्षरता दिवस का जिला स्तरीय कार्यक्रम संपन्न

उमरिया

राज्य शिक्षा केन्द्र के निर्देशानुसार जिले की शासकीय एवं अशासकीय संस्थाओं द्वारा साक्षरता सप्ताह विविध गतिविधियों के आयोजन उपरान्त भारत सरकार के निर्देशानुसार वर्तमान में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के प्रावधानों के अनुसार प्रदेश को शत, प्रतिशत साक्षर करने हेतु उल्लास नव भारत साक्षरता कार्यक्रम अंतर्गत सभी के लिए शिक्षा जन-जन साक्षर की भावना से कलेक्टर धरणेन्द्र कुमार जैन के निर्देशन, सीईओ जिला पंचायत अभय सिंह के मार्गदर्शन एवं जिला परियोजना समन्वयक, जिला प्रौढ़ शिक्षा अधिकारी के नेतृत्व में अंतर्राष्ट्रीय साक्षरता दिवस का जिला स्तरीय कार्यक्रम शा. उच्च.मा.वि. कालरी उमरिया के सभागार में आयोजित किया गया। कार्यक्रम के दौरान जन जागरूकता हेतु अक्षर साक्षी, संकुल सहसमन्वयकों, एवं शिक्षकों द्वारा सरस्वती वंदना, अतिथि स्वागत, प्रेरणादाई साक्षरता गीत, अक्षर साथियों के अनुभव, नव साक्षरों द्वारा उनके जीवन में हुए। आए परिवर्तनों की बात मंच से उपस्थित जनो को सांझा की गई। कार्यक्रम में प्राचार्य डाईट, डॉ0 वृजेश शर्मा व्याख्याता डाईड, विनोद मिश्रा सहायक संचालक जिला शिक्षा अधिकारी कार्यालय, डीपीसी, एपीसी, समस्त जिला प्रोग्रामर, लेखापाल बीईओ, संकुल प्राचार्य, व्याख्याता, शिक्षक, अक्षर साक्षी, नव साक्षर बीएसी, सीएसी, संकुल, ब्लाक सह समन्वयक साक्षरता (समस्त) एवं अन्य जन भी कार्यक्रम में उपस्थिति एवं सहभागिता रहीं। कार्यक्रम में डीपीसी, डीएईओ द्वारा सभी को साक्षरता शपथ दिलाई गई। समस्त अतिथियों द्वारा साक्षरता के महत्व, उददेश्य व लक्ष्यों को केन्द्रित कर अपने विचार/ उदबोधन दिये। साक्षरता में उत्कृष्ट कार्य करने वाले अक्षर साथियों, सहसमन्वयकों, जनशिक्षकों को प्रमाणपत्र प्रदान कर सम्मान किया गया। उपस्थित सभी जनों ने जिले में सर्वे में सहयोग किया। कक्षा संचालन, ईच वन टीच वन का संकल्प लेकर निरक्षरता उन्मूलन में अपना पूर्ण सहयोग दिये जाने की सहभागिता का संकल्प दोहराया गया। कार्यक्रम में सभी का सहयोग, उत्साह देखने को मिला। कार्यक्रम का संचालन एस. के. गौतम जिला सह समन्वयक साक्षरता जिला साक्षरता मिशन प्राधिकरण उमरिया द्वारा किया गया।

बीटीआर के दो बाघों को सतपुड़ा टाइगर रिजर्व किया जाएगा शिफ्ट

उमरिया । बाघो के लिए विश्व प्रसिद्ध बांधवगढ़ टाइगर रिजर्व के इंक्लोजर में कैद दो बाघों को जल्द ही आजादी मिलेगी। इंक्लोजर में कैद बाघों को सतपुड़ा टाइगर रिजर्व के जंगलों में छोड़ा जाएगा। बांधवगढ़ टाइगर रिजर्व की मगधी परिक्षेत्र में स्थित इंक्लोजर में बांधवगढ़ के जंगलों से रेस्क्यू किये दो नर बाघ कैद हैं। बांधवगढ़ टाइगर रिजर्व के दोनों बाघों को सतपुड़ा टाइगर रिजर्व भेजा जाएगा। सतपुड़ा टाइगर रिजर्व भेजने के लिए बीटीआर प्रबंधन को पीसीसीएफ वन्य प्राणी ने निर्देश दे दिए है। बांधवगढ़ के दोनों बाघ सतपुड़ा टाइगर रिजर्व के जंगलों में अपनी टेरिटरी बनाएंगे। बांधवगढ़ टाइगर रिजर्व के उपसंचालक पीके वर्मा ने बताया कि इंक्लोजर से दो बाघों को सतपुड़ा टाइगर रिजर्व भेजा जाएगा। प्रधान मुख्य वन संरक्षक ने निर्देश दे दिए हैं जल्द ही बाघों को सतपुड़ा टाइगर रिजर्व के जंगल में शिफ्ट किया जाएगा।

राष्ट्रीय कृमिमुक्ति दिवस कार्यक्रम आज

उमरिया । मुख्य चिकित्सा एवं स्वा0 अधिकारी डा एस बी चौधरी ने बताया कि वर्ष 2024-25 में राष्ट्रीय कृमि मुक्ति दिवस कार्यक्रम 10 सितंबर 2024 को आयोजित किया गया है तथा 13 सितंबर 2024 को मॉपअप दिवस का आयोजन किया गया है। इस दौरान समस्त समस्त विद्यालयों एवं आंगनबाडी केन्द्र के माध्यम से 1-19 वर्ष के बच्चों किशोर, किशोरियों को एल्बेंडाजॉल 400 एम.जी. गोली का सेवन कराया जाएगा। अभियान के अंतर्गत शासकीय , शासकीय अनुदान प्राप्त शालाओं, आदिवासी आश्रम शालाओं, प्रायवेट अनुदान प्राप्त शालाओं, केन्द्र शासित शालाओं, मदरसों, स्थानीय निकाय की शालाओं, आंगनवाडी केन्द्रों तथा किशोर न्याय अधिनियम 2015 अंतर्गत संचालित चाईल्ड केयर इंस्टीट्यूट में 1 से 19 वर्षीय समस्त बच्चों का कृमिनाशन किया जायेगा, ताकि मिटटी जिनत कृमि संक्रमण की रोकथाम सुनिश्चित हो। कार्यक्रम कियान्वयन रणीनीति में स्वास्थ्य विभाग को नोडल विभाग बनाया गया है, तथा कार्यक्रम का निष्पादन स्कूल शिक्षा विभाग, महिला एवं बाल विकास विभाग व आदित जाति कल्याण विभाग, के समन्वय से किया जायेगा।

परसवाड़ा जनपद के भादा मरारीटोला में किया गया नवीन ग्रामसभा का गठन

बालाघाट। मध्य प्रदेश पंचायत उपबंध नियम 2022 के नियम 3(1)(2)के तहत सोमवार को जनपद पंचायत परसवाड़ा ग्राम पंचायत पोंगारझोड़ी के ग्राम भादा मरारीटोला में पेसा एक्ट के तहत नवीन ग्राम सभा का गठन किया गया। जिसमें ग्राम के 223 मतदाता में 118 मतदाताओं एवं एक तिहाई महिलाओं का प्रभुत्व रहा। इस दौरान ग्राम सभा की शक्तियों का वाचन किया गया एवं उनके अधिकार के बारे भी बताया गया। साथ ही ग्राम सभा बनाए जाने के लाभ/हानि व ग्राम सभा की सात प्रकार की समितियां का भी वर्णन किया गया। वहीं नजरी नक्शा का निर्माण भी किया गया एवं मतदाताओं की सर्वसम्मति से ग्राम सभा पूर्ण रूप से गठित की गई। गठन के समय ग्राम सभा अध्यक्ष के रूप में रमेश कुसरे उपस्थित रहे। इसमें विकासखंड परसवाड़ा के पेसा ब्लॉक समन्वयक श्री रामचंद्र तेकाम , मास्टर ट्रेनर निलेश बर्वे, वन बीट श्री नारनौरे, बसंत, मीना मार्सकोले,अजंना मेंरावी, इन्द्रकला कुसरे,अनिता वाडीवा,संजय वरकड़े, वर्षा, मोबिलाइजरो की उपस्थिति रही।

मासिक राशि नहीं हिम्मत और हौसले का गुल्लक है 1250 रुपये

बालाघाट.

जिले की 3 लाख 56 हजार 718 बहनों के खातों में 43 करोड़ की राशि अंतरित

महिला सशक्तिकरण की दिशा में राज्य शासन द्वारा 15 माह पूर्व प्रारम्भ की गई मुख्यमंत्री ला?ली बहना योजना। आज अपने अनोखे प?ाव पर पहुँच रहीं है। अब महिलाओं को भी इस राशि का महत्व पता चलने लगा है। भले ही इस राशि से छोटे-मोटे काम होते है। लेकिन इससे कहीं ज्यादा उन्हें नियमित रुपये मिलने से खुद में भरोसा और विश्वास जागने लगा है। बालाघाट नगर की कीर्ति का मानना है कि यह राशि नहीं बल्कि घर और हिम्मत का गुल्लक बन गया है। इस तरह नियमित रुपये मिलना एक तरह से सशक्त महिला की दिशा में महत्वपूर्ण कदम है। इसी तरह नीतू दंदरे का मानना है कि पहले तो हमारे पास ऐसी कोई राशि या उम्मीद नहीं होती थी। जो भी था कुछ यहाँ वहां से बचें रुपये होते थे। जिसकी कोई उम्मीद नही थी, लेकिन ये राशि महिलाओं का संबल बन रहा है। महिलाओं की सोच में बदलाव के लिए यह राशि काफी है।

43 करोड रुपये बालाघाट की बहनों के लिए- आज मुख्यमंत्री श्री मोहन यादव ने प्रदेश की 1.29 करो? बहनों के खातों में सितम्बर माह के 1574 करो? रुपये व योजना की 16 वीं f?स्त अंतरित की है। इसमें बालाघाट की 3 लाख 56 हजार 718 बहने है। इन बहनों के खातों में 43.3 करो? रुपये अंतरित हुए है। सागर जिले के बीना में आयोजित कार्यक्रम का प्रसारण बालाघाट के एनआई सी कक्ष में किया गया था। इस दौरान कलेक?टर श्री मृणाल मीना, जिपं सदस?य केसर बिसेन, आईसीडीएस डीपीओ प्रशांतदीप ठाकुर और बहनें उपस्थित रहीं।

कलेक्टर ने राम खेलावन प्रजापति एवं संजय कों एक-एक वर्ष की अवधि के लिए जिले की चतुर्दिक सीमाओ से किया निष्कासित

उमरिया । कलेक्टर धरणेन्द्र कुमार जैन ने राम खेलावन प्रजापति पिता कोडडा प्रजापति उम्र 42 साल निवासी दमोय थाना इंदवार तथा संजय उर्फकवि पिता प्रेमलाल राय उम्र 26 साल निवासी ग्राम कछरवार को मध्यप्रदेश राज्य सुरक्षा अधिनियम 1990 की धारा 5 (क) (ख) के अंतर्गत जिला-उमरिया सहित समीपी राजस्व जिलों शहडोल, अनूपपुर, मैहर, जबलपुर, कटनी एवं डिण्डौरी की चतुर्दिक राजस्व सीमाओं से 1-1 साल की अवधि के लिये निष्काषित किया है। अनावेदक को आदेश दिनांक से 24 घण्टे के अंदर विनिर्दिष्ट जिलों की सीमा से बाहर जाकर अपने आचरण में सुधार करेंगे। आदेश प्रभावशील रहने तक मेरी अनुमति के बिना उक्त सीमाओं में प्रवेश नहीं करेगा। उसके विरूद्ध चल रहे न्यायालयीन मामलों की पेशी की तिथियों पर संबंधित थानों में लिखित सूचना देने पर उपस्थिति की छूट रहेगी। पेशी के तुरंत बाद अनावेदकों इस आदेश का पालन करेगा। आदेश का उल्लंघन करने पर अधिनियम की धारा 14 के अंतर्गत कार्यवाही की जावेगी।

मंडला के वुशू खिलाड़ियों ने सिवनी में लहराया परचम

चार स्वर्ण पदक, तीन रजत, सात कांस्य पदकों से जिले को किया गौरवान्वित

मण्डला(स्वतंत्र मत)

मुख्यालय के वुशू खिलाड़ियो ने जिले का नाम रोशन किया है। खिलाड़ियो ने 4 स्वर्ण पदक, 3 रजत पदक, 7 कांस्य पदक हासिल कर जिले को गौरवांवित किया है। जिला वूशु संघ सचिव माया रजक ने बताया कि राज्य स्तरीय सीनियर, सब जूनियर वूशु चेम्पियनशिप 6 का आयोजन 8 सितंबर को सिवनी के राशि लोन में संपन्न हुआ। यहां पुलिस अधीक्षक सुनील कुमार मेहता, डीएसओ मनु धुर्वे, केके चतुर्वेदी, सीनियर एडवोकेट पंकज शर्मा, जीजस्सी थामस जिला क्रीड़ा अधिकारी, अशवनी कुमार तिवारी, देवेंद्र ठाकुर विशेष रूप से उपस्थित रहे। वहीं कार्यक्रम के द्वितीय दिवस सिवनी बालाघाट लोकसभा क्षेत्र की सांसद श्रीमती भारती पारधी, विपिन गुप्ता प्रांत संगठन मंत्री, सिवनी विधायक दिनेश राय मुनमुन, भाजपा जिलाध्यक्ष आलोक दुबे, पूर्व जिलाध्यक्ष सुजीत जैन,जिला उपाध्यक्ष संतोष अग्रवाल, वैभव शुक्ला जिला संयोजक, अभिषेक दुबे, अखिलेश खेडीकर के सानिध्य में समापन हुआ। जिसमें मंडला के 15 खिलाडी टीम कोच सुमित रजक के साथ शामिल हुए एवं 14 खिलाड़ियों ने पदक प्राप्त किया। जिसमें 4 स्वर्ण पदक, 3 रजत पदक, 7 कांस्य पदक प्राप्त किए। खिलाड़ी स्वर्ण पदक पूर्णिमा रजक, आशुतोष जायसवाल, अंश झारिया, अविगेल कछवाहा रजत पदक, सोनिया रजक, गुंजन विश्वकर्मा, स्वाती जैन, कांस्य पदक पुष्पेन्द्र बैरागी, समर्थ डहरवाल, आर्या शुक्ला, अनुज रजक, तुषार झारिया,अनुषा मिश्रा, पियूष फगाडे, स्वर्ण पदक मिले हैं। खिलाड़ी आगामी राष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिता में भाग लेंगे 21 सितम्बर से देहरादून में राष्ट्रीय सीनियर प्रतियोगिता आयोजित होने वाली है। जिसमें जिले की पूर्णिमा रजक का चयन हुआ है। सिवनी से खिलाड़ियों के मंडला आगमन पर भव्य स्वागत कार्यक्रम का आयोजन खैरमाई मंदिर बस स्टैंड में किया गया। यहां पर समाजसेवी नीरज अग्रवाल, जनपद अध्यक्ष मंडला, सोनू भलावी, सीताराम कछवाहा, रंजीत कछवाहा, पार्षद बृजेश जसवानी, सुनील दुबे, शंकर भोला ठाकुर, सुनील मिश्रा, विकास जायसवाल, विक्की जयसवाल, ओमप्रकाश जायसवाल, उमा यादव, गीता साहू एवं समाजसेवी एवं गणमान्य नागरिकों ने गाजे बाजे फूल मालाओं से भव्य स्वागत किया एवं खेलप्रेमियों ने सभी पदक प्राप्त खिलाड़ियों को आगामी नैशनल चेम्पियनशिप के लिए शुभकामनाएं दी। सामाजिक कार्यकर्ता किशोर रजक ने इस अवसर पर कहा कि यह खेल 1990 से एशियाई खेलों के आयोजन का अभिन्न हिस्सा रहा है अगले साल हांग्जो में एशियाई खेलों का आयोजन हो रहा हैं चीन के लिए इस मुकाबले का आयोजन उसके पारंपरिक तौर पर घरेलू माहौल में होगा। इस दौरान कुल 15 गोल्ड मेडल दिए जाएंगे, सात सांडा के लिए और बाकि ताओलू जैसे चीनी मार्शल आर्ट खेलों के लिए गुजरात में जारी 36वें राष्ट्रीय खेलों में गांधीनगर के महात्मा मंदिर के एक ही हॉल में सांडा और ताओलू यानी वुशु के यिन और यांग प्रतियोगिताएं एक साथ आयोजित की जा रही हैं इन खेलों के दृश्य आपस में जुड़े दिखाई देते हैं जहां दो एथलीट एक-दूसरे को शारीरिक नुकसान पहुंचाने की कोशिश करते हैं हालांकि ताईजीजियन प्रदर्शन के दौरान बजाए जाने वाले पारंपरिक चीनी संगीत हॉल में पूरी तरह छा जाते हैं एक ही छत के नीचे ये दोनों मुकाबले कैसे हो रहे हैं इसका जवाब इस खेल के नाम वुशु में छुपा हुआ है। दाओशु प्रतिस्पर्धा ताओलू की एक अलग शैली है जिसमें तलवार का इस्तेमाल प्रॉप के तौर पर किया जाता है लेकिन इसमें बैकग्राउंड म्यूजिक नहीं होता उन्होंने कहा वू का मतलब मार्शल और शु का मतलब कला है। मैंने जैकी चान और जेट ली की फिल्में देखने के बाद खेलना शुरू किया। हम खेल के दौरान ताओलू शैली की कलात्मकता के साथ अपने कौशल का प्रदर्शन भी करते हैं लेकिन उनके खेल की शैली पूरी तरह से युद्ध वाली है। वुशु एक ऐसा खेल है जो कलाकारों और फाइटर्स दोनों को आकर्षित करता है कभी भी वुशु प्रतियोगिता देखने जाएं तो आपको दोनों तरह के लोग मिल जाएंगे।

बीएसवीपी की बैठक सम्पन्न

मण्डला(स्वतंत्रमत)। भागीरथ सेवा विकास परिवार कार्यसमिति की बैठक 8 सितंबर को संपन्न हुई। इस अवसर संस्था द्वारा आयोजित होने वाले सिकल सेल एनीमिया परामर्श और जांच शिविर की रुप रेखा तैयार की गई। शिविर को व्यवस्थित रूप से सफल बनाने के लिए कार्यक्रम संबंधित व्यवस्थाओं पर भी चर्चा हुई। समिति के सभी सदस्यों ने मिलकर योजना बनाई की इस शिविर में अधिक से अधिक लोगों की जांच किस प्रकार हो सकती है मोहल्ले ग्रामीण क्षेत्रों में और घर घर जाकर सिकल सेल एनीमिया के बारे लोगों को अवगत कराते हुए सभी से जांच शिविर में आकर जांच का कराने का आग्रह करेंगे। 29 सितंबर को शहीद भगतसिंह और रानी दुर्गावती जी की जन्मजयंती के स्मृति में यह शिविर संपन्न होगा।

इंटेक क्विज प्रतियोगिता सम्पन्न

मण्डला(स्वतंत्रमत)। इंटेक क्विज प्रतियोगिता का 2 राउंड का आयोजन किया गया। भारत ज्योति उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में हेरिटेज क्विज कांटेस्ट का द्वितीय चरण आयोजित हुआ। जिसमें जिले के प्रथम चरण से चयनित 4 विद्यालयों भारत ज्योति विद्यालय, निर्मला स्कूल, मोंटफोर्ट विद्यालय एवं बेलवेदर विद्यालय के 2-2 छात्र कुल 8 छात्रों ने सहभागिता की। बेलवेदर विद्यालय अ/ दिव्यांश बैरागी ब/ समर्थ पटैल, मोंटफोर्ट विद्यालय अ/ गरिमा ज्योतिषी ब/ श्रेयांशी पटैल, निर्मला स्कूल अ/अंशिका यादव ब/अंशिका वर्मा, भारत ज्योति विद्यालय गुंजन राय ब/ प्रथुल परते के परिणाम घोषित किए गए। मोंटफोर्ट उमावि प्रथम, भारत ज्योति उमावि द्वितीय, निर्मला उमावि. तृतीय, बेलवेदर हाईस्कूल चतुर्थ बधाई यह टेस्ट प्रथम स्थान प्राप्त करने वाले मोंटफोर्ट उमावि के दोनों छात्रों ने स्टेट लेवल में भाग लेने की पात्रता हासिल की है। जिनका व्यय इन्टेक चैप्टर मंडला द्वारा वहन किया जाएगा। प्रतियोगिता में इंटेक संस्था से एके शुक्ल परीक्षा प्रभारी, अरुण अग्रवाल, विजय अग्रवाल,रश्मि बाजपेई, अखिलेश सोनी, राजेश क्षत्री, संजय सिंगौर,भारत ज्योति वाईस प्रिंसिपल शैलेश पटेल उपस्थित रहे।

आर्थिक सहायता स्वीकृत

मण्डला(स्वतंत्रमत)। अनुविभागीय अधिकारी राजस्व निवास ने ग्राम कोहानी निवासी सरोज बाई की 19 सितंबर 2018 को पानी में डूबने से मुत्यु हो जाने के कारण मृतक के निकटतम वारसान के रूप में पति संतोष को 4 लाख रूपए की आर्थिक सहायता स्वीकृत की है।

समन्वय समिति की बैठक संपन्न

मण्डला(स्वतंत्रमत)। समय सीमा एवं विभागीय समन्वय समिति की बैठक में सीईओ जिला पंचायत एवं प्रभारी कलेक्टर श्रेयांश कूमट ने कहा कि सभी अधिकारी सीएम हेल्पलाईन के प्रकरणों का समय सीमा में सकारात्मक निराकरण करें। प्रकरणों को संतुष्टिपूर्वक निराकृत करने का प्रयास करें। 50 दिवस से अधिक समय से लम्बित प्रकरणों पर फोकस करें। प्रभारी कलेक्टर ने सीएम हेल्पलाईन के प्रकरणों को समय पर अटेंड नहीं करने पर नोटिस जारी के निर्देश दिए। जिला योजना भवन में संपन्न हुई इस बैठक में संयुक्त कलेक्टर अरविंद सिंहए डिप्टी कलेक्टर क्षमा सराफसहित संबंधित अधिकारी उपस्थित थे।

लाड़ली बहनों के खाते में राशि

मण्डला(स्वतंत्रमत)। मुख्यमंत्री लाड़ली बहना योजना के अंतर्गत मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने बीना जिला सागर में आयोजित राज्य स्तरीय कार्यक्रम के दौरान प्रदेश की 1.29 करोड़ महिलाओं को 1574 करोड़ रूपये एवं 55 लाख सामाजिक सुरक्षा पेंशन हितग्राहियों को 332.43 करोड़ रूपए की राशि सिंगल क्लिक से अंतरण की। इस दौरान जिले की 1 लाख 99 हजार 783 पात्र महिलाओं के खातों में लाड़ली बहना योजना की राशि अंतरित की गई। राज्य स्तरीय इस कार्यक्रम का जिले में सीधा सजीव प्रसारण किया गया। कार्यक्रम में एनआईसी कक्ष मंडला से लाड़ली बहनों ने सहभागिता की।

इनामी दंगल में विजेता पहलवान हुए सम्मानित

मण्डला/नारायणगंज

विकासखण्ड मुख्यालय बीजाड़ाडी अंतर्गत दंगल व्यायाम शाला समिति द्वारा ग्राम पोनियां मॉल में हरितालिका तीज त्यौहार के उपलक्ष्य मे प्रतिवर्षानुसार इस वर्ष भी इनामी दंगल का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में विधायक निवास चैन सिंह वरकडे पहुंचे। कार्यक्रम में उपस्थित सदस्यों में दंगल व्यायाम शाला समिति अध्यक्ष एवं जनपद सदस्य पोनियां मॉल मुकेश धुर्वे उपाध्यक्ष, सरपंच ग्राम पोनियां मॉल भगतसिंह धुर्वे, करिश्मा राजेंद्र पट्टा जनपद पंचायत अध्यक्ष, बीजादांडी, रवि शंकर नरेती कृषि स्थाई समिति सभापति, मदन सिंह वरकड़े वन सभापति, समई लाल मरावी, निर्माण स्थाई समिति सभापति, पुसवा सिंह उददे पूर्व जिला पंचायत सदस्य, पूर्व सरपंच सुधलाल सोयाम, पूर्व सरपंच सुरता सिंह सोयाम, पूर्व सरपंच, मोले सिंह गोठरिया, पूर्व सरपंच चरगांव कला दुलीराम गोठरिया, सरपंच मनेरी नारायण सिंह धूमकेति, आशीष वरकड़े भवेरा, कुदूसिंह मरकाम, बिलनगरी माल,प्रधानाध्यापक माध्यमिक शाला पोनियां माल रतन सिंह मरकाम, माध्यमिक शिक्षक सुकल सिंह मार्को सहित स्टॉफ पुलिस चौकी मनेरी एवं कार्यक्रम में उपस्थित सभी क्षेत्रीय नागरिकों द्वारा कुश्ती प्रतियोगिता कार्यक्रम में मौजूद रहे। विजेता पहलवानों को मंचासीन अतिथियों के द्वारा पुरस्कार प्रदान कर सम्मानित किया गया। मंचीय उद्बोधन के दौरान अतिथियों द्वारा शारीरिक सोष्ठव्य व दांव पेंच की कला कुश्ती को जीवित रखने के लिए पहलवानों सहित आयोजन समिति की सराहना की है।

ग्रीन गणेश अभियान पर कार्यशाला

मण्डला (स्वतंत्र मत)। कलेक्टर द्वारा चलाए गए ग्रीन गणेश अभियान के तहत प्लास्टर ऑफ पेरिस तथा तेजाबी कलर युक्त प्रतिमाओं को नर्मदा नदी में विसर्जन करने हेतु प्रतिबंध लगाया गया है ताकि जल में रहने वाले जालीय जीवन को जीवन दान मिल सके इसके साथ ही नर्मदा के जल के प्रदूषण को रोका जा सके इस अभियान के तहत विद्यालयों में ग्रीन गणेश अभियान के तहत पर्यावरण नियोजन एवं समन्वय संगठन भोपाल के द्वारा विद्यालय के शिक्षकों को मिट्टी की प्रतिमा बनाई। प्रतिमा के आकार देने के लिए ऑनलाइन प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन किया गया। जिसके तहत कल्पना नामदेव प्राचार्य के मार्गदर्शन में एवं सुश्री मुक्त खाखा वरिष्ठ व्याख्याता के सहयोग से विद्यालय के छात्र एवं छात्राओं को आरके क्षत्री सेवानिवृत शिक्षक शासकीय जगन्नाथ उत्कृष्ट विद्यालय में पर्यावरण नियोजन एवं समन्वय संगठन के प्रतिनिधि एवं पर्यावरण सदस्य के द्वारा प्रशिक्षण दिया गया। कार्यक्रम में श्रीमती सारिका तिवारी इको क्लब प्रभारी, अखिलेश उपाध्याय मास्टर ट्रेनर तथा अन्य शिक्षकों का सहयोग रहा।

यादव समाज की ब्लॉक कार्यकारणी घोषित

मण्डला/नारायणगंज(स्वतंत्र मत)

यादव महासभा ब्लाक शाखा की बैठक आयोजित की गई। जिसमें ब्लाक शाखा नारायणगंज के सभी ग्रामों के सभी यादव बंधू जन उपस्थित रहे जिनके द्वारा भगवान श्री कृष्ण की पूजा अर्चना आरती की गई एवम सभी ग्रामों से आए हुए वरिष्ठजनों के द्वारा समाज हित एवं अन्य विषयों को लेकर मंच के माध्यम से अपने-अपने विचार व्यक्त किए गए। सभी ग्राम के यादव बंधुजनो के द्वारा सर्व सम्मति से ब्लाक शाखा की वरिष्ठ एवं युवा यादव महासभा ब्लाक शाखा का गठन किया गया साथ ही वरिष्ठ यादव महासभा ब्लाक शाखा का भी गठन हुआ। पदाधिकारियों में वरिष्ठ यादव महासभा अध्यक्ष अनिल यादव अधिवक्ता, उपाध्यक्ष दयाराम यादव, उपाध्यक्ष जयसिंह यादव, उपाध्यक्ष खुशीलाल यादव, उपाध्यक्ष झुन्ना लाल यादव, उपाध्यक्ष मनीराम यादव, कोषाध्यक्ष परमाननंद यादव, सचिव दिनेश यादव, सह सचिव देवेंद्र यादव अधिवक्ता, संरक्षक नर्मदा प्रसाद यादव, संरक्षक पुरूषोत्तम यादव, संरक्षक डा. सोमनाथ यादव, मंत्री सुनील यादव, मंत्री नारायण यादव, मीडिया प्रभारी सतेंद्र यादव, मीडिया प्रभारी ऋषभ यादव के नामों की घोषणा हुई। साथ ही युवा यादव महासभा ब्लाक शाखा के गठन में अध्यक्ष अरूण यादव, उपाध्यक्ष विनोद यादव, उपाध्यक्ष मुकेश यादव, उपाध्यक्ष मनीष यादव, उपाध्यक्ष ओमकार यादव, उपाध्यक्ष मनीष यादव, कोषाध्याक्ष गोलू यादव, सचिव धनलाल यादव, सह सचिव पंकज यादव, संरक्षक उमेश यादव, संरक्षक राजकुमार यादव, मीडिया प्रभारी दीपक यादव, संरक्षक कमलेश यादव, संरक्षक रूद्र यादव, संरक्षक हेमचंद यादव, संरक्षक बॉबी यादव को दायित्व सौंपा गया है। वही नवनियुक्त पदाधिकारियों को फूलमाला तिलक वंदन कर स्वागत किया गया। सभी पदाधिकारियों के साथ ढोल नगाड़े के साथ नगर भ्रमण किया। इस दौरान जीवन लाल यादव, विनोद यादव, रामकुमार यादव, परसादी यादव, राजेंद्र यादव रामभरोस यादव, अशोक यादव, पप्पू यादव एवं सभी उपस्थित यादव बंधू जनों द्वारा नव गठित पदाधिकारियों को शुभकामनाएं दी गई।

पंचायत सचिव संगठन ने सौंपा सीईओ को ज्ञापन

मण्डला/घुघरी(स्वतंत्र मत)

पंचायत सचिव सहायक सचिव संगठन ब्लॉक शाखा ने मुख्य कार्यपालन अधिकारी जनपद पंचायत घुघरी को ज्ञापन सौंपा है। ज्ञापन में बताया गया है कि विगत कुछ दिनो से ग्राम पंचायत सचिवो एवं ग्राम रोजगार सहायको से अन्य विभागो के विभिन्न कार्य कराये जा रहे है कार्य की अधिकता से वांछित प्रगति नही आने से जनपद के द्वारा वेतन कटौती की जा रही है तथा अन्य विभागो के कार्य करने से विभागीय कार्य प्रभावित हो रहे है फलस्वरूप कार्य का दबाव एवं मानसिक प्रताड़ना का शिकार होकर विगत सप्ताह हमारे दो सचिव साथी असमय काल के गाल मे समा गये। आयुष्मान कार्ड बनाया जाना स्वास्थ्य विभाग का कार्य है तथापि आदेशानुसार हमारे द्वारा आयुष्मान कार्ड बनाये जा रहे है बावजूद इसके कुछ सचिवो, ग्राम रोजगार सहायको का वेतन रोका गया है जो कि न्याय उचित नहीं है सम्बंधितो का रोका हुआ वेतन भुगतान किया जावे। जनपद पंचायत घुघरी के ग्राम पंचायत देवहारा मे डायरिया फैलने का दोषी मानते हुये सचिव महेंद्र सिंह धुर्वे को निलंबित किया गया है एवं प्रभारी रोजगार सहायक का 15 दिवस का वेतन काटा गया है जो अनुचित है जबकि स्वास्थ्य विभाग के अमले पर कोई कार्यवाही नहीं की गयी है। उक्त सचिव को तत्काल बहाल किया जावे। वर्तमान में किसानो की भूमी ई-केवाईसी सचिवो ग्राम रोजगार सहायको से कराई जा रही है जबकि उक्त कार्य राजस्व विभाग का है। हमारे द्वारा समग्र की ई-केवाईसी की जाती है। उक्त आदेश से सचिवो, ग्राम रोजगार सहायको को मुक्त करने का आदेश प्रसारित हो। 181 की शिकायतो पर शिकायत बंद न होने से सचिवो, ग्राम रोजगार सहायको का वेतन काटा जाता है जो अनुचित है शिकायतो का समाधान होने पर शिकायतकर्ता स्वत: ही बंद कर देते है अनेक शिकायत मांग आधारित होते है जिनका तत्काल निराकरण किया जाना संभव नहीं होता है संबंधित शिकायतकर्ता को नोटिस जारी कर जनपद मे ही समक्ष मे शिकायत का निराकरण कराया जावे। शनिवार एव रविवार को म.प्र. शासन के आदेशानुसार सभी कार्यालयो मे अवकाश होता है ग्राम पंचायत भी हमारा कार्यालय है परंतु यह देखा गया है कि शनिवार और रविवार को ही स्वास्थ्य शिविर, विशेष शिविर विशेष ग्राम सभा आयोजित की जाती है। भविष्य में अन्य कार्यालयो की भाती शनिवार एवं रविवार का अवकाश ग्राम पंचायत को प्रदाय किया जावे, ताकि हम अपना पारिवरिक एवं सामाजिक दायित्व निभा सके। इस दौरान सचिव एवं रोजगार सहायक उपस्थित रहे।

11 सितंबर से लगेंगे जन स्वास्थ्य शिविर

मण्डला(स्वतंत्रमत)। जिला पंचायत के मुख्य कार्यपालन अधिकारी श्रेयांश कूमट ने बताया कि जिले की ग्राम पंचायतों में आरोग्यम् मंडला जन स्वास्थ्य शिविर का आयोजन प्रत्येक बुधवार और शनिवार को आयोजित किया जाएगा। शिविर में प्राथमिक स्वास्थ्य सेवाएं आमजन को पंचायत स्तर पर ही उपलब्ध कराने के लिए स्वास्थ्य विभागए आयुष विभाग, महिला एवं बाल विकास विभाग के समन्वय से स्वास्थ्य परीक्षण, लैब जांच, स्वास्थ्य परामर्श तथा आयुष्मान कार्ड बनाए जाएंगे। जारी आदेश के अनुसार विकासखंड मंडला में 11 सितंबर को ग्राम पंचायत बढार, मलारा, गूड़ा अंजनिया में शिविर लगाया जाएगा। 14 सितंबर को ग्राम पंचायत बक्छेरादौना, टिकरवारा, चटुआमार, 18 सितंबर को ग्राम पंचायत सुनेहरा माल, छपरी सिलपुरी, टिकरिया, 21 सितंबर को बरबसपुर, बनियातारा, ठरका, 25 सितंबर को बकौरी, बेहंगा, केहरपुर, 28 सितंबर को उमरिया, बिनैका और देवगांव में शिविर लगाए जाएंगे। वहीं विकासखंड बिछिया में 11 सितंबर को ग्राम पंचायत औरई, खमरौटी, बंजी, 14 सितंबर को खटिया नारंगी, बरबसपुर, खटोला, 18 सितंबर को बरखेड़ा, सिरहनी, बटवार, 21 सितंबर को किसली भिलवानी, भावामाल, कोको, 25 सितंबर को भीमा, कुडैला रैयत, बोकर, 28 सितंबर को लफरा, माधोपुर, बुड़ला में शिविर लगाए जाएंगे।

संत निरंकारी चैरिटेबल फाउंडेशन के तत्वावधान में विशाल रक्तदान शिविर में सौ यूनिट रक्त हुआ एकत्र

नैनपुर (स्वतंत्र मत)

सद्गुरु माता सुदीक्षा जी महाराज की अनुकम्पा से संत निरंकारी चैरिटेबल फाउंडेशन नैनपुर द्वारा विशाल रक्तदान शिविर का अयोजन किया गया। स्थानीय सिंधी धर्म शाला में आयोजित इस रक्त दान शिविर में नगर के दाताओ ने अपना रक्त दान किया। जिसमे लगभग सौ यूनिट रक्त एकत्र किया गया। बताया गया कि निरंकारी मिशन द्वारा रक्तदान शिविर की शुरुआत 1986 में निरंकारी बाबा हरदेव सिंह जी महाराज द्वारा स्वयं रक्तदान करके की गई थी । बाबाजी ने मानवता के प्रति संदेश देते हुए कहा कि च्च्खून नालियों में नहीं नाड़ियों में बहना जरूरी है। सद्गुरु माता सुदीक्षा जी महाराज इस संदेश की पालना करते हुए निरंतर रक्तदान शिविरो का आयोजन करते आ रहे है। निरंकारी मिशन द्वारा अभी तक लगभग 14 लाख यूनिट रक्तदान किया जा चुका है । रक्तदान शिविर का उद्घाटन नैनपुर एसडीओपी सुश्री नेहा पचीसिया व नैनपुर नगरपालिका अध्यक्ष श्रीमती कृष्णा पंजवानी द्वारा किया गया। मीडिया प्रभारी कैलाश कटियार ने बताया कि डोनर्स के लिए शिविर में फल फ्रूट जूस आराम करने का पूर्ण प्रबंध किया गया था। शिविर में 142 रजिस्ट्रेशन किए गए जिसमे से 100 यूनिट रक्त का संग्रह किया गया। शिविर में अनिल बोधानी,ओपी नाग, ज्वाला प्रसाद विश्वकर्मा, कृष्णा महलवंशी, सुदामा बोधानी, गुरपाल निरंकारी, मुरली नागपाल, कैलाश कटियार, राजेश श्रीवास्तव, विजय कोटवानी, हासानंद कटियार, मोनू,प्रेम आसवानी, बीएमओ राजीव चावला डॉक्टर्स की टीम व निरंकारी सेवादल भाई बहिनों की उपस्थिति रही ।

पिंडरई में मनाया गया मार्दव धर्म दिवस

धर्म आत्मा के स्वाभाविक गुण मृदुता का नाम है

मुनि श्री समतासागर जी की धर्म वाणी

नैनपुर (स्वतंत्र मत)। वृति नगरी पिंडरई में मुनिश्री समतासागर जी महाराज का चातुर्यमास चल रहा है। जहां धर्म संगत आचार व्यवहार की सरिता प्रवाहित हो रही है। कल पिंडरई में मार्दव धर्म दिवस मनाया गया। आचार्य श्री ने बताया कि मृदुता का भाव मार्दव है। मनुष्य के विचार और व्यवहार में जो सहज नम्रता कोमलता रहती है उसे ही संतों ने मार्दव धर्म कहा है। आपने कहा कि इस मृदुता का प्रबल शत्रु मान है । इसे अहंकार, घमण्ड मद या अभिमान भी कहते हैं। आज अहंकार मनुष्य के रग-रग में समाया हुआ है। उसकी वाणी, व्यवहार और चाल-चलन में कहीं न कहीं से अहंकार की गंध आती ही रहती है। जिसकी वजह से व्यक्ति अपने आपको सबसे बड़ा समझता है और दूसरे को हमेशा नीचा दिखाने की कोशिश करता है। दूसरे के अस्तित्व को कुछ समझता ही नहीं। सच ही तो है जहाँ किसी को मद-मान का नशा छाया हो वहाँ किसी का भान कैसे हो सकता हैं। मान में भान नहीं, मृदुता में भान है, ज्ञान है। मृदुता के इस धर्म को आत्मसात करने के लिए हमें कहीं न कहीं झुकना ही पड़ेगा। बिना झुके जैसे कुंए में पड़ी बाल्टी में भी पानी नहीं आता तो फिर बिना झुके, नम्र हुए हमें धर्म की प्राप्ति कैसे होगी? प्रकृति भी हमारे लिये संदेश देती है कि फल-फूलों से लदे हुए वृक्ष सहजतया झुकते हैं। और फल-फूल रहित वृक्ष अक्खड़ / अकड़े हुए ठूंठ से खड़े रहते हैं। गुणवान विनयवंत होते हैं, जिनके पास में गुण हैं वह बड़े ही विनम्र व्यवहारी होते हैं। आसन और शासन की बात न करें. गुणवानों की बात करें तो वास्तव में ऐसा भी अनुभव किया गया है। जो जितना योग्य होता है वह बड़े-बड़े पदों पर रहकर भी उतना ही शालीन / विनम्र होता है। अकेले पद और कुर्सी से किसी का कद नहीं बढ़ता। कद तो उसके आचरण और मधुर व्यवहार से बढ़ता है। ज्ञान, रूप, बल, पद प्रतिष्ठा, कुल, जाति, तप, ऋद्धी आदि को पाकर किसी को नीचा दिखाना और अपने मन में बढ़प्पन लाते हुऐ अहंकार करना अधर्म है। धर्म आत्मा के स्वाभाविक गुण मृदुता और विक्रमता का नाम है। वहीं व्रती नगरी पिंडरई में पयुर्षण पर्व आरम्भ हो गया है । इसे जैन परंपरा में दशलक्षण पर्व भी कहते हैं। दशलक्षण धर्मो में पहला धर्म उत्तम क्षमा का है। क्षमा आत्मा का स्वाभाविक धर्म है किन्तु हम इसे प्राप्त ना कर इसके विरोधी तत्त्व क्रोध के वशीभूत हुए हैं। क्रोध एक कषाय है जो अज्ञानता से प्रारंभ होती है और अंधे तथा उन्मादी या पागल व्यक्ति की तरह कुछ भी कृत्य घटित करने की स्थिती में आ जाती है। ऐसे क्रोध उत्पन्न होने के कारणों में रुचि भेद, चिंतन भेद, आग्रही स्वभाव, स्वार्थ या गलतफॅमी जैसे प्रमुख कारण बनते हैं। जिसके दुष्परिणामों में घर परिवार में कलह, बुराई और बैर का वातावरण बनता है यू कहें स्वर्ग सा सुन्दर वातावरण नरक में तब्दील हो जाता है। ऐसे क्रोध और क्रोध के दुष्परिणामों को सारा संसार भुगत रहा है। क्रोध पर नियंत्रण करने के उपायों में सहष्णुता का विकास, समग्रता का चिंतन, विनोद प्रियता, स्थान परिवर्तन और मौन आदि हैं। आचार्य श्री की धर्म वाणी से न कवक जैन समुदाय अपितु समाज का हर वर्ग अभिभूत हो रहा है।

घटिया में कुर्मी समाज की बैठक सम्पन्न

मण्डला/बम्हनी(स्वतंत्रमत)। सीबी पटेल अध्यक्ष कुर्मी समाज की अध्यक्षता में ग्राम घटिया बम्हनी बंजर में कुर्मी समाज विकास संगठन की बैठक संपन्न हुई। जिसमें समाज में व्याप्त कुरीतियों को दूर करने के लिए विस्तार से चर्चा हुई। बैठक में मातृशक्तियों ने भी भाग लिया। सर्वसम्मति से युवा क्षेत्रीय इकाई का गठन किया गया। जिसमें मनहरण पटेल ककैया को युवा अध्यक्ष, बसंत पटेल मांगा उपाध्यक्ष, अभिषेक पटेल घटिया उपाध्यक्ष साथ ही युवा कार्यकारिणी का भी गठन किया गया और महिला प्रकोष्ठ का भी गठन किया गया। जिसमें महिला अध्यक्ष रेखा पटेल, उपाध्यक्ष आराधना पटेल, सचिव नीलू पटेल, कोषाध्यक्ष मीरा पटेल, सह सचिव प्रीति पटेल एवं कार्यकारिणी का गठन हुआ। गांव-गांव जाकर युवा इकाई एवं महिला संगठन का गठन करने का संकल्प लिया गया। यह निर्णय लिया गया कि 31अक्टूबर के पूर्व सभी गांवों में इकाई गठित किया जाये। युवा एवं महिला इकाई के गठन पर राजकुमार सिंगौर, अखिलेश चंद्रौल, राजेन्द्र चंद्रोल, महेश पटेल, संतोष चंद्रोल, संजूलता सिंगोर, शशि पटेल, दिव्या पटेल, जागृति पटेल आदि ने हर्ष व्यक्त करते हुए बधाईयां प्रेषित की है।

संपादकीय

सख्ती के साथ...शिक्षा भी

जातिगत जनगणना की मांग के बीच महिलाओं के खिलाफ बढ़ते अपराधों पर विचार करने का एक और कोण भी चर्चा में आया है। सुप्रीम कोर्ट के वरिष्ठ वकील व राज्य सभा सांसद कपिल सिब्बल का सवाल लाजिमी है। कठोर कानून बन जाने मात्र से क्या समस्या का समाधान होना अथवा किया जाना संभव है? उन्होंने कहा सख्त कानून से ज्यादा जरूरी है, महिलाओं के लिए अलग से विश्वविद्यालय खोलना। घरेलू हिंसा पूरी तरह से नहीं रुकी है। बहुत सारे मामले रिपार्ट ही नहीं होते। सिब्बल का विचार सकारात्मक है। जब तक महिलाओं के लिए उच्च शिक्षा के द्वार नहीं खुलेंगे समस्या के समाधान को सही दिशा नहीं मिलेगी। ग्रामीण क्षेत्र में लड़कियां यदि खेतों में काम कर रही हैं तो शिक्षित कैसे होंगी? कोलकाता के आरजी कर अस्पताल में हुए दुष्कर्म-हत्या को लेकर मुख्यमंत्री ममता बनर्जी द्वारा 'अपराजिता बिल' पारित किया जाना क्या लाभदायक होगा? समाज जब तक स्वयं आगे नहीं आता, कानून क्या कर लेगा? महिलाएं प्रताड़ना का शिकार होती हैं, वे समाज से ही आती हैं और समाज के ही लोग अपराधों के लिए जिम्मेदार होते हैं। सर्वज्ञात है कि छोटी जातियों, दलितों तथा गरीबों को ही सर्वाधिक तकलीफ झेलना पड़ता है। 'दिल से विद कपिल सिब्बल' शीर्षक साक्षात्कार के विचारों के इर्द-गिर्द भी समस्या को देखे जाने की जरूरत है। सिब्बल ने शिक्षा को बेहतर, आवश्यक बताया। पितृसत्मक सोच और जाति व्यवस्था के दायरे में समस्या को देखना जरूरी है। सामाजिक तौर पर इस प्रकार के 'कॉकटेल' को देखा जाना चाहिए, जिसके पीछे जातिगत विचार भी महत्वपूर्ण है। दरअसल, इस अपराध में शिकार हुई महिला तो चिकित्सा के क्षेत्र से थी। उसे निशाना बनाने से शिक्षा का संबंध कुछ अन्य तथ्य भी दर्शाता है। तथ्य यही है कि जब तक समाज, जनप्रतिनिधि, लचर जांच व कानून व्यवस्था को ज्यादा मजबूती नहीं मिलेगी तब तक कोई बड़ा फायदा नहीं होगा। पक्ष यह भी है कि जातीय जनगणना होने से उन लोगों की पहचान हो सकेगी जिन्हें फायदा दिलाने और उचित प्रतिनिधित्व मिलने का रास्ता प्रशस्त होगा। प्रभावशाली जातियों को पर्याप्त लाभ मिल चुका है। अन्य दबी-कुचली जातियां अभी भी सरकारी लाभ के लिए प्रयासरत हैं। आर्थिक आधार पर जातिगत जनगणना का दायरा सामने आएगा। इसके आलोक में वंचितों के लिए उचित समाधान मिलेगा। सिब्बल साहब सही सोचते हैं, शिक्षा से ही महिलाओं में साहस आयेगा, सशक्तिकरण होगा और संघर्ष किए जाने में वे समर्थ बनेंगी।

और अंत में

फेसबुक पर रविवार देर शाम प्रियंका गांधी वाड्रा की एक पोस्ट गौरतलब है। लिखा- लूट के मामले में गैरकानूनी तरीके से निर्दोष को ही फंसाने की कोशिश पिछले दिनों यूपी में रायबरेली के एक जनसुविधा केन्द्र पर की गई थी। कानून का राज है या राजनीतिक संरक्षण?

यूरोप को अतीत नहीं, भविष्य की जरूरत नवाचार और राष्ट्रीय सुरक्षा पर ध्यान भी अहम

दीपक कुमार शर्मा

कई मामलों में यूरोप, अमेरिका से भी आगे है। यूरोप ने पूंजीवाद की सबसे कठोर धार को नरम किया, सुरक्षा जाल प्रदान किया और महत्वपूर्ण तरीकों से खुशहाली के मामले में अमेरिका से आगे निकल गया। यूरोपीय शिशुओं की मृत्यु की आशंका अमेरिका की तुलना में कम है, यूरोप में प्रसव अमेरिका की तुलना में कम खतरनाक है, और यूरोपीय लोग लंबे समय तक जीवित रहते हैं। उत्तरी यूरोप के लोग अमेरिकियों की तुलना में कम काम करते हैं। अमेरिकियों के 1,800 घंटे की तुलना में वे प्रति वर्ष केवल 1,400 या 1,500 घंटे काम करते हैं और अधिकांशतः सार्वभौमिक स्वास्थ्य देखभाल, मुफ्त या सब्सिडी वाली बाल देखभाल और अच्छे सार्वजनिक स्कूलों का आनंद लेते हैं। विश्वविद्यालय की शिक्षा अक्सर मुफ्त या सस्ती होती है। यदि आप डेनमार्क में मैकडोनल्ड्स में बर्गर बनाते हैं, तो आपको प्रति घंटे 20 डॉलर से ज्यादा का भुगतान किया जाता है, साथ ही आपको छह सप्ताह की सवैतनिक छुट्टी, एक साल का मातृत्व अवकाश और पेंशन योजना का आनंद मिलता है। इतना होने पर भी यूरोप आज आर्थिक संकट से जूझ रहा है। पिछले साल अमेरिकी अर्थव्यवस्था (2.5 फीसदी) यूरोपीय संघ (0.4 फीसदी) की तुलना में छह गुना तेजी से बढ़ी। अमेरिका के पास एपल, गूगल और मेटा जैसी तकनीकी सफलताएं हैं, लेकिन बाजार पूंजीकरण के हिसाब से दुनिया की शीर्ष 10 तकनीकी कंपनियों की हाल ही में जारी की गई सूची में एक भी यूरोपीय कंपनी नहीं है। यूनिकॉर्न (एक अरब डॉलर से ज्यादा मूल्य की स्टार्ट-अप) की एक सूची से पता चलता है कि अफ्रीका के छोटे-से देश, सेशेल्स में यूनान जितनी ही ऐसी कंपनियां (दो) हैं, जबकि इटली या बेल्जियम में तीन कंपनियां हैं। फ्रांस ऑलमंड्स क्रोइसेंट, लग्जरी ब्रांड और एक शानदार जीवनशैली प्रदान करता है। लेकिन अगर यह एक राज्य होता, तो यह प्रति व्यक्ति सबसे गरीब राज्यों में से एक होता, अर्कान्सस के बराबर।

इस बीच, यूरोप की जनसंख्या इस दशक में चरम पर है और 14वीं सदी में ब्लैक डेथ (प्लेग फैलने) के बाद पहली बार इसमें उल्लेखनीय गिरावट आने वाली है। जनसंख्या में गिरावट और समाजों की उम्र बढ़ने की प्रक्रिया इस तरह से जारी रहने की आशंका है, जिससे महाद्वीप का प्रभाव कम हो जाएगा। सैन्य दृष्टि से पश्चिमी यूरोप अमेरिका पर निर्भर है और अपने दम पर रूस का मुकाबला करने में असमर्थ है। पोलैंड और बाल्टिक राज्य अपनी पूरी ताकत लगाए हुए हैं, लेकिन दुर्भाग्य से यूरोप में आज कोई वास्तविक नेता नहीं है = जर्मनी के चांसलर इस भूमिका को निभा सकते हैं, लेकिन ओलाफ शोल्ज एंजेला मर्केल की छाया मात्र हैं। कभी इस क्षेत्र का इंजन रहे जर्मनी को अब कभी-कभी यूरोप का बीमार देश कहकर खारिज कर दिया जाता है। आंशिक रूप से इसलिए यह चिंता बढ़ रही है कि लड़खड़ाती जर्मन सरकार यूक्रेन को समर्थन देना बंद कर सकती है। इस बीच, फ्रांस के राष्ट्रपति इमैनुएल मैक्रों नेतृत्व करने को तैयार हैं, हालांकि कोई नहीं चाहता कि वह ऐसा करें। मैक्रों ने अप्रैल में सोरबोन में चेतावनी दी थी, हमारा यूरोप नष्ट हो सकता है; वह इस खतरे के प्रति सजग हैं, लेकिन देश या विदेश में उनके बहुत कम सहयोगी हैं।

वर्ष 2005 में राजनीतिक वैज्ञानिक मार्क लियोनार्ड ने अपनी पुस्तक में बताया कि क्यों यूरोप 21वीं सदी को चलाएगा। लेकिन एक यूरोपीय गणना के अनुसार, यदि अर्थव्यवस्थाएं वर्तमान गति से बढ़ती रहीं, तो 2035 तक औसत अमेरिकी और औसत यूरोपीय आर्थिक रूप से उतने ही दूर हो जाएंगे, जितने आज औसत यूरोपीय और भारतीय हैं। निष्पक्ष रूप से कहें, तो अंतर का आकलन इस बात पर भी निर्भर करता है कि किस विनिमय दर का उपयोग किया जाता है। अंतर बढ़ने का एक कारण यह हो सकता है कि राष्ट्रपति बाइडन के नेतृत्व में अमेरिका कंप्यूटर चिप्स, बैटरी और हाई-स्पीड इंटरनेट में निवेश कर रहा है; जबकि यूरोपीय संघ अपने बजट का लगभग एक-चौथाई हिस्सा कृषि और ग्रामीण क्षेत्रों के लिए आवंटित करता है, कभी-कभी अधिक उत्पादन के लिए सब्सिडी देता है, ताकि यूरोप को तथाकथित अत्यधिक वाइन उत्पादन को हैंड सैनिटाइजर में बदलने के लिए भुगतान करे। नतीजतन यूरोप के %प्रतिस्पर्धात्मक संकट% के बारे में चिंता बढ़ रही है।

इस साल गर्मियों में ब्रुसेल्स में त्रिपक्षीय आयोग की बैठक में मैंने बार-बार इस विचार के विभिन्न रूपों को सुना कि अमेरिका नवाचार करता है, जबकि यूरोप विनियमन करता है। हाल के दशकों में, मेरा मानना है कि यूरोप उपभोक्ताओं को एकाधिकार और जहरीले रसायनों से बचाने में बेहतर रहा है। लेकिन मेरे जैसे उदारवादियों को इस बात से सावधान रहना चाहिए कि यूरोप में अत्यधिक विनियमन और कमजोर शासन इस महाद्वीप के भविष्य को कमजोर कर सकता है। निष्पक्षता से कहें, तो आलोचक कभी-कभी यूरोप को एक व्यंग्यात्मक छवि में बदल देते हैं, इसकी विशाल शक्तियों को अनदेखा कर देते हैं। लोगों को आलसी बनाने के बजाय, मानव पूंजी में इसके निवेश ने लोगों को काम करने के लिए सशक्त बनाया है- उत्तरी यूरोप में श्रम शक्ति भागीदारी दर अमेरिका की तुलना में अधिक है। इसका एक कारण यह भी है कि यूरोप बच्चों की देखभाल के मामले में बेहतर है, जिससे माता-पिता के लिए नौकरी करना आसान हो जाता है।

यह भी सच है कि संकट कभी-कभी जीवन शक्ति के नए विस्फोटों को जन्म देते हैं। लगभग 15 साल पहले यूनान काफी निराशाजनक लग रहा था। अब यह यूरोप में सबसे तेजी से बढ़ने वाले देशों में से एक है। 1990 के दशक में आर्थिक संकट के बाद स्वीडन ने खुद को फिर से स्थापित किया और वैश्विक नवाचार और उद्यमिता में अग्रणी बन गया। और एस्टोनिया! 1990 के दशक में कौन शर्त लगा सकता था कि 2024 में दुनिया के सबसे हाई-टेक देशों में से एक छोटा-सा एस्टोनिया होगा, जो अब भी उस देश के बगल में रह रहा होगा, जिसने कभी इसे आतंकित किया था? एस्टोनिया आज दुनिया के सबसे डिजिटल रूप से समृद्ध देशों में से एक है, और यह याद दिलाता है कि यूरोप के आर्थिक इंजन उन जगहों पर जा सकते हैं, जो कभी हाशिये पर थे। फिर भी यूरोप को अपने अतीत की तरह ही भविष्य की भी जरूरत है। मुझे डर है कि जब तक यह निरर्थक, लेकिन महंगे नियमों को खत्म नहीं करता, नवाचार को नहीं अपनाता और अपनी राष्ट्रीय सुरक्षा को मजबूत नहीं करता, तब तक यह दुनिया के उदारवादियों के लिए आदर्श से ज्यादा एक चेतावनी बना रहेगा।

पाकिस्तानः कुफ्र टूटा, खुदा-खुदा करके

आदित्य कुमार चौपड़ा

कुफ्र टूटा खुदा-खुदा करके। आखिरकार पाकिस्तान ने स्वीकार कर ही लिया कि 1999 के कारगिल युद्ध में उसकी सेना के जवान ही शामिल थे वरना इससे पहले तो अधिकारिक रूप से वह यही कहता घूम रहा था कि कारगिल में जेहादियों व मुजाहिदीनों की शिरकत थी और पाकिस्तानी सेना का इसमें कोई हाथ नहीं था। यही वजह थी कि 1999 में पाकिस्तान ने कारगिल युद्ध में मारे गये अपने जवानों के शव तक नहीं लिये थे और उनकी शिनाख्त वह उस समय मुजाहिदीनों के रूप में कर रहा था। मगर सच कभी छिपता नहीं है और वह सामने आ ही जाता है। कारगिल का सच आखिरकार पाकिस्तानी सेना के जनरल आसिम मुनीर ने उगल ही दिया और उन्होंने गत दिन रावलपिंडी में हुए एक सैनिक समारोह में कारगिल में मारे गये पाकिस्तानी जवानों को शहीद का दर्जा दिया। हालांकि इससे पहले 2010 में भी पाकिस्तानी सेना ने अपनी एक आधिकारिक वेबसाइट पर उन 350 सैनिकों के नाम डाले थे जिनकी कारगिल युद्ध में मृत्यु हुई थी। पाकिस्तान चोरों की तरह सच से भागने वाला देश जाना जाता है क्योंकि 1947 के सितम्बर महीने में भी जब इसने कश्मीर पर हमला किया था तो आगे-आगे उत्तर पश्चिम प्रान्त के कबायली ही भेजे थे। यह उस समय भी पाकिस्तानी सेना की सीधी भागीदारी से भागता रहा था परन्तु बाद में 1948 में जब इसने कश्मीर पर हमला किया तो 1949 में जाकर माना था कि इसकी सेनाएं कश्मीर में सक्रिय हैं। वास्तव में पाकिस्तान एक आक्रमणकारी देश है जिसने भारत पर चार बार आक्रमण किया है और युद्ध की शुरूआत की है। चाहे वह 1948 के बाद का 1965 का युद्ध हो या 1971 का बंगलादेश युद्ध अथवा 1999 का कारगिल युद्ध। मगर हर बार इसने भारत के हाथों मुंह की खाई और भारतीय फौजों ने हर बार इसके छक्के छुड़ाये। 1965 के युद्ध में तो भारतीय सेनाएं लाहौर तक पहुंच गई थीं और उन्होंने इच्छोगिल नहर के पानी से कुल्ला किया था। इसी प्रकार 1971 के युद्ध में भारत ने पाकिस्तान को बीच से चीर कर दो टुकड़े करते हुए बंगलादेश का निर्माण करा दिया था। मगर 1999 में कारगिल में तो पाकिस्तान चोरों की तरह भेष बदल कर घुस कर भारतीय क्षेत्र में आया था और जब इसका पता भारतीय सेनाओं को लगा तो उन्होंने इसे वापस खदेड़ा। कारगिल युद्ध में पाकिस्तानी सेनाओं का हाथ होने का प्रमाण 2009 में भी इसकी वायुसेना के एक एयर कमांडर कैसर तुफैल ने एक लेख लिख कर दिया था जिसमें उन्होंने कारगिल युद्ध की पाकिस्तान द्वारा की गई तैयारियों का पूरा खुलासा किया था। भारतीय सेना के कुल 523 जवान कारगिल युद्ध में वीरगति को प्राप्त हुए थे। इस युद्ध की एक और विशेष बात यह थी कि इसमें विवादित बोफोर्स तोपों का इस्तेमाल हुआ था। जिनसे निकले हुए गोलों से पाकिस्तानी आक्रमणकारियों के छक्के छूट गये थे। विगत वर्ष कारगिल युद्ध की बरसी पर ही रक्षामन्त्री श्री राजनाथ सिंह ने कहा था कि 26 जुलाई, 1999 को कारगिल युद्ध जीतने के बावजूद भारत ने अन्तर्राष्ट्रीय सीमा का उल्लंघन नहीं किया था क्योंकि हम एक शान्ति प्रिय देश हैं और अन्तर्राष्ट्रीय नियमों का पालन करते हैं। इसका मतलब यह भी नहीं है कि हम कभी भारत-पाक नियन्त्रण रेखा को पार नहीं कर सकते हैं। यदि भविष्य में इसकी आवश्यकता पड़ी तो भारत इससे पीछे नहीं हटेगा क्योंकि आत्म सुरक्षा हर शान्ति प्रिय देश का अधिकार होता है। लेकिन वाजपेयी सरकार के दौरान जब कारगिल युद्ध हुआ था तो इसके समाप्त हो जाने के बाद भारत में घरेलू राजनीति गर्मा गई थी और तत्कालीन रक्षामन्त्री स्व. जार्ज फर्नांडीज को इसका निशाना बनना पड़ा था। कारगिल में घुसपैठ की जानकारी देर से मिलने के कारणों की जांच के लिए एक उच्च स्तरीय समिति गठित की गई थी जिसने अपनी रिपोर्ट में कहा था कि ऐसा गुप्तचर सूचना के असफलता की वजह से हुआ।

इस महंगाई के दौर में पांच सौ रुपए की क्या औकात है

उत्तर प्रदेश के जौनपुर जिले की शाहगंज तहसील के नायब तहसीलदार कार्यालय में एक प्राइवेट कर्मी ने अपना दुखड़ा जिले के कलेक्टर साहब को पत्र में लिखकर भेजा है, इस प्राइवेट कर्मी का कहना है कि रोजाना पचासों लोग अपना काम करवाने के लिए उनके साहब के पास आते हैं और वो तथा उसके दो साथी काम के बदले मिलने वाली रिश्वत की राशि इकट्ठी करते हैं शाम को साहब हिसाब करते हैं तो हम तीनों को मात्र पांच पांच सौ रुपए देकर बाकी पूरा माल अपनी जेब में रख लेते हैं ,उसका कहना है कि आज इस महंगाई के युग में पांच सौ रुपए की औकात ही क्या है कम से कम हजार रुपए रोज तो मिलना ही चाहिए । दिन भर मेहनत करते हैं रिश्वत के मिलने वाले नोटों का हिसाब किताब रखते हैं और शाम को कुल जमा पांच सौ रुपल्ली हाथ में आती है । इस प्राइवेट कर्मी का दर्द सचमुच बड़ा पीड़ा दायक है नायब तहसीलदार साहब को इन लोगों का दर्द महसूस करना चाहिए कि बेचारे ईमानदारी से उनकी रिश्वत का पूरा हिसाब किताब रखते हैं, किसने कितना दिया, किस से कितना लेना है, किसने एडवांस दिया, किसका काम हो गया तो पूरा पैसा मिल गया, बड़ा कठिन काम है डायरी भी नहीं रख सकते कि कभी अगर पकड़े गए तो डायरी से सारी पोल खुल जाएगी इसलिए सारा हिसाब किताब दिमाग में रखना पड़ता है, अब सोचो आप दिमाग पर कितना जोर नहीं डालना पड़ता होगा और नायब तहसीलदार साहब इन गरीबों को मात्र पांच पांच सौ के नोट पकड़ा कर सारा माल समेट कर अपने घर निकल जाते हैं। जब कलेक्टर साहब के पास ये आवेदन पहुंचा तो वो भी चकरा गए, वैसे चकराने की कोई बात थी नहीं क्योंकि किसी भी सरकारी दफ्तर में विशेष कर राजस्व विभाग में अगर आपको कोई काम है तो पटवारी से लेकर एसडीएम तक आपको सेवा तो करना ही पड़ेगी, सबसे पहली सीढ़ी तो पटवारी है अगर उस सीढी को ही आप पार नहीं कर पाए तो फिर आपका काम तो होने से रहा। उस प्राइवेट कर्मी के आवेदन पत्र पर कलेक्टर साहब क्या निर्णय लेते हैं अभी उसक पता नहीं लग पाया है लेकिन उस बेचारे का साफ कहना है की पांच सौ रुपए रोज में अब घर नहीं

चलता, नायब तहसीलदार साहब कम से कम हजार रुपए रोज तो दें ताकि उसके घर का चूल्हा जल सके लेकिन साहब एक पैसा बढ़ाने तैयार नहीं है, हो सकता है कलेक्टर साहेब इन को इशारा कर दें कि भाई थोड़ा बहुत बढ़ा दो हजार ना सही सात सौ कर दो वरना फिर हमें भी कोई ना कोई कार्यवाही तो करना पड़ेगी। एक तरफ बुलडोजर बाबा सरकारी दफ्तरों में रिश्वतखोरी बंद करने का दावा कर रहे हैं वही उन्हीं के नाक के नीचे अगर प्राइवेट कर्मी अपने नायब तहसीलदार साहब के अन्याय के खिलाफ चिट्ठी लिख रहा है तो बाबा जी को देखना होगा। वैसे इस प्राइवेट कर्मी की हिम्मत की दाद देना पड़ेगी कि कम से कम उसने दफ्तर में होने वाले भ्रष्टाचार और उससे होने वाली कमाई के बारे में बड़े साहब तक खबर तो पहुंचा दी और यह भी मांग कर दी के उसका रोज का पारिश्रमिक बढ़ाया जाए।

जिंदगी के साथ भी और उसके बाद भी

भारतीय जीवन बीमा निगम का एक स्लोगन है जिंदगी के साथ भी और जिंदगी के बाद भी लगता है इस स्लोगन को जीएसटी ने भी अपना लिया है इंसान जब तक जिंदा रहता है हर चीज में उसको जीएसटी देना ही पड़ती है अब सतना में नगर निगम ने एक आदेश जारी करके कह दिया है कि विद्युत शव दाह गृह में जो भी मुर्दा आएगा उसको अंतिम संस्कार के पहले अठारह पर्सेंट जीएसटी देना पड़ेगी यानी हर मुर्दे के लिए ये संदेश है कि वो अपने मरने के पहले घर वालों को साफ-साफ बता दे कि भैया विद्युत शवदाहगृह में जितना भी पैसा लगे उसमें 18 पर्सेंट जीएसटी जरूर जोड़ लेना वरना ऐसा ना हो के तुम लोग जीएसटी ना दो और शवदाह गृह के कर्मचारी हमें बाहर फेंक दें। बताया तो यह जाता है कि अंतिम संस्कार, दफन, शव के परिवहन में कोई जीएसटी नहीं लगती है लेकिन सतना नगर निगम ने तो मुर्दों पर भी जीएसटी लगा दी। नगर निगम का कहना है कि जब जिंदा रहते हर चीज पर इंसान जीएसटी दे रहा है तो अपने मरने पर जीएसटी देने में देने पर उसे एतराज नहीं होना चाहिए और फिर जीएसटी कोई उसकी जेब से तो जाना नहीं है वो तो दुनिया छोड़कर जा चुका है उसके पीछे उसके घर वालों को ही उसके अंतिम संस्कार के लिए पैसा खर्च करना है और जब पैसा खर्च करना ही है तो फिर 18 पर्सेंट जीएसटी देने में दिक्कत क्या है। मान गए अपन, लोग बाग कहते हैं की मुर्दे से कोई कोई कुछ वसूल नहीं कर सकता लेकिन अपने सतना नगर निगम ने इस मिथक को भी तोड़ दिया और मुर्दे से भी 18 पर्सेंट जीएसटी वसूलना शुरू कर दिया।

धंधे का टाइम आ गया

सुना है कि प्रदेश की सरकारी कर्मियों के तबादलों पर जो प्रतिबंध लगा हुआ था वो 15 अक्टूबर से खत्म होने वाला है और प्रदेश में तबादलों की बाढ़ आने वाली है। जब से ये खबर आई है तबसे तमाम नेताओं, मंत्रियों, अफसरों के चेहरे खुशी से लाल हो रहे हैं कि अब धंधे का टाइम आ गया है एक साल से धंधा मंदा पड़ा था लेकिन अब ऊपर वाले ने रास्ता खोल दिया है अब मंत्रियों के, बड़े अफसरों के, उनके खास लोगों के, दलालों के दरवाजों पर भीड़ लगेगी। किसको मलाईदार पोस्ट चाहिए, किसको कहां जाना है, ये यही लोग तय करेंगे दलाल भी सक्रिय हो चुके हैं अभी से उन्होंने अपने-अपने ग्राहक तय कर लिए हैं कई जगह तो एडवांस का लेनदेन भी शुरू हो गया है साल भर में एक ही मौका तो ऐसा आता है जब धंधा जम के चलता है देखना तो ये है कि मुख्यमंत्री डॉक्टर मोहन यादव भी इसी ढर्रे पर चलते हैं या फिर इस धंधे पर रोक लगाते हैं।

ताकि सबको भोजन मिल सके...

विवेक एस अग्रवाल

कहीं देखें तो भोजन की थाली भरी हुई है और समझ नहीं आता कि क्या खाएं, क्या न खाएं। वहीं कुछ ऐसे लोग भी मौजूद हैं, जो बस इस इंतजार में रहते हैं कि कहीं से थाली में क कुछ आ जाए। यह समस्या मात्र भारत की नहीं, अपितु संपूर्ण विश्व की है। लेकिन जो सक्षम हैं, उनके लिए यह न चिंता का विषय है, न ही कोई सुधार का। उनका मानना है कि गाज तो सिर्फ अक्षम पर गिरती है। लेकिन जो भोजन की बर्बादी कर रहे हैं, उन्हें यह एहसास भी नहीं है कि वे स्वयं अपने भविष्य को अंधकारमय बना रहे हैं। एक लंबा सफर गुजर गया, जब दुनिया के समस्त राष्ट्रों ने पर्यावरण, सामाजिक और आर्थिक समता एवं सामंजस्य वाले लक्ष्यों को पाने के घोषणापत्र पर हस्ताक्षर किए थे। उन संकल्पों को वर्ष 2030 तक प्राप्त करना है, लेकिन आज भी नियंत्रित एवं निर्मूल की जा सकने वाली खाद्य बर्बादी जैसे विषय पर प्रगति नगण्य है। वास्तविकता तो यह है कि एक तिहाई कार्बन उत्सर्जन के लिए दोषी खाद्य व्यवस्था नियंत्रित नहीं हो पा रही। तथ्य यह भी है कि खाद्यान्न बर्बादी एवं नुकसान पर नियंत्रण से सतत विकास लक्ष्य दो, आठ, बारह व तेरह एक साथ साधे जा सकते हैं।

आम तौर पर कार्बन उत्सर्जन के लिए गाड़ियों एवं परिवहन के अन्य साधनों को दोषी ठहराया जाता है, जो भौतिकतावादी युग में निरंतर बढ़ती जा रही हैं। लेकिन बिगड़ती हुई या यों कहें, छद्म गरिमा से विकृत हो रही भोजन व्यवस्था, जो तात्कालिक रूप से सुधारी जा सकती है, संपूर्ण परिदृश्य से बाहर है। इस विकृति के चलते और बढ़ते स्वरूप से संपूर्ण ब्रह्मांड को प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से खतरा पैदा हो रहा है। पश्चिमी एवं विकसित देशों में इस बावत चिंता ज्यादा गहरा रही है और खाद्यान्न के उत्पादन से लेकर उपभोग तक हर कदम पर बर्बादी को रोकने हेतु संगठित प्रयास किए जा रहे हैं। इन देशों में भोजन करने की पद्धति का विश्लेषण करते हुए ट्रे संस्कृति को हतोत्साहित करने एवं भोजन हेतु छोटी प्लेट के उपयोग को बढ़ावा दिया जा रहा है। इसी क्रम में विभिन्न प्रसंस्कृत एवं अन्य खाद्य सामग्री की पैकेजिंग के आकार और मात्रा को नियंत्रित करने के बाबत भी कदम उठाए जा रहे हैं।

भारत में खाद्यान्न एवं भोजन दान की परंपरा आदिकाल से रही है एवं सनातन धर्म में इसे पुण्य कमाने का सबसे उत्तम साधन माना गया है। किंतु भोजन दान की प्रक्रिया में यह भी आकलन नहीं हो पाता कि किस व्यक्ति या वर्ग की क्या आवश्यकताएं हैं। परिणामस्वरूप दान औचित्यहीन हो जाता है। इस परिदृश्य के दृष्टिगत आवश्यकता है कि नीतिगत स्तर पर मानक तय हों एवं दान हेतु भी सख्त नियम-कायदे बनें। सर्वप्रथम बर्बादी से बचाव हेतु दंडात्मक व्यवस्था की भी आवश्यकता है, ताकि जूठन छोड़ने का दुस्साहस भी नहीं हो। इसी तरह, खाद्य सामग्री निर्माता को भी निर्माण से विपणन, उपभोग और निस्तारण की संपूर्ण ट्रैकिंग व्यवस्था कायम करनी होगी।

हाल ही में ग्लोबल फूड बैंकिंग नेटवर्क द्वारा जारी रिपोर्ट में अधिकाधिक फूडबैंक स्थापित करने की महत्ता के बाबत प्राकट्य तथ्यों में उल्लेख किया है कि एक फूडबैंक की स्थापना से लगभग एक हजार कारों के समकक्ष कार्बन उत्सर्जन को रोकने में मदद मिल सकती है और इसका लाभ दस वर्षों तक लगाए 63 हजार पौधों के समकक्ष होगा।

भोजन दान की हमारी संस्कृति को तकनीकी आधारित फूडबैंक से जोड़कर उचित व्यक्ति पोषक भोजन पहुंचाने की आवश्यकता है। इस बाबत नीति निर्माण के माध्यम से स्वैच्छिक, सामाजिक संस्थाओं और दंड व्यवस्था को प्रोत्साहित करना समय की मांग है। सबको अपने मन में पुनः अन्न को भगवान रूप में स्थापित करना होगा, ताकि उसका निरादर न हो।

पर्वत से ओम गायब-हिमालय की खराब सेहत का संकेत

जयसिंह रावत

हिमालय के क्रायोस्फीयर में इस तरह तेजी से बर्फ का पिघलना सीधे-सीधे क्षेत्र के ग्लेशियर तंत्र को प्रभावित करना है। ग्लेशियरों का यही पीछे हटना वैश्विक स्तर पर सरकारों, आपदा प्रबंधकों, भूगर्व और ग्लेशियर वैज्ञानिकों तथा पर्यावरणविदों की चिन्ता का विषय बना हुआ है। हिमालय में ग्लेशियरों के पीछे हटने से जल संसाधन प्रभावित हो रहे हैं, जिससे नदियों का प्रवाह कम हो जाता है और कृषि प्रभावित होती है।

उत्तराखण्ड के सीमांत जिला पिथौरागढ़ स्थित विश्व विख्यात ओम पर्वत से जब जुलाई महीने के अंत में विशालकाय 'ओम' की आकृति लुप्त होने लगी तो सनातन धर्मावलम्बियों का विचलित होना स्वाभाविक ही था। यह दिव्य आकृति अगस्त के मध्य तक पूरी तरह गायब हो गयी। धर्मावलम्बी इसे दैवी प्रकोप और अनिष्ट का संकेत मानने लगे। लेकिन पर्यावरणविदों की असली चिन्ता तो जलवायु परिवर्तन के विनाशकारी प्रभावों को लेकर है जो ओम पर्वत पर साफ नजर आ रहे हैं।

यद्यपि बाद में पुनः हिमपात से 'ओम' की आकृति फिर प्रकट हो गयी, लेकिन पुनः बर्फ का दिखाई देना चिन्ता मुक्त होने के लिये काफी नहीं है। क्योंकि प्रकृति द्वारा बर्फ से उकेरी गयी 'ओम' आकृति हिमाच्छादित रहने वाले पहाड़ों से बर्फ पिघलने और ग्लेशियरों के सिकुड़ने की गति बढ़ने का संकेत दे ही गयी। इस पर्वत की ऊंचाई समुद्रतल से 5,590 मीटर है और हिमालय पर 5 हजार मीटर से ऊपर का क्षेत्र क्रायोस्फीयर में शामिल है जो स्थाई रूप से हिमाच्छादित रहता है। ओम पर्वत के साथ ही विख्यात नन्दादेवी और पंचाचूली जैसी चोटियां भी मध्य अगस्त में सफेद की जगह काली नजर आने लगी थीं।

हिमालय के क्रायोस्फीयर में इस तरह तेजी से बर्फ का पिघलना सीधे-सीधे क्षेत्र के ग्लेशियर तंत्र को प्रभावित करना है। ग्लेशियरों का यही पीछे हटना वैश्विक स्तर पर सरकारों, आपदा प्रबंधकों, भूगर्व और ग्लेशियर वैज्ञानिकों तथा पर्यावरणविदों की चिन्ता का विषय बना हुआ है। हिमालय में ग्लेशियरों के पीछे हटने से जल संसाधन प्रभावित हो रहे हैं, जिससे नदियों का प्रवाह कम हो जाता है और कृषि प्रभावित होती है।

इससे ग्लेशियल झीलों के फटने से विनाशकारी बाढ़ का खतरा भी बढ़ रहा है। इसके अलावा, यह क्षेत्रीय जलवायु परिवर्तन और जैव विविधता के नुकसान को भी बढ़ाता है। हिमालय पर हिमानी झीलों (ग्लेशियल लेक) की संख्या बढ़ने और उनके विस्तार के साथ ही उनके फटने का खतरा भी बढ़ रहा है।

ये 'ग्लेशियल लेक आउट ब्रस्ट' विनाशकारी होते हैं और इसीलिये इनकी तुलना विध्वंशकारी एटम बमों से की जाती है। जी.बी. पंत राष्ट्रीय हिमालयी पर्यावरण संस्थान के एक अध्ययन के अनुसार सन् 2013 से लेकर 2023 तक ग्लेशियल झीलों के फटने की 4 बड़ी घटनाऐं हो चुकी हैं जिनमें उत्तराखण्ड हिमालय में दो (2013 और 2021), लद्दाख में एक (2021) और सिक्किम में एक (2023) शामिल हैं।

टाइम मैग्जीन के मैन ऑफ द इयर रहे वाडिया हिमालयी भूविज्ञान संस्थान से ग्लेशियॉलॉजिस्ट डा0 डी.पी. डोभाल के अनुसार जलवायु परिवर्तन के इस दौर में हिमालय में

70 प्रतिशत से अधिक ग्लेशियर 5 वर्ग कि.मी. से कम क्षेत्रफल वाले हैं और ये छोटे ग्लेशियर ही तेजी से गायब हो रहे हैं।

राज्यसभा में जलवायु परिवर्तन राज्य मंत्री कीर्ति वर्धन सिंह द्वारा 25 जुलाइ 2024 को दी गयी जानकारी के अनुसार सरकार ग्लेशियल झीलों के खतरे से चिन्तित है और पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय, विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग, पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय आदि विभिन्न मंत्रालयों और विभागों के माध्यम से हिमालयी ग्लेशियरों पर निगरानी और समस्या समाधान के उपाय कराये जा रहे हैं।

ऊर्जा एवं संसाधन संस्थान (टेरी) के तत्कालीन अध्यक्ष डा0 आर.के. पचौरी की अध्यक्षता में संयुक्त राष्ट्र की इन्टर गवर्नमेण्टल पैनल की 2035 तक हिमालय के ग्लेशियर शून्य हो जाने की सनसनीखेज रिपोर्ट के बाद भारत सरकार के तत्कालीन प्रधान वैज्ञानिक सलाहकार आर. चिदम्बरम ने 11 अक्टूबर 2007 को आइआइटी मुम्बई के निदेशक आनन्द पटवर्धन की अध्यक्षता में एक अध्ययन दल का गठन किया था जिसमें भारत सरकार के वैज्ञानिक संस्थानों, दिल्ली आइटीआइ और डीआरडीओ के वैज्ञानिकों के साथ ही प्रख्यात पर्यावरणविद चण्डी प्रसाद भट्ट को भी शामिल किया गया था। इस अध्ययन दल ने हिमालय के अधिकांश ग्लेशियरों के पीछे हटने की पुष्टि करने के साथ ही सियाचिन जैसे कुछ गिने चुने ग्लेशियरों के आगे बढ़ने का खुलासा भी किया था।

यूनिवर्सिटी ऑफ पोट्सडम, जर्मनी के इंस्टीट्यूट ऑफ जियो साइंस तथा इंस्टीट्यूट आफ इनवायर्नमेंटल साइंस एण्ड जियॉलाजी के एक साझा अध्ययन में हिमालय पर मोरैन द्वारा रोकी गयी ग्लेशियल लेकों की संख्या 5 हजार से अधिक बतायी गयी और इनमें से कई सुप्रा टाइप की झीलों के फटने से 21वीं सदी में ही सिन्धु, गंगा और ब्रह्मपुत्र बेसिनों में विनाशकारी बाढ़ की आशंका जताई गयी।

द इंडियन सोसाइटी ऑफ रिमोट सेंसिंग के जर्नल में 2016 में प्रकाशित के. बाबू गोविन्धाराज और के. विनोद कुमार के शोधपत्र "इनवेंटरी ऑफ ग्लेशियल लेक्स एण्ड इट्स इवोल्यूशन इन उत्तराखण्ड हिमालया यूजिंग टाइम सीरीज सेटेलाइट डाटा" के अनुसार उत्तराखण्ड हिमालय में चिह्नित कुल 5 तरह की 362 ग्लेशियल झीलों में से 8 खतरनाक हैं जो कि विभिन्न कारणों से फट कर निचली घाटियों में तबाही मचा सकती हैं।

केंद्रीय जल शक्ति राज्य मंत्री राज भूषण चैधरी द्वारा गत 8 अगस्त 2024 को लोकसभा में एक प्रश्न के उत्तर में दी गयी जानकारी के अनुसार अक्टूबर 2023 में ग्लेशियल लेक आउटब्रस्ट के कारण तीस्ताजलविद्युत बांध ढहने के बाद केंद्रीय जल आयोग प्रतिवर्ष जून से लेकर अक्टूबर तक 902 ग्लेशियल झीलों और जल निकायों (477 ग्लेशियल झीलों और जल निकायों सहित, जिनका जल फैलाव क्षेत्र 50 हेक्टेयर से अधिक है और 425 ग्लेशियल झीलों जिनका आकार 10 हेक्टेयर से 50 हेक्टेयर है) की निगरानी करता है।

पद्मभूषण चण्डी प्रसाद भट्ट ग्लेशियरों के पीछे हटने के लिये ग्लोबल वार्मिंग से अधिक लोकल वार्मिंग को जिम्मेदार मानते हैं। भट्ट का कहना है कि आस्था के नाम पर हिमालयी मंदिरों में जो अपार भीड़ उमड़ रही है जिससे हिमालयी पारितंत्र प्रभावित हो रहा है। इस साल अब तक 4 लाख से अधिक वाहन और

33 लाख से अधिक यात्री उत्तराखण्ड के चार धामों तक पहुंच गये हैं जबकि अभी 3 और महीने यात्रा बाकी है। कुछ सालों पहले तक कम यात्री और वाहन बदरीनाथ-केदारनाथ पहुंचते थे। लाखों वाहनों का सीधे सतोपंथ और गंगोत्री जैसे पीछे खिसक रहे ग्लेशियरों के पास पहुंचने से कई गुना अधिक लोकल वार्मिंग बढ़ रहा है।

भट्ट इस गंभीर समस्या के समाधान के लिये हिमालय से संबंधित भारत, नेपाल, चीन, पाकिस्तान और भूटान का एक साझा प्राधिकरण बनाने का सुझाव देते हुये कहते हैं कि हिमालय संबंधी मुद्दों को अकेले या बिखरे प्रयासों की नहीं बल्कि समग्र और साझा प्रयासों की जरूरत है।

मोदी इस्लाम विरोधी, वक्फ बिल को खारिज करें भारत के मुसलमान

क्वालालंपुर

मलेशिया में रह रहे भगोड़े इस्लामिक उपदेशक जाकिर नाईक ने अब वक्फ विधेयक को लेकर भड़काऊ बयान जारी किया है। जाकिर नाईक ने एक वीडियो जारी करके मुस्लिमों से अपील की कि वे वक्फ संशोधन विधेयक को खारिज करें। साथ ही संसदीय समिति के पास मुस्लिम अपना विरोध दर्ज कराएं। जाकिर नाईक ने दावा किया कि इस संशोधन विधयेक के जरिए मोदी सरकार वक्फ बोर्ड की जमीन को लेना चाहती है। वक्फ बोर्ड के पास भारत में तीसरी सबसे ज्यादा जमीन है। उसने कहा कि वक्फ एक प्राइवेट प्रॉपर्टी है न कि सार्वजनिक जमीन। यह सार्वजनिक जमीन नहीं है, इसलिए गैर मुस्लिम इसको ले नहीं सकते हैं। जाकिर ने कहा कि मोदी सरकार मुस्लिम और इस्लाम विरोधी है और इस जमीन को लेना चाहती है।

जाकिर नाईक ने कहा कि भारत के मुस्लिम इस वक्फ संशोधन बिल का विरोध करें। उसने कहा कि यह बिल संयुक्त संसदीय समिति के पास भेजी गई है। अगर केवल 50 लाख मुस्लिम इसका संसदीय समिति में विरोध कर दें तो यह रुक सकताा है। वह भी तब जब भारत में 21 करोड़ मुसलमान हैं। जाकिर नाईक ने कहा कि 50 लाख मुस्लिम केवल अगर विरोध कर दें तो यह बिल रुक सकता है। उसने कहा कि अगर भारतीय मुस्लिम एक्टिव नहीं हुए तो आने वाली पीढ़ियां हमारे ऊपर आरोप लगाएंगी। यह मुस्लिम उम्मा के लिए लाभदायक होगा। जाकिर नाईक ने दावा किया कि भारत के सबसे अमीर इंसान मुकेश अंबानी का दुनिया का सबसे महंगा घर एंटीलिया भी वक्फ की जमीन पर बना है।

जाकिर नाईक ने आरोप लगाया कि कोर्ट में मामला चला है जिसमें अंबानी को जीत मिली है लेकिन यह वक्फ की जमीन है। उसने कहा कि वक्फ की जमीन हमारी है और भारत के इमाम इसे जुम्मे के दिन उठाएंगे। उसने कहा कि अगर हम ऐसा नहीं करेंगे तो अल्लाह का कहर हम पर टूटेगा। हम इस वक्फ संसोधन बिल को पारित नहीं होने देंगे। जाकिर नाईक ने दावा किया कि शरद पवार ने वादा किया था कि हम इस वक्फ संपत्ति बिल को पारित नहीं देंगे। उसने कहा कि सभी भारतीय मुस्लिम एकजुट हों और आने वाली पीढ़ियों के लिए इसे बचाएं।

विवादित इस्लामिक उपदेशक ने कहा कि अगर हम ऐसा करने में असफल रहे तो हम इसके लिए जिम्मेदार माने जाएंगे। बता दें कि भारत में वांछित जाकिर नाईक कई साल से भारत से भागता फिर रहा है। वह इस समय मलेशिया में रह रहा है लेकिन कतर से लेकर कई इस्लामिक देशों की यात्रा करके लोगों को भड़काता रहता है। भारत सरकार ने मलेशिया की सरकार से मांग की है कि वह जाकिर नाईक को उसे सौंप दे लेकिन वहां की सरकार विवादित इस्लामिक उपदेशक को शरण दे रही है। मलेशिया के प्रधानमंत्री हाल ही में भारत आए थे और उन्होंने सबूत मांग लिया था।

दक्षिण यमन में पहाड़ी सड़क से बस गिरी, 15 की मौत

अदन, यमन, (वार्ता) यमन के दक्षिणी प्रांत लाहज में रविवार को एक यात्री बस के पहाड़ी सड़क से गिर जाने से कम से कम 15 लोगों की मौत हो गई और तीन अन्य घायल हो गए। एक सुरक्षा अधिकारी ने यह जानकारी दी। नाम न छापने की शर्त पर अधिकारी ने बताया कि यह दुर्घटना अदन और ताइज़ प्रांतों को जोड़ने वाली एक खतरनाक सड़क पर मकात्रा जिले में हुई। उन्होंने बताया कि ब्रेक फेल होने के कारण चालक के नियंत्रण खोने के बाद बस एक खड़ी ढलान से नीचे चट्टानी घाटी में जा गिरी। अधिकारी ने पुष्टि की कि मरने वालों में महिलाएं और बच्चे भी शामिल हैं। प्रत्यक्षदर्शियों ने दुर्घटना को भयानक बताया और कहा कि टक्कर इतनी गंभीर थी कि कुछ पीड़ित वाहन से छिटक गए। अपने खरनाक पहाड़ी रास्तों के लिए मशहूर मकात्रा में हाल के वर्षों में कई दुर्घटनाएं देखी गई हैं। स्थानीय पर्यवेक्षकों ने कहा कि यह घटना यमन के नागरिक सुरक्षा और बुनियादी ढांचे पर एक दशक लंबे गृह युद्ध के व्यापक प्रभाव को उजागर करती है। मुख्य अंतरप्रांतीय सड़कों को अक्सर युद्धरत गुटों द्वारा अवरुद्ध कर दिए जाने के कारण, नागरिकों को खतरनाक पहाड़ी दर्रों सहित खतरनाक वैकल्पिक मार्गों का उपयोग करने के लिए मजबूर किया जाता है।

चंद्रयान-3 ने रेकॉर्ड किए 250 झटके चांद पर भूकंप बना वैज्ञानिकों के लिए रहस्य

वाशिंगटन

भारत के चंद्रयान-3 मिशन को एक साल से भी ज्यादा हो चुके हैं। इस मिशन के जरिए भारत चांद पर जाने वाला चौथा देश बन गया था। लेकिन एक साल बाद भी इसे लेकर नई-नई जानकारियां सामने आती रहती हैं। रिपोर्ट के मुताबिक चंद्रमा पर उतरने के बाद चंद्रयान-3 ने भूकंप के झटकों को रेकॉर्ड किया था।

चंद्रयान-3 मिशन के जरिए भारत चांद पर पहुंचा था। भारत विक्रम लैंडर के जरिए चांद पर उतरा था। इसमें कई उपकरण लगे थे, जिनसे मिले डेटा ने मिशन को लेकर अभी भी दिलचस्पी बरकरार रखी है। लैंडर ने तापमान और भूकंप का डेटा इकट्ठा किया था। चंद्रयान ने चांद पर भूकंप के झटके महसूस किए थे।

विक्रम लैंडर पर चंद्र भूकंपीय गतिविधि उपकरण (ड्डस्र्) लगा था। इसने 24 अगस्त से 4 सितंबर 2023 तक परिचालन अवधि के दौरान 250 भूकंपीय संकेतों का पता लगाया। भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (ड्डस्त्रह्) ने 2023 में कहा था कि चंद्रयान 3 लैंडर पर ड्डस्र् पेलोड लगा है। यह चंद्रमा पर पहला माइक्रो इलेक्ट्रो मैकेनिकल सिस्टम है। इसने रोवर और अन्य पेलोड की गतिविधियों को रिकॉर्ड किया है।

250 संकेतों में से लगभग 200 को मिशन गतिविधियों के लिए

जिम्मेदार ठहराया गया था। जैसे कि प्रज्ञान रोवर की गतिविधियां या अल्फा पार्टिकल एक्स-रे स्पेक्ट्रोमीटर और ष्टद्धड्डस्ञ्जश्च थर्मल उपकरण।बचे हुए 50 झटके ऐसे जो मिशन से जुड़ी किसी भी गतिविधि से नहीं हुआ है। इससे इस बात की संभावना बढ़ गई है यह संभवत: चंद्रमा के भूकंप हो सकते हैं। ये अस्पष्टीकृत संकेत अपनी प्रकृति में महतवपूर्ण थे। इसमें छोटे से लेकर बड़े झटके तक लगे थे। इन झटकों की फ्रीक्वेंसी 1 1 हर्ट्ज से 50 हर्ट्ज पहुंची। कुछ मामलों में यह 94 हर्ट्ज तक गई।

इन रहस्यमय भूकंपी घटनाओं को समझने के लिए कई तरह के सिद्धांत दिए गए हैं। एक थ्योरी के मुताबिक चंद्रमा की सतह पर गिरने वाले छोटे उल्कापिंडों से होने वाला कंपन इसका कारण हो सकता है। पेट से जुड़ी हर समस्या जैसे कब्ज़, गैस की समस्या, खट्टी डकार , एसिडिटी, आदि का शर्तिया इलाज नहीं तो पूरे पैसे वापस!! एक अन्य परिकल्पना के मुताबिक इसका कारण चंद्रमा की सतह का उतार-चढ़ाव हो सकता है। चंद्रमा पर कभी बहुत गर्म तो कभी बहुत ठंड होती है। एक्सपर्ट्स का मानना है कि मिट्टी के विस्तार या सिकुड़ने के कारण यह हो सकता है।

यूपी में अपराधी को संरक्षण और निर्दोष को प्रताड़नाः प्रियंका

रायबरेली (वार्ता)

कांग्रेस महासचिव प्रियंका गांधी वाड्रा ने कहा कि उत्तर प्रदेश में अपराधी को संरक्षण और निर्दोष को प्रताड़ना मिल रही है। श्रीमती वाड्रा ने रविवार देर शाम फेसबुक पर एक पोस्ट के जरिये लुटेरों की जगह निर्दोष को ही गैरकानूनी तरीके से फंसाने का आरोप लगाते हुये रायबरेली पुलिस को लताड़ लगाई है। उन्होने एक खबर का हवाला देते हुये आरोप लगाया कि पिछले दिनों एक जनसुविधा केंद्र के संचालक रवि चौरसिया के साथ आठ लाख रुपये की लूट हुई थी जिसके रुपये से भरे बैग को बदमाशों ने छीन लिया था लेकिन किन्ही कारणों से लुटेरे उस बैग को रास्ते मे छोड़ कर भाग निकले। रास्ते मे पड़ा बैग दीपू नामक व्यक्ति को मिला। बकौल दीपू वह आरओ का पानी लाने अपने कुछ साथियों के साथ उस रास्ते से गुज़र रहा था तभी उसकी निगाह उस बैग पर गयी। जिसको उसने उठा लिया और उसे संबंधित थाने में जमा करने अपने साथियों के साथ ही चला गया। थाने पर पहुंचने पर पुलिस ने दीपू को जबरन बैठा लिया। जिससे व्यापारियों में असंतोष फैल गया। विरोध को देखते हुए दूसरे थाने को जांच सौंपी जिसमे दीपू निर्दोष पाया गया। दीपू ने तो अच्छे नागरिक का फर्ज निभाया लेकिन बदले में पुलिस की प्रताड़ना मिली।

गौरतलब है कि हाल ही में नसीराबाद इलाके में दलित हत्याकांड में नेता प्रतिपक्ष और रायबरेली सांसद राहुल गांधी ने पुलिस व्यवस्था पर कड़ा प्रहार किया था मुख्यमंत्री योगी को चिट्ठी लिखी थी, जिसके बाद पुलिस अधीक्षक अभिषेक अग्रवाल ने नसीराबाद के थानाध्यक्ष को निलंबित कर दिया था।

यूपी ने किया विकास और निवेश के नए युग में प्रवेशः योगी

लखनऊ, (वार्ता) मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने सोमवार को कहा कि पिछले साढ़े सात वर्ष में उत्तर प्रदेश ने देश-दुनिया के निवेशकों का विश्वास अर्जित किया है और यह राज्य विकास और निवेश के एक नये युग में प्रवेश कर चुका है। नोएडा में स्थापित हो रहे आइकिया स्टोर का वर्चुअल माध्यम से शिलान्यास करने के मौके पर उन्होने आइकिया इंडिया द्वारा उत्तर प्रदेश में 5500 करोड़ रुपये के निवेश प्रस्ताव पर धन्यवाद ज्ञापित किया। उन्होने कहा कि उत्तर प्रदेश भारत के अंदर अब निवेश का स्वप्निल गंतव्य बन गया है। इंग्का सेंटर्स की इस नई परियोजना में आइकिया रिटेल स्टोर, होटल, ऑफिस स्पेस और शॉपिंग सेंटर खोला जाएगा। इसके माध्यम से 9 हजार से अधिक युवाओं को रोजगार प्राप्त होगा।

सुलतानपुर की घटना पर बेवजह की राजनीति : मायावती

लखनऊ (वार्ता)

बहुजन समाज पार्टी (बसपा) सुप्रीमो मायावती ने सोमवार को कहा कि सुलतानपुर में एनकाउंटर की घटना को लेकर समाजवादी पार्टी (सपा) और भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के बीच अपराध,अपराधी और जाति के नाम पर बेवजह की राजनीति की जा रही है।

उन्होने कहा कि कानून व्यवस्था के मामले में भाजपा की तरह सपा राज में भी दयनीय हालत थी। सच तो यह है कि दोनो ही दल सुलतानपुर मामले में आरोप प्रत्यारोप कर चोर चोर मौसेरे भाई की कहावत को चरितार्थ कर रहे हैं।

उन्होने एक्स पर पोस्ट किया यूपी के सुलतानपुर जिले में एनकाउन्टर की घटना के बाद से बीजेपी व सपा में कानून-व्यवस्था को लेकर आरोप-प्रत्यारोप लगाये जा रहे हैं तथा अपराध, अपराधी व जाति के नाम पर जबरदस्ती की राजनीति की जा रही है, जबकि इस मामले में ये दोनों चोर-चोर मौसेरे भाई जैसे हैं।

बसपा अध्यक्ष ने कहा बीजेपी की तरह सपा सरकार में भी तो कई गुणा ज्यादा कानून-व्यवस्था का बुरा हाल था। दलितों, अन्य पिछड़े वर्गों, गरीबों व व्यापारियों आदि को सपा के गुण्डे, माफिया दिन-दहाड़े लूटते व मारते-पीटते थे, ये सब लोग भूले नहीं हैं। जबकि उत्तर प्रदेश में वास्तव में ''क़ानून द्वारा क़ानून का राज'', बी.एस.पी. के शासन में ही रहा है।

उन्होने कहा जाति व धर्म के भेदभाव के बिना लोगों को न्याय दिया गया। कोई फर्जी एनकाउन्टर आदि भी नहीं हुये। अत: बीजेपी व सपा के कानूनी राज के नाटक से सभी सजग रहें।

बस्तर में बाढ़, बारिश से जनजीवन अस्त-व्यस्त

जगदलपुर, (वार्ता) छत्तीसगढ़ के बस्तर संभाग में रविवार से हो रही मुसलाधार वर्षा से जन-जीवन अस्त-व्यस्त है। इंद्रावती, गोदावरी, संकनी-डंकनी, शबरी नदी का जलस्तर उफान पर है। तेलंगाना-ओड़िशा मार्ग अवरूद्ध है जिसके चलते इस इलाके में सैकड़ों वाहन फंसी हुई हैं। वहीं एक गांव के बीस घर बाढ़ के पानी में डूब गए हैं। अधिकारिक जानकारी के अनुसार बीजापुर-जगदलपुर मार्ग पर कई जगह पुल के उपर से पानी बह रहा है, जिसके कारण संभाग का संपर्क बीजापुर जिला मुख्यालय से टूट चुका है। अपात स्थिति से निपटने के लिए पूरी व्यवस्था है। अंदरूनी इलाकों में सतत निगरानी रखी जा रही है। नदी-नालों का जलस्तर तेजी से बढ़ रहा है, चेरपाल नदी का जलस्तर बढ़ जाने से चेरपाल गंगालूर समेत दर्जनों गांव का संपर्क जिला मुख्यालय से टूट गया है।

सीरियाई सैन्य ठिकानों पर इजरायली हवाई हमले में चार की मौत

दमिश्क, (वार्ता)

इजरायल द्वारा सीरिया के मध्य क्षेत्र में कई सैन्य प्रतिष्ठानों पर हवाई हमले किए जाने के बाद रविवार देर रात कम से कम चार लोग मारे गए और 15 अन्य घायल हो गए। सीरियाई रक्षा मंत्रालय और चिकित्सा अधिकारियों ने यह जानकारी दी। मंत्रालय के अनुसार यह हमला रात करीब 11¬23 बजे हुआ और इसे उत्तरी लेबनान की दिशा से किया गया। हमले में मध्य प्रांत हमा में प्रमुख सैन्य स्थलों को निशाना बनाया गया। एक बयान में मंत्रालय ने पुष्टि की कि हवाई हमले में तीन लोगों की मौत हो गई, साथ ही भौतिक नुकसान की भी सूचना है। सीरियाई हवाई सुरक्षा सक्रिय हो गई और आने वाली कुछ इजरायली मिसाइलों को रोकने में कामयाब रही, हालांकि कई ने अभी भी अपने इच्छित लक्ष्यों पर हमला किया। बाद में दिन में हमा के स्वास्थ्य निदेशक डॉ. माहेर यूनुस ने अद्यतन किया कि हमले में प्रारंभिक संख्या के रूप में चार लोग मारे गए और 15 अन्य घायल हो गए।

सीएम थक चुके हैं, राज्य को संभालने में असमर्थ हैं' : तेजस्वी

पटना

पटना में अज्ञात अपराधियों द्वारा भाजपा नेता मुन्ना शर्मा की गोली मारकर हत्या किए जाने के बाद, राजद नेता और हार के पूर्व उपमुख्यमंत्री तेजस्वी यादव ने सोमवार को राज्य सरकार पर कटाक्ष करते हुए कहा कि उनके संरक्षण में बिहार में अपराध पनप रहे हैं। पूर्व उपमुख्यमंत्री यादव ने राज्य के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार पर निशाना साधते हुए उन्हें व्यस्त और थका हुआ कहा और उन पर राज्य को संभालने में असमर्थ होने का आरोप लगाया। यादव ने आगे आरोप लगाया कि अपराधी जब चाहें और जहां चाहें किसी को भी गोली मार रहे हैं और एनडीए नेताओं को राज्य में बढ़ते अपराध की जानकारी नहीं है। एक्स पर एक पोस्ट में तेजस्वी यादव ने एक वीडियो शेयर करते हुए लिखा, बिहार में सरकार के संरक्षण में अपराध पनप रहे हैं। अपराधी जब चाहें और जहां चाहें किसी को भी गोली मार कर भाग जा रहे हैं। वीडियो में अपराधी भाजपा नेता को गोली मार कर भाग रहे हैं। ट्वीट में कहा गया है,एनडीए नेताओं को बढ़ते अपराध की जानकारी नहीं है। व्यस्त और थके

हुए सीएम से बिहार का प्रबंधन बिल्कुल नहीं हो रहा है, जो इधर-उधर व्यस्त रहते हैं।

सोमवार की सुबह पटना में चेन-स्नेचिंग की कोशिश का विरोध करने पर भारतीय जनता पार्टी के नेता मुन्ना शर्मा की अज्ञात अपराधियों ने गोली मारकर हत्या कर दी। शर्मा, जो भाजपा के पूर्व मंडल अध्यक्ष थे, को गोली लगने की घटना में घायल होने के बाद अस्पताल ले जाया गया, लेकिन इलाज के दौरान उनकी मौत हो गई। पटना पुलिस के मुताबिक, अपराधियों ने सोमवार की सुबह पटना सिटी के एक रेस्टोरेंट के पास शर्मा को गोली मारी। उन्हें घटना की जानकारी आज सुबह करीब 6.15 बजे मिली। पटना पुलिस ने बताया कि उनके परिवार के लोग उन्हें अस्पताल ले गए, जहां इलाज के दौरान उनकी मौत हो गई।

पुलिस अधिकारी के मुताबिक, गोलीबारी की घटना के आसपास के सीसीटीवी फुटेज की जांच की जा रही है और आरोपियों की गिरफ्तारी के लिए जांच जारी है। चौक थाने के एसएचओ शशि कुमार राणा ने बताया, सुबह करीब 6.15 बजे सूचना मिली कि मुन्ना शर्मा नामक व्यक्ति को अपराधियों ने रेस्टोरेंट के पास घायल कर दिया है। परिजनों ने उसे अस्पताल पहुंचाया, जहां इलाज के दौरान उसकी मौत हो गई। घटनास्थल के आसपास लगे सीसीटीवी फुटेज की जांच की जा रही है और अन्य तकनीकी जांच की जा रही है। आगे की कार्रवाई की जा रही है। पटना सिटी-2 के डीएसपी गौरव शर्मा ने बताया, एफएसएल टीम ने घटनास्थल से साक्ष्य जुटाए हैं। पुलिस की विशेष टीम सीसीटीवी फुटेज की जांच कर रही है। हम घटना के पीछे के कारणों का पता लगाने की कोशिश कर रहे हैं। डायल 100 टीम भी जांच में जुटी है। मुन्ना शर्मा के परिजनों ने बताया कि उसके गले में पहनी हुई चेन अभी भी है। एक संदिग्ध की पहचान कर ली गई है।

फिल्म/टीवी मनोरंजन

57 वर्ष के हुये अक्षय कुमार

बॉलीवुड के जाने-माने अभिनेता अक्षय कुमार आज 57 वर्ष के हो गये। अक्षय कुमार (मूल नाम राजीव भाटिया) का जन्म 09 सितंबर 1967 को पंजाब के अमृतसर में एक मध्यम वर्गीय पंजाबी परिवार में हुआ था। उनका बचपन दिल्ली में बीता। पढ़ाई पूरी करने के बाद अक्षय बैंकाक चले गये और वहां बावर्ची का काम करने लगे। इस दौरान वह वहां मार्शल आर्ट सीखा करते थे। बैंकाक से लौटने के बाद अक्षय कुमार मुंबई आ गए और मार्शल आर्ट ट्रेनर का काम करने लगे। इसी दौरान अक्षय की मुलाकात फिल्मकार प्रमोद चक्रवर्ती से हुई। प्रमोद चकवर्ती ने उनसे अपनी फिल्म दीदार में काम करने की पेशकश की। इससे पहले हालांकि उनकी फिल्म सौगंध प्रदर्शित हो गयी। इस बीच निर्देशक अब्बास मस्तान की नजर अक्षय कुमार पर पड़ी। उन्होंने उनसे अपनी फिल्म खिलाड़ी में काम करने का प्रस्ताव किया। वर्ष 1992 में प्रदर्शित रहस्य और रोमांच से भरी यह फिल्म टिकट खिड़की पर सुपरहिट साबित हुयी और वह काफी हद तक इंडस्ट्री में पहचान बनाने में कामयाब हो गये। फिल्म खिलाड़ी की सफलता के बाद अक्षय फिल्म इंडस्ट्री में अपनी पहचान बनाने में कामयाब हो गये। खिलाड़ी के बाद अक्षय कुमार फिल्म इंडस्ट्री में खिलाड़ी कुमार के नाम से मशहूर हो गये। इसके बाद फिल्मकारों ने उन्हें लेकर खिलाड़ी टाइटल वाली कई फिल्मों का निर्माण किया। इनमें मै खिलाड़ी तू अनाड़ी, सबसे बडा खिलाड़ी, खिलाड़ियों का खिलाड़ी, मिस्टर एंड मिसेज खिलाड़ी, इंटरनेशनल खिलाड़ी, खिलाड़ी 420 आदि है।

वर्ष 1994 अक्षय कुमार के सिने कैरियर के लिये अहम वर्ष साबित हुआ। इसी वर्ष उनकी ये दिल्लगी, मोहरा, सुहाग, एलान और मैं खिलाड़ी तू अनाड़ी जैसी सुपरहिट फिल्में प्रदर्शित हुयी। फिल्म ये दिल्लगी में उन्हें निर्माता निर्देशक यश चोपड़ा के साथ पहली बार काम करने का अवसर मिला। इस फिल्म में अपने दमदार अभिनय के लिये वह पहली बार सर्वश्रेष्ठ अभिनेता के फिल्म फेयर पुरस्कार से नामांकित भी किये गये। वर्ष 1994 में ही प्रदर्शित फिल्म मोहरा सिने करियर की सर्वाधिक सुपरहिट फिल्म साबित हुयी। वर्ष 1994 में ही अक्षय कुमार की फिल्म मैं खिलाड़ी तू अनाड़ी भी प्रदर्शित हुयी। इस फिल्म में उन्होंने सैफ अली खान के साथ मिलकर दर्शकों का भरपूर मनोरंजन किया। इस फिल्म में उन पर फिल्माया गीत मैं खिलाड़ी तू अनाड़ी दर्शको के बीच काफी लोकप्रिय हुआ। इन फिल्मों की सफलता के अक्षय कुमार फिल्म इंडस्ट्री में स्थापित हो गये।वर्ष 1997 में प्रदर्शित फिल्म दिल तो पागल है अक्षय कुमार की सुपरहिट फिल्म में शुमार की जाती है। इस फिल्म में उन्हें एक बार फिर से निर्माता, निर्देशक यश चोपड़ा के साथ काम करने का अवसर मिला। इसमें उनके सामने शाहरूख खान थे, इसके बावजूद अक्षय कुमार छोटी सी भूमिका के जरिये दर्शकों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित करने में सफल रहे। फिल्म में दमदार अभिनय के लिये वह सर्वश्रेष्ठ सहायक अभिनेता के फिल्म फेयर पुरस्कार के लिये नामांकित भी किये गये।

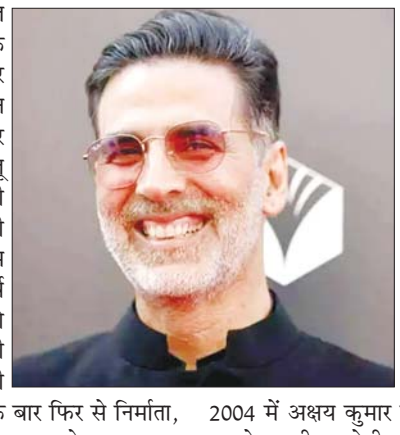

वर्ष 2000 में प्रदर्शित फिल्म हेराफेरी अक्षय कुमार की महत्वपूर्ण फिल्म में शुमार की जाती है। प्रियदर्शन निर्देशित इस फिल्म से पहले लोगो की धारणा थी कि अक्षय कुमार केवल मारधाड से परिपूर्ण अभिनय ही कर सकते हैं, लेकिन इस अक्षय कुमार ने फिल्म में परेश रावल और सुनील शेट्टी के साथ मिलकर उन्होंने अपने कारनामों से दर्शको को हंसाते-हंसाते लोटपोट कर दिया। फिल्म की सफलता को देखते हुये 2006 में इसका सीक्वल फिर हेराफेरी बनाया गया। वर्ष 2001 में अक्षय ने अभिनेत्री टिंवकल खन्ना से शादी कर ली। वर्ष 2001 में अक्षय कुमार को निर्माता-निर्देशक अब्बास मस्तान के साथ एक बार फिर से फिल्म अजनबी में काम करने का अवसर मिला। फिल्म में उनका यह किरदार ग्रे शेडस लिये हुये था। इसके बावजूद वह दर्शकों का दिल जीतने में सफल रहे। इस फिल्म के लिये वह सर्वश्रेष्ठ खलनायक के फिल्म फेयर पुरस्कार से सम्मानित भी किये गये। वर्ष 2004 में अक्षय कुमार की एक और सुपरहिट फिल्म मुझसे शादी करोगी प्रदर्शित हुयी। डेविड धवन निर्देशित इस फिल्म में प्रियंका चोपड़ा और सलमान खान ने मुख्य भूमिका निभाई थी। हास्य से भरपूर इस फिल्म में वह सर्वश्रेष्ठ हास्य कलाकार और सर्वश्रेष्ठ सहायक अभिनेता के फिल्म फेयर पुरस्कार से नामांकित किये गये। वर्ष 2007 अक्षय कुमार के सिने कैरियर के लिये सर्वाधिक महत्वपूर्ण वर्ष साबित हुआ। इस वर्ष उनकी नमस्ते लंदन, हे बेबी, वेलकम और भुलभुलैया जैसी सुपरहिट फिल्में प्रदर्शित हुयी। इन फिल्मों में अक्षय कुमार के अभिनय के विविध रूप देखने को मिले।फिल्म नमस्ते लंदन के लिये वह सर्वश्रेष्ठ अभिनेता के फिल्म फेयर पुरस्कार से नामांकित किये गये।वर्ष 2008 में प्रदर्शित फिल्म सिंह इज किंग अक्षय कुमार की सर्वाधिक सुपरहिट फिल्म साबित हुयी।रोमांटिक कॉमेडी पर आधारित फिल्म सिंह इज किंग में अक्षय कुमार ने एक भोले भाले और हंसमुख सिख का किरदार निभाया और अपनी लाजवाब अदाकारी से न सिफ दर्शको का दिल जीता बल्कि वर्ष 2008 की सबसे अधिक सफल फिल्म में भी इसका नाम दर्ज करा दिया और दर्शकों के बीच अपने को फिर से किंग साबित कर दिया। अक्षय कुमार की जोड़ी सुनील शेट्टी के साथ काफी पसंद की गयी। वही अभिनेत्रियों में अक्षय कुमार की जोड़ी अभिनेत्री रवीना टंडन और कैटरीना कैफ के साथ काफी पसंद की गयी। अक्षय कुमार ने अभिनय के साथ ही जोकर, ओ माई गाड, पटियाला हाउस, खिलाड़ी 786 और द बॉस, जैसी कुछ फिल्मों का निर्माण भी किया है। अक्षय कंमार की वर्ष 2015 में बेबी, गब्बर इज बैक, ब्रदर्स और सिंह इज ब्लिंग जैसी हिट फिल्म प्रदर्शित हुयी है। वर्ष 2016 अक्षय कुमार के सिने करियर का महत्वपूर्ण वर्ष साबित हुआ है। इस वर्ष अक्षय की एयरलिफ्ट, हाउसफुल 3 और रूसतम प्रदर्शित हुयी है। तीनों फिल्मों ने बॉक्स ऑफिस पर 100 करोड़ से अधिक की कमाई की है। वर्ष 2017 में अक्षय की फिल्म जॉली एलएल बी 2 और टॉयलेट एक प्रेमकथा प्रदर्शित हुयी और दोनो ही फिल्में हिट साबित हुयी। वर्ष 2018 में अक्षय की पैडमैन, गोल्ड और 2.0 जैसी हिट फिल्में प्रदर्शित हुयी। 2.0 में अक्षय ने रजनीकांत के साथ काम किया। फिल्म में अक्षय कुमार नेगेटिव किरदार में नजर आये। इसके बाद अक्षय ने केसरी, मिशनमंगल, गुड न्यूज, हाउसफुल 4 लक्ष्मी,सम्राट पृथ्वीराज, सूयर्वशी,बच्चन पांडेय, कठपुतली,अतरंगी रे, राम सेतु रक्षाबंधन, सेल्फी,ओ माई गाड 2,मिशन रानीगंज,बड़े मियां छोटे मियां, सरफिरा, खेल खेल में जैसी फिल्मों में काम किया। अक्षय कुमार की आने वाली फिल्मों में स्काइफोर्स, वेलकम टू द जंगल, जॉली एलएलबी 3 और हेराफेरी 3 समेत कई फिल्में शामिल है।

जवान के प्रदर्शन के एक साल पूरे होने पर नयनतारा ने मनाया जश्न

दक्षिण भारतीय फिल्मों की जानीमानी अभिनेत्री नयनतारा ने ब्लॉकबस्टर फिल्म जवान के प्रदर्शन के एक साल पूरे होने पर जश्न मनाया है। एटली के निर्देशन में बनी फिल्म जवान के प्रदर्शन के एक साल पूरे हो गये हैं। फिल्म जवान में शाहरूख खान के साथ नयनतारा मुख्य भूमिका में नजर आयी थी।नयनतारा ने जवान की पहली सालगिरह का जश्न खास अंदाज में मनाया है। नयनतारा ने अपने इंस्टाग्राम स्टोरी पर फिल्म जवान के चलेया गाने की एक तस्वीर साझा की है। इस फोटो में नयनतारा रोमांटिक पोज में शाहरूख खान के साथ नजर आ रही हैं। इसके साथ ही उन्होंने कैप्शन में लिखा, जवान के एक साल पूरे। फिल्म जवान में शाहरूख खान और नयनतारा के अलावा दीपिका पादुकोण , विजय सेतुपति, प्रियामणि, सान्या मल्होत्रा, रिधि डोगरा और सुनील ग्रोवर भी नजर आए थे। फिल्म जवान ने दुनिया भर में 1,148.32 करोड़ रुपये की शानदार कमाई की थी। भारत में, जवान ने 600 करोड़ का आंकड़ा पार करने वाली पहली हिंदी फिल्म बनकर इतिहास रच दिया था।

लाड़ली बहनों के खातों में राशि अंतरित

नरसिंहपुर

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव की अध्यक्षता में सागर जिले के कृषि उपज मंडी बीना में आयोजित राज्य स्तरीय कार्यक्रम में मुख्यमंत्री लाड़ली बहना योजना कार्यक्रम में सिंगल क्लिक के माध्यम से लाड़ली बहना योजना के हितग्राहियों और सामाजिक सुरक्षा पेंशन के लाभार्थियों को राशि अंतरित की। उन्होंने प्रदेश की 1.29 करोड़ लाड़ली बहनों के बैंक खातों में 1574 करोड़ रुपये और 55 लाख सामाजिक सुरक्षा पेंशन के लाभार्थियों को 332.43 करोड़ रुपये की राशि अंतरित की।मुख्यमंत्री लाड़ली बहना योजनांतर्गत नरसिंहपुर जिले में पात्र 2 लाख 13 हजार 392 महिलाओं के बैंक खातों में कुल 25 करोड़ 91 लाख 31 हजार 400 रुपये की राशि का अंतरण किया। राज्य स्तरीय कार्यक्रम को जिला स्तर, विकासखंड स्तर और ग्राम स्तर पर देखा व सुना गया। स्थानीय एनआईसी कक्ष नरसिंहपुर में महिला एवं बाल विकास अधिकारी श्रीमती मोहिनी जाधव, जिला कार्यक्रम अधिकारी श्री राधेश्याम वर्मा और लाड़ली बहनें मौजूद थी।

भोपाल के शैक्षणिक संस्थाओं में ज़िले की तीन छात्राओं का चयन

नरसिंहपुर। राज्य शासकीय आकांक्षा जनजाति योजना के अंतर्गत जिले के दूरस्थ आदिवासी वनांचल के अंतिम छोर में स्थित शासकीय हाई स्कूल माल्हनवाड़ा-इक. के तीन छात्राओं का चयन भोपाल के शैक्षणिक संस्थाओं में कक्षा 11 वीं में निःशुल्क किया गया है। इन विद्यार्थियों को जेईई व नीट की प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी करवाई जायेगी। जिन विद्यार्थियों का चयन भोपाल के शैक्षणिक संस्थाओं में हुआ है, उनमें रागनी कुमरे, निर्मला ठाकुर व जानकी ठाकुर शामिल हैं। इनकी इस सफलता पर ग्रामवासियों ने खुशी जाहिर की है। संस्था के प्रचार्य श्री चंदन कुमार शर्मा, श्री राकेश कुमार शर्मा, लक्ष्मी प्रसाद साहू, सुदामा प्रसाद वर्मा, पवन कुमार स्थापक, प्रमोद राय, शैलेंद्र कचेरा, श्रीमती रेखा कौरव, कु. माया कौरव, श्री एनपी साहू ने शुभकामनायें दी हैं।

वनांचल क्षेत्र की छात्राओं ने किया नाम रोशन

गाडरवारा (स्वतंत्र मत)। क्षेत्र के चीचली ब्लॉक अंतर्गत दूरस्थ आदिवासी वनांचल अंतिम छोर मे स्थित ग्राम माल्हनवा?ा (इक्लोनी) के शासकीय हाई स्कूल की छात्रा रागनी कुमरे/ रामदीन कुमरे, निर्मिला ठाकुर/उमेश ठाकुर, जानकी ठाकुर / कैलाश ठाकुर का चयन आकांक्षा जनजाति योजना के अंतर्गत जिला स्तरीय परीक्षा उत्तीर्ण उपरांत भोपाल के शैक्षिक संस्थानों मे 11 जेईई, नीट प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयार हेतु हुआ है। जिला स्तरीय परीक्षा उत्तीर्ण करने पर ग्रामवासियों मे हर्ष का माहौल है। संस्था के प्राचार्य चंदन कुमार शर्मा, राकेश कुमार शर्मा, लक्ष्मी प्रसाद साहू, सुदामा प्रसाद वर्मा, पवन कुमार स्थापक, प्रमोद राय, शैलेंद्र कचेरा, श्रीमती रेखा कौरव, कुमारी माया कौरव एवं पीएन साहू ने छात्राओं के चयन पर खुशी जताई है।

करेली जनपद पंचायत में पंचायत उप निर्वाचन के लिए अवकाश

नरसिंहपुर। मध्यप्रदेश राज्य निर्वाचन आयोग द्वारा जारी पंच व सरपंच पदों की अंतिम जानकारी संशोधित के अनुसार जिले में निर्वाचन क्षेत्रों में मतदान बुधवार 11 सितम्बर को सम्पन्न होगा। मतदान दिवस पर सार्वजनिक अवकाश घोषित किया है। इस संबंध में राज्य शासन के सामान्य प्रशासन विभाग ने अधिसूचना जारी की है। जिले में पंच के 13 व सरपंच के दो पदों के लिए चुनाव सम्पन्न होना है। पंचायत उप निर्वाचन- 2024 के अंतर्गत जनपद जिले की जनपद पंचायत करेली की ग्राम पंचायतों बीतली व ग्वारीकला में उप निर्वाचन सम्पन्न होना है। कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी स्थानीय निर्वाचन श्रीमती शीतला पटले ने पंचायत/ क्षेत्रों में सार्वजनिक अवकाश घोषित करने का आदेश जारी किया है। मध्यप्रदेश राज्य निर्वाचन आयोग द्वारा पंचायतों के उप निर्वाचन वर्ष- 2024 के लिए कार्यक्रम जारी किया है। जारी कार्यक्रम के अनुसार मतदान बुधवार 11 सितम्बर को प्रात: 7 बजे से अपरान्ह 3 बजे तक होगा। मतदान केन्द्र पर केवल पंच पद के लिए मतदान समाप्ति के तुरंत पश्चात मतगणना की जायेगी। सरपंच पद की विकासखंड मुख्यालय पर ईव्हीएम से की जाने वाली मतों की गणना रविवार 15 सितम्बर को प्रात: 8 बजे से की जायेगी। पंच पद की मतगणना केन्द्र पर की गई मतगणना का सारणीकरण व निर्वाचन परिणाम की घोषणा और पंच पद की विकासखंड मुख्यालय पर की जाने वाली मतगणना, सारणीकरण तथा निर्वाचन परिणाम की घोषणा बुधवार 18 सितम्बर को प्रात: 10.30 बजे से की जायेगी। सरपंच पद के लिए मतों का सारणीकरण तथा निर्वाचन परिणाम की घोषणा और मतों का विकासखंड स्तरीय सारणीकरण रविवार 15 सितम्बर को प्रात: 10.30 बजे से की जायेगी।

झिरीकला के जंगलों में जुआ खेलते पकड़े गए जुआरी

नरसिंहपुर।

पुलिस अधीक्षक श्री अमित कुमार के निर्देशन में जुआ/सट्टे के कारोबार के विरूद्ध चलाया जा रहा विशेष अभियान, थाना गोटेगांव अंतर्गत 3 जुआडी पुलिस की पकड में, आरोपियों से लगभग 90 हजार नगद एवं 4 मोटरसाईकिल जप्त। उल्लेखनीय है कि जिले में जुआ/सट्टा जैसे अवैध कारोबार पर पूर्णत: प्रतिबंध लगाने हेतु अवैध कारोबारियों की धरपकड एवं अपराध एवं अपराधियों पर पूर्णत: नियंत्रण हेतु जिले के सभी थाना क्षेत्रों में पुलिस अधीक्षक, श्री अमित कुमार के कुशल नेतृत्व में जिले के सभी एसडीओपीयों के मार्गदर्शन में लगातार विशेष अभियान चलाया जा रहा है जिसके तहत जुआ/सट्टा के कारोबार में लिप्त व्यक्तियों की धरपकड की जा रही है। जिला अंतर्गत जुआ/सट्टा के अवैध कारोबार में लिप्त अपराधियों की सूचना प्राप्त करने हेतु सक्रीय किए गए है मुखबिर जिला अंर्तगत चलाए जा रहे अभियान के तहत विभिन्न थाना क्षेत्रों में मुखबिर तंत्र को सक्रीय कर सूचना एकत्रित की जा रही है। सूचना प्राप्त होते ही विशेष टीमों का गठन कर जिले में सक्रीय सटोरियों एवं जुआडियों की लगातार धरपकड की जा रही है। थाना गोटेगांव अंर्तगत, 3 जुआडी पुलिस की पकड़ मे मुखबिर की सूचना पर कार्यवाही करते हुये पुलिस अधीक्षक के कुशल नेतृत्व में पुलिस टीम द्वारा ग्राम झिरीकला के जंगल में दबिश दी गयी जिसके परिणाम स्वरूप आरोपी राकेश यादव उर्फ रिंकू, निवासी ग्राम इमलिया, संजू उर्फ धनश्याम लोधी, निवासी ग्राम बुढैना, छुट्टू उर्फ छुट्टन पटेल निवासी किसानी मोहल्ला, गोटेगांव को जुआ खेलते हुये रंगे हाथ पकडा गया एवं कुछ आरोपी धने जंगल का फायदा उठाकर भाग गए जिनसे लगभग 90410 रूपये नगद एवं 52 ताश पत्ते एवं चार मोटरसाईकिल जप्त करने में सफलता प्राप्त हुयी है। आरोपियों पर मामला दर्ज थाना गोटेगांव अंतर्गत ग्राम झिरीकला के जंगलों में जुआ खेलते हुए पकडे जाने गए आरोपियों के विरूद्ध थाना गोटेगांव में अपराध क्रमांक 782/2024 धारा 13 सार्वजनिक जुआ अधिनियम 1867 के तहत प्रकरण पंजीवद्ध किया गया है। जुआडियों को पकडने में इनकी रही मुख्य भूमिका थाना गोटेगांव अंतर्गत, झिरीकला के जंगलों में जुआ खेलते पकडे गए आरोपियों के विरूद्ध कार्यवाही करने में एसडीओपी गोटेगांव, श्रीमति भावना मरावी के मार्गदर्शन में थाना प्रभारी गोटेगांव, श्री सहदेवराम साहू, उपनिरीक्षक दिलीपसिंह, आरक्षक प्रशांत बहादुर, आरक्षक रवेन्दसिह कुशवाह, आरक्षक पकज दिवेदी, आरक्षक चालक अमित नामदेव की मुख्य भूमिका रही है।

शिविर लगाकर मनाया गया विश्व फिजियोथेरेपी दिवस

गाडरवारा (स्वतंत्र मत)। विश्व फिजियोथैरेपी दिवस अवसर पर अमन सद्भावना शिक्षण प्रशिक्षण कल्याण समिति के सहयोग से मैथिल फिजियोथैरेपी पॉइंट पर निशुल्क फिजियोथैरेपी कैंप लगाया गया जिसमें 55 से 60 मरीज को डॉ. गणेश मैथिल एवं डॉ. अमृता सोनी के माध्यम से लाभान्वित किया गया कार्यक्रम के मुख्य अतिथि के रूप में श्रीमती डॉ. स्वाति कुरचनिया,पूर्व विधायक श्री नरेश पाठक, डॉ अनिल पटेल, केंद्र सिंह राजपूत, डॉक्टर यागेश तिवारी उपस्थित रहे सहयोगी संस्थान अमन सद्भावना शिक्षण प्रशिक्षण कल्याण समिति कोषाध्यक्ष कमलेश रजक जिला अध्यक्ष कुलदीप रजक, राहुल वर्मा प्रशांत दोहरे प्रदेश मीडिया प्रभारी श्री विनोद चौकसे और मैथिल फिजियोथैरेपी पॉइंट स्टाफ कुमारी रिया रजक,गोपाल मैथिल,नेहा कोरी,काजल साहू,रानू केवट,गजेंद्र वर्मा सहयोग रहा।

पूर्व मंत्री राजकुमार पटेल का हुआ नगर आगमन

गाडरवारा (स्वतंत्र मत)। मध्य प्रदेश शासन के पूर्व शिक्षा मंत्री राजकुमार पटेल का अल्प प्रवास पर गाडरवारा आगमन हुआ । श्री पटेल यहां पर एक निजी कार्यक्रम में शामिल होने आए हुए थे । उन्होंने स्वर्गीय रविंद्र चाचा के निवास स्थान पहुंचकर शोक संवेदनाए व्यक्त की । होटल शांतिदूत में पूर्व शिक्षा मंत्री राजकुमार पटेल से मुलाकात करने पहुचे वरिष्ठ कांग्रेस नेता शिवकुमार नीखरा, मुस्तान खान, पूर्व पार्षद स्वामी राजेश नीरस, अजय सोनी ने संगठहात्मक चर्चाए कर आत्मीय स्वागत किया ।

7 दिवसीय कुकिंग प्रशिक्षण से महिलाओं को सिखाए जाएंगे पाक कला के गुर

बालाघाट । राज्य शासन महिलाओं की सुरक्षा एवं उनको आत्म निर्भर बनाने के लिए कृत संकल्पित है। मप्र टूरिज्म बोर्ड द्वारा संचालित महिलाओं के लिए सुरक्षित पर्यटन स्थल परियोजना का क्रियान्वयन 20 जिलों के 50 पर्यटन स्थलों पर महिला बाल विकास मंत्रालय भारत सरकार की निर्भया योजना अंतर्गत किया जा रहा है। परियोजना का मुख्य उद्देश्य पर्यटन स्थलों पर महिला पर्यटकों में सुरक्षा और सहजता का भाव उत्पन्न करना है ताकि वे पर्यटन का आनंद प्राप्त कर सकें। महिलाओं के लिए सुरक्षित पर्यटन स्थल को ब?ावा देने के लिए परियोजना सहयोगी संस्था सेंटर फॉर एडवांस्ड रिसर्च एंड डेवलपमेंट (कार्ड) द्वारा जिला प्रशासन के सहयोग से महिलाओं हेतु सुरक्षित पर्यटन स्थल परियोजना के अंतर्गत संकुल मंडला तथा कान्हा (मुक्की गेट) पर इंस्टिट्यूट ऑफ होटल मैनेजमेंट के अनुभवी प्रशिक्षकों द्वारा यह 7 दिवसीय कुकिंग प्रशिक्षण किया गया। जिसमें 60 महिलाओं (30 मंडला तथा 30 कान्हा) ने भाग लिया जो आगे चलकर पर्यटकों के स्वागत के लिए तैयार होंगे तथा वे होटल, रिसोर्ट, रेस्टोरेंट व स्वरोजगार हेतु तैयार होंगे इस प्रशिक्षण में वे पारंपरिक, कोदो कुटकी, साउथ इंडियन, चयनीस, चाट, बेकरी जैसे स्वादिष्ट व्यंजन बनाना सीखेंगे। कार्यक्रम महिला बाल विकास मंडला-बालाघाट तथा

वन स्टॉप सेंटर बैहर के सहयोग से प्रारंभ किया गया जिसमे वन स्टॉप प्रशासक सुश्री रचना चौधरी बालाघाट वन स्टॉप सेंटर से श्रीमती प्रीति हरिंद्रखेडे केश वर्कर, विजेता राउत सेंटर एडमिनिस्ट्रेटर, तथा कार्ड संस्था के क्षेत्रीय समन्वयक लोकेश उपमन्यु, केंद्र प्रबंधक श्रीमती अनीता उपमन्यु उपस्थित रहे।इस प्रशिक्षण के उपरांत महिलाएं आत्मनिर्भर बनने के लिए सक्षम होंगी तथा मंडला व कान्हा में आने वाले पर्यटक विशेषकर महिला पर्यटक अपने आप को सुरक्षित महसूस करते हुए पर्यटन के साथ साथ स्वादिष्ट व्यंजन का आनंद प्राप्त करेंगे व उनके द्वारा जिला स्तर से प्रचार प्रसार में सहयोग प्रदाय किया जाएगा। क्षेत्रीय समन्वयक कार्ड के लोकेश उपमन्यु ने कहा महिलाओं को कुकिंग प्रशिक्षण प्रशिक्षण के अतिरिक्त अन्य कौशल हेतु प्रशिक्षत किया जाना आवश्यक है जिससे वे पर्यटकों को बेहतर अनुभव प्रदाय में सहयोगी बन सके, तथा सभी अतिथियों ने पर्यटन के क्षेत्र में महिलाओं के उज्वल भविष्य की शुभकामनाएं प्रेषित की।परियोजना के संकुल समन्वयक राम रतन मरावी ने बताया पर्यटकों के लिए सुरक्षित और समान पर्यटन स्थल जहां विशेष रूप से महिलाएं निडर और स्वतंत्र रूप से अपनी यात्राओं का आनंद ले सकें, के विजन तथा महिला पर्यटकों की संख्या ब?ाने के लिए सक्षम वातावरण बनाने और महिलाओं के अनुकूल समर्थन प्रणाली सुनिश्चित करने, के मिशन पर संस्था कार्य कर रही है यह जिले में अन्य ऐसे प्रशिक्षण किये गए है जिससे महिलाओं को रोजगार मिल रहा है जिन्हे जिला स्तरीय फेडरेशन बना कर एक मंच पर लाने का प्रयास किया जा रहा है।

स्कूलों और आंगनबाड़ियों में आज कृमिनाशक एल्बेंडाजोल की गोलियां खिलाई जाएगी

बालाघाट। अपर कलेक्टर श्री जीएस धुर्वे और जिला पंचायत सीईओ श्री डीएस रणदा की संयुक्त अध्यक्षता में समयावधि पत्रों की समीक्षा बैठक आयोजित हुई। बैठक में जिपं सीईओ श्री रणदा ने सीएमएचओ डॉ. मनोज पांडे को निर्देश दिए है कि मंगलवार को स्कूलों और आंगनवा?यों में 1 वर्ष से 19 वर्ष तक के बच्चों को कृमि नाशक एल्बेंडाजोल की गोलियां खिलाई जाएगी। इस कार्य की निगरानी निरंतर करें, जब बच?ें कृमि के नाशक गोलियां खाते है तो कृमि मरने लगते है। वहीं किसी किसी बच्चे में कृमि के नाश होंने से आंशिक विपरीत प्रभाव भी होता है। सभी शिक्षकों बीईओ, बीआरसी, जनशिक्षकों से समन्वय बनाये रखें। बैठक के दौरान अपर कलेक्टर श्री धुर्वे ने न्यायालयीन लंबित पत्रों के सम्बंध में राजस्व अधिकारियों व जिला और जिला प्रमुख से जानकारी की। साथ ही उन्होंने प्राकृतिक आपदा के तहसीलो में लंबित पत्रों के निराकरण करने के निर्देश दिए है। बैठक में नियमित विषयों के अलावा आगामी समय में आयोजित होने वाले कार्यक्रमों के सम्बंध में तैयारियों के सम्बंध में भी निर्देशित किया गया। बैठक में एसडीएम श्री गोपाल सोनी, संयुक्त कलेक्टर श्री केसी ठाकुर, डिप्टी कलेक्टर श्रीमती राजनंदनी शर्मा, एमआर कोल सहित समस्त विभागाध्यक्ष तथा अनुभागों के अधिकारी वीसी के माध्यम से जु?।

प्रत्येक माह के 25 तारीख को आयोजित होंगे अनुकंपा नियुक्त के कार्य- बैठक में जिपं सीईओ श्री रणदा ने पेंशन अधिकारी के साथ ही समस्त विभागों के अधिकारियों से कहा कि अब माह में एक ही दिन अनुकंपा नियुक्ति के नियुक्ति पत्र प्रदाय किये जायेंगे।

इसलिए सभी विभाग प्रकरणों की तैयारियां उसी अनुरूप करेंगे। अनुकंपा नियुक्ति के मामलें में जिपं के अलावा शिक्षा विभाग सहित कई विभागों के प्रकरण प्रस्तुत करने के निर्देश दिए है।

जन आकांक्षा पोर्टल निराकरण की स्थिति में आयी गति-कलेक्टर श्री मृणाल मीना के निर्देशानुसार टीएल व जनसुनवाई के प्रकरणों को जन आकाँक्षा पोर्टल के माध्यम से मॉनिटरिंग किया जा रहा है। इसमें समस्त विभागों द्वारा प्रतिवेदन अपलोड किए जा रहें है। प्रतिवेदनों का अवलोकन शाखा और स्वयं कलेक्टर श्री मीना द्वारा निगरानी की जा रही है। डिप्टी कलेक्टर श्रीमती शर्मा ने बताया कि जनआकांक्षा पोर्टल पर सारे आवेदनों की इंट्री की जाती है। इसी पोर्टल पर विभागों को अपना जवाब भी देना होता है। टीएल के लंबित पत्रों के जवाब देने का प्रतिशत 25 है। टीएल के 205 पत्रों में से 50 से अधिक निराकृत हो गए है। इसी तरह जनसुनवाई के 130 आवेदन पोर्टल पर इंदराज किये गए। इनमें से 48 आवेदनों का निराकरण किया जा चुका है। प्रभारी अधिकारी डि?टी कलेक?टर श्रीमती शर्मा ने बताया कि विभागों द्वारा लगातार निराकरण किया जा रहा है। कई आवेदनों का डिस?पोजल प्रक्रिया में है।

किरनापुर और लांजी में स्टेडियम निर्माण के लिए प्रक्रिया हुई प्रारम्भ- टीएल बैठक में जिला खेल अधिकारी ने किरनापुर और लांजी में स्टेडियम निर्माण के सम्बंध में भूमि आवंटन के लिए बिंदु रखा। जिपं सीईओ श्री रणदा ने सम्बंधित एसडीएम को इस सम्बंध में तथा खेल अधिकारी श्री केके चौरसिया को ऑनलाइन आरसीएमएस पोर्टल पर आवेदन करने के निर्देश दिए है। गत दिनों प्रभारी मंत्री श्री उदय प्रताप सिंह के समक्ष डेंजर रो? की स्थिति का विषय आने पर पीडब्ल्यूडी विभाग से इस सम्बंध में रो? की जानकारी ली गई।

वादा निभाओ रैली का आयोजन

राजधानी भोपाल में अतिथि शिक्षकों की पहुंचने की अपील

नरसिंहपुर। अतिथि शिक्षक महासंघ के प्रांत कार्यकर्ता एवं जिला अध्यक्ष एस. के.सोनी ने विज्ञप्ति जारी करके बताया कि दिनाँक 10 सितम्बर 2024 दिन मंगलवार को राजधानी भोपाल में वादा निभाओ रैली का आयोजन अतिथि शिक्षक महा संघ के बैनर तले आजाद अति. शि. संघ और अति.शि.समन्वय समिति के प्रान्तव्यपी व्यापी आवाहन पर किया जा रहा है। एक वर्ष पूर्व 02 सितम्बर 23 के दिन तत्कालीन मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान के द्वारा स्कूल के अतिथि शिक्षकों के वर्षों के संघर्ष और मांगो के अनुरूप अतिथि शिक्षक महापंचायत का आयोजन किया था लेकिन मानदेय के अलावा अन्य किसी प्रकार से उनका भविष्य सुरक्षित नहीं किया गया है। पूर्व में यह रैली 5 सितंबर 24 शिक्षक दिवस के अवसर पर आयोजित होना तय थी लेकिन प्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव के पिताजी का निधन एवं उनके प्रति अतिथि शिक्षकों की संवेदना होने के कारण इस रैली 10 सितंबर 24 को आयोजित करने का निर्णय किया गया है। सम्पूर्ण प्रदेश से अतिथि शिक्षक भोपाल नगर रोशनपुरा चौराहे पर एकत्र होकर रैली के रूप में मुख्यमंत्री निवास की ओर कूच करेंगे और वादा निभाने की बात रखेंगे। विगत दिनों अतिथि शिक्षकों महापंचायत को 02 सितंबर को 1 वर्ष पूरा होने पर संपूर्ण प्रान्त के साथ नरसिंहपुर जिले में भी भारी संख्या में अतिथि शिक्षकों ने रैली निकाल के कलेक्ट्रेट में जाकर धरना दिया था। वहीं जिला भाजपा कार्यालय में पहुँच जमीन पर बैठकर अपनी बात भाजपा के नेतृत्व के समक्ष रखी थी। राज्यसभा के सांसद कैलास सोनी ने कहा कि जैसे शिवराज सरकार के लाड़ली बहनों के लिए किए गए वादे पूरे किए गए वैसे ही मोहन सरकार स्कूलों के अतिथि शिक्षक के लिए किए गए वादे पूरे किए जाएंगे । लोकसभा सांसद दर्शन सिंह चौधरी ने अतिथि शिक्षकों के बीच भीड़ में आकर संबोधित किया कहा कि शीघ्र ही आपके प्रतिनिधि मंडल को मुख्यमंत्री से मिलाया जायेगा ।02 सितम्बर को लोक शिक्षण संचनालय भोपाल ने बिना सूचना दिए स्कोर कार्ड के अंकों में से कांग्रेस सरकार के दिए हुए 25 अंक को हटाकर अतिथि शिक्षकों के साथ कुठाराघात किया है वापस कांग्रेस सरकार की तर्ज पर ही प्रत्येक साल के 10 या 08 अंक से हिसाब के अधिकतम अंक स्कोर में पुन:दर्ज किए जाएं, डीपीआई के अधिकारी ध्यान दें कि यह अंक बोनस या अधिभार के अंक नहीं है डीपीआई के ऐसे निर्दय और विवेकी कार्रवाई से संपूर्ण मध्य प्रदेश के अतिथि शिक्षकों में आक्रोश फैला हुआ है।अतिथि शिक्षक महासंघ के सभी पदाधिकारीयों ने 10 सितंबर 24 मंगलवार को भोपाल की वादा निभायोरैली में पहुंचने की अपील की है।

पीएम जन मन के तहत विशेष कैम्प का होगा आयोजन

नरसिंहपुर। प्रधानमंत्री जनमन पीवीटीजी मिशन के अंतर्गत पिछड़ी जनजातियों (भारिया) के संबंधित मुखिया/ परिवारजनों को विभिन्न शासकीय योजनाओं का लाभ दिलाये जाने के लिए कैम्प आयोजित किये जायेंगे। ये कैम्प जनपद पंचायत बाबई चीचली की ग्राम पंचायत भिलमाढाना के ग्राम भिलमाढाना राजस्व, वन, कोटरी व हींगपानी के लिए कैम्प लगाये जायेंगे। ग्राम पंचायत भिलमाढाना में 10, 11, 12, 13 व 14 सितम्बर को कैम्प आयोजित किये जायेंगे। सीईओ जिला पंचायत श्री दलीप कुमार ने ब्लाक स्तरीय नोडल अधिकारी एवं सहायक नोडल अधिकारियों को नियुक्त किया है। उन्होंने जारी आदेश कर संबंधित अधिकारियों को आवश्यक निर्देश दिये हैं।

सेवा और समर्पण भाजपा का मूल मंत्र : मंत्री उदय प्रताप

गाडरवारा (स्वतंत्र मत)

विगत दिवस मध्य प्रदेश शासन के परिवहन एवं स्कूल शिक्षा मंत्री क्षेत्रीय विधायक राव उदय प्रताप सिंह का गाडरवारा विधानसभा के नगरीय क्षेत्र एवं ग्रामीण अंचल में दौरा हुआ । उन्होंने सदस्यता महापर्व भारतीय जनता पार्टी सदस्यता अभियान के अंतर्गत नगर साईंखेड़ा, खैरुआ, नगर सालीचौका, ग्राम मारेगांव, बसुरिया, पनागर और पिठहरा में शामिल होकर साथियों से राष्ट्रहित में इस अभियान को आगे बढ़ाने का आग्रह करते हुए कहा कि सेवा और समर्पण भाजपा का मूल मंत्र है हम राजनीति समाज और देश को मज़बूत बनाने के लिए करते है

सेवाभाव समन्वय और सकारात्मकता के साथ सदस्यता अभियान को आगे बढ़ा कर भाजपा को विश्व की सबसे बड़ी पार्टी बनने में सबसे बड़ी हिस्सेदारी निभाने का काम सदस्यता अभियान के माध्यम से भाजपा कार्यकर्ता कर रहे है ।

भाजपा के सशक्त कार्यकर्ताओं के बल पर हम अपने अभियान में जरूर सफलता हासिल करेंगे । सदस्यता अभियान में शामिल होने के बाद उन्होंने क्षेत्र में शोकाकुल परिवारो में पहुचकर भेंट की । सालीचौका में ई स्कूटी शोरूम का उद्घाटन किया। इस अवसर पर भाजपा के वरिष्ठ नेता एवं कार्यकर्ता उपस्थित रहे ।

विद्यार्थियों और नागरिकों के आधार अपडेशन हेतु विकासखंडवार शिविर शुरू

हर शिविर के लिए नियुक्त किए आपरेटर एवं शिविर प्रभारी

कटनी, (स्वतंत्रमत)।

जिले के विद्यार्थियों एवं नागरिकों के आधार अपडेट किए जाने हेतु कलेक्टर श्री दिलीप कुमार यादव के निर्देश पर तिथियों का निर्धारण किया जाकर विकासखंडवार संकुल विद्यालयों में 9 सितम्बर से आधार कैंप आयोजित किए जा रहे है। इस संबंध में आदेश जारी कर विकासखंडवार संकुल विद्यालयों में आयोजित होने वाले शिविरों में आपरेटर एवं शिविर प्रभारी नियुक्त कर निर्धारित आधार केंद्र संचालकों को नियत तिथि पर प्रात: 10 बजे से शाम 6 बजे तक शासकीय आधार मशीन एवं अन्य उपकरणों के साथ निर्धारित शिविर स्थल में उपस्थित होकर कैंप मोड में शिविर आयोजित करने हेतु निर्देशित किया गया हैं। साथ ही संबंधित सभी संकुल प्राचार्य को स्कूलों में आवश्यक प्रचार-प्रसार कराकर बच्चों को समस्त आवश्यक दस्तावेजों सहित कैंप में उपस्थित कराने के साथ ही शिविर में कुर्सी-टेबल, बिजली, बच्चों की बैठक व्यवस्था, पेयजल एवं टोकन प्रणाली की व्यवस्था

सुनिश्चित करने के निर्देश दिए है। आधार शिविरों में विभिन्न योजनाओं अंतर्गत आधार कार्ड में मोबाइल नंबर अद्यतन न होने के कारण ई-केवाईसी से वंचित आवेदको का भी आधार अद्यतन कराने हेतु संबंधित रोजगार सहायक, सचिव, पटवारी को दायित्व सौंपा जाकर आधार पंजीयन अपडेशन कार्य यू आई डी ए आई द्वारा निर्धारित शुल्क अनुसार करने के निर्देश दिए है।

विकासखंडवार शिविर का विवरण - विकासखंड बड़वारा के शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय बड़वारा एवं बालक बरही और सलैया सिहोरा, बसाडी में 9 सितंबर से 11 सितंबर तक, शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय खितोली में 12 से 14 सितंबर तक शिविर आयोजित किया जाएगा। वहीं विकासखंड बहोरीबंद के शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय तेवरी में 9 से 10 सितंबर, बाकल,स्लीमबाबाद, बचौया और बहोरीबंद में 9 सितंबर से 11 सितंबर , सिहुंडी और कूड़ा मर्दानगढ़ में 12 सितंबर से 14 सितंबर तक शिविर आयोजित होंगे। जबकि विकासखंड ढीमरखेड़ा के शासकीय हाई स्कूल झिनना पिपरिया, शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय उमरियापान, मुरवारी और शासकीय हाई स्कूल ढीमरखेड़ा में 9 से 11 सितंबर, धरवारा में 11 सितंबर से 12 सितंबर, शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय उमरियापान, हाई स्कूल कछारगांव और पहरुआ में 12 से 14 सितंबर, दशरमन में 13 से 14 सितंबर और शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय सिलोंडी में 9 से 10 सितंबर तक शिविर आयोजित किया जाएगा।

वही विकासखंड कटनी के उच्चतर माध्यमिक विद्यालय कन्या सिविल लाइन, हाई स्कूल कुलुआ बडखेरा में 9 से 10 सितंबर, हाई स्कूल कनवाहरा में 9 से 11 सितंबर, उच्चतर माध्यमिक विद्यालय एनकेजे, हाई स्कूल पिपरोंध में 11 से 12 सितंबर, हाई स्कूल वेंकट वार्ड और हाई स्कूल देवरी हटाई में 13 से 14 सितंबर, हाई स्कूल कैलवारा कला 12 से 14 सितंबर तक शिविर का आयोजन किया जायेगा। विकासखंड विजयराघवगढ़ के उच्चतर माध्यमिक विद्यालय विजयराघवगढ़ व सिनगौडी में 9 से 11 सितंबर, देवराकला और कारीतलाई में 12 से 14 सितंबर को शिविर आयोजित होंगे। विकासखंड रीठी के उच्चतर माध्यमिक विद्यालय रीठी में 9 सितंबर, बिलहरी में 10 सितंबर को, देवगांव में 11 सितंबर, निटरा में 12 सितंबर और शासकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय गुरजीकला में 13 सितंबर और बडगांव में 14 सितंबर को आधार शिविर आयोजित किए जाएंगे।

17 सितम्बर से 2 अक्टूबर तक मनाया जाएगा स्वच्छता ही सेवा पखवाड़ा

कटनी, (स्वतंत्रमत)।

जिले के सभी ग्रामों में आयोजित होंगी स्वच्छता संबंधी विभिन्न गतिविधियां

स्वच्छ भारत मिशन के शुभारंभ की 10वीं वर्षगांठ के अवसर पर शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों में स्वभाव स्वच्छता- संस्कार स्वच्छता की थीम पर स्वच्छता ही सेवा अभियान 17 सितम्बर से 1 अक्टूबर तक आयोजित करनें तथा 2 अक्टूबर को स्वच्छ भारत दिवस समारोह के रूप में आयोजित करने के निर्देश कलेक्टर श्री दिलीप कुमार यादव ने दिए है। कलेक्टर श्री यादव ने शासन के दिशा-निर्देशों के अनुरूप अभियान के सफल आयोजन हेतु जिला स्तरीय स्टेंडिंग कमेटी एवं जनपद स्तरीय स्टेंडिंग कमेटी का गठन किया है। मुख्य सचिव वीरा राणा ने वीडियो कान्फ्रेंसिंग के माध्यम से स्वच्छ भारत मिशन के शुभारंभ के संबंध में दिश निर्देश दिए। इस दौरान कलेक्टर श्री यादव, जिला पंचायत के सीईओ एवं प्रभारी निगमायुक्त श्री शिशिर गेमावत, उपायुक्त पवन अहिरवार सहित नगरीय निकायों के अधिकारी की मौजूदगी रही।

कलेक्टर श्री दिलीप कुमार यादव द्वारा जारी आदेशानुसार जिल स्तरीय समिति का अध्यक्ष कलेक्टर कटनी तथा सचिव मुख्य कार्यपालन अधिकारी जिला पंचायत को बनाया गया है। कमेटी में सदस्य के रूप में आयुक्त नगर निगम, मुख्य स्वास्थ्य एवं चिकित्सा अधिकारी, कार्यपालन यंत्री लोक स्वास्थ्य एवं यांत्रिकी विभाग, लोक निर्माण विभाग, जिला कार्यक्रम अधिकारी महिला एवं बाल विकास विभाग, उपसंचालक पशुपालन एवं डेयरी विभाग, जिला संयोजक आदिम आति कल्याण विभाग, जिला आपूर्ति अधिकारी, परियोजना अधिकारी जिला शहरी विकास अभिकरण , जिला शिक्षा अधिकारी, जिला परियोजना समन्वयक जिला शिक्षा केन्द्र, प्राचार्य शासकीय तिलक कॉलेज, जिला परियोजना प्रबंधक एमपीएसआरएलएम, जिला समन्वयक नेहरू युवा केन्द्र, जिला समन्वयक जन अभियान परिषद सहित गैर शासकीय संगठन को नियुक्त किया गया है। जबकि ब्लॉक स्तरीय समिति हेतु विकासखंड बडवारा, बहोरीबंद, ढीमरखेड़ा, कटनी, रीठी, विजयराघवगढ़, हेतु संबंधित अनुविभागीय अधिकारी राजस्व को अध्यक्ष एवं जनपद पंचायत मुख्य कार्यपालन अधिकारी को सचिव नियुक्त किया जाकर समिति में सदस्यों एवं गैर शासकीय संगठनों को रखा गया है।

आयोजित होंगी विभिन्न गतिविधियां

स्वच्छ भारत मिशन ग्रामीण के अंतर्गत जिले भर के शहरी क्षेत्रों एवं ग्रामीण क्षेत्रों के अंतर्गत आनें वाली ग्राम पंचायतों में स्वच्छता ही सेवा पखवाड़ा मनाया जायेगा। स्वच्छता स्वच्छता ही सेवा 2024 अभियान मुख्य रूप से स्वच्छता की भागीदारी संपूर्ण स्वच्छता सफाई मित्र और स्वच्छता शिविर पर केंद्रित है।

जिसके तहत स्वच्छता में समुदाय की भागीदारी सुनिश्चित करने के लिए जन-जन को जागरूक किया जाएगा साथ ही व्यापक स्तर पर विशेष अभियान के तहत चिन्हित एवं अस्वच्छ स्थानों पर श्रमदान के माध्यम से साफ-सफाई कराई जाएगी। गांव-गांव में सफाई मित्र स्वच्छता शिविर आयोजित कर उन्हें सरकार की विभिन्न जन कल्याणकारी योजनाओं के माध्यम से जोड़कर अभियान चलाया जाएगा।

अजाक्स जिलाध्यक्ष मैहर के लिए आम सहमति बनाने के मकसद से की बैठक

शीघ्र होगी जिलाध्यक्ष की नियुक्ति

कटनी, (स्वतंत्रमत)। मप्र अनुसूचित जाति-जनजाति अधिकारी एवं कर्मचारी संघ (अजाक्स) के प्रांतीय उपाध्यक्ष रामकिशोर दाहिया ने प्रेस को जारी विज्ञप्ति में बताया कि मध्यप्रदेश अजाक्स के प्रांताध्यक्ष चौ मुकेश मौर्य द्वारा प्राप्त दिशा निर्देशों के अनुपालन में अजाक्स प्रांतीय उपाध्यक्ष रामकिशोर दाहिया ने मैहर सतना जिले के अजाक्स अधिकारी/कर्मचारियों से सहयोग लेकर विश्रामगृह मैहर में रविवार दिनांक 8 सितम्बर को दोपहर 2 से महत्वपूर्ण बैठक का आयोजन किया। प्रांताध्यक्ष चौ मुकेश मौर्य की मंशानुसार मध्यप्रदेश के समस्त जिलाध्यक्षों की नियुक्ति आम सहमति से ही की जानी है। बैठक का शुभारम्भ संविधान निर्माता, ज्ञान के प्रतीक बाबा साहब डॉबीआर अंबेडकर जी के तैल्य चित्र पर माल्यार्पण उपरांत किया गया। अजाक्स जिलाध्यक्ष मैहर के लिए आम सहमति बनाने का यह पहला प्रयास है, निकट भविष्य में मैहर जिले के अजाक्स अधिकारी कर्मचारियों की आम सहमति बनने उपरांत नियुक्ति हेतु अनुमोदन प्रांतीय उपाध्यक्ष रामकिशोर दाहिया करेंगेए तत्पश्चात प्रांतीय अजाक्स से जिलाध्यक्ष के आदेश पत्र जारी हो सकेंगे। विश्राम गृह मैहर की उक्त बैठक में अजाक्स प्रांतीय कार्यकारिणी से रामकिशोर दाहिया, कटनी से अजाक्स जिलाध्यक्ष बलवीर सिंह परस्ते, महासचिव उदयभान सिंह दाहिया, महासचिव राजू भैया सिंह, बड़वारा ब्लॉकाध्यक्ष सुग्रीव कुमार महोबिया, जिला सतना मैहर से अजाक्स जिलाध्यक्ष डॉ बविजय कुमार आरख, पूर्व जिलाध्यक्ष आर एल साकेत, सुन्दरलाल चौधरी, राम कुशल दाहिया, गया सिंह टेकाम,राजेन्द्र सिंह ठाकुर, श्यामलाल दाहिया, बीएनसिंह ठाकुर, लक्ष्मण चरण दहायत, संतोष कुमार दहायत, बलबीर सिंह मरकाम, श्यामा चरण सिंह ठाकुर, गुलाब सिंह ठाकुर, रामसिया सतनामी, दिनेश कुमार वर्माए राज सिंह बरकरे सहित अनेकों सामाजिक कार्यकर्तागण मौजूद थे।

जिले में अब तक 947.5 मिलीमीटर औसत बारिश रिकार्ड

गत वर्ष की अवधि की तुलना में 36.7 मिलीमीटर अधिक वर्षा दर्ज

कटनी, (स्वतंत्रमत)। जिले में 1 जून से 2024 से रविवार 8 सितंबर 2024 प्रात: तक कुल 947.5 मिलीमीटर अर्थात 37.30 इंच औसत वर्षा दर्ज की गई है। जबकि गत वर्ष इसी अवधि में कुल 910.8 मिलीमीटर अर्थात 35.86 इंच औसत वर्षा दर्ज की गई थी। इस प्रकार वर्ष 2024 में अब तक कुल 36.7 मिलीमीटर अधिक वर्षा दर्ज की गई है। अधीक्षक भू-अभिलेख द्वारा दी गई जानकारी के अनुसार रविवार 8 सितंबर तक की अवधि में तहसील वार वर्षा मापी केन्द्र कटनी में 1144.6 मिलीमीटर, तहसील रीठी मे 1080.0 मिलीमीटर, तहसील बड़वारा मे 907.5 मिलीमीटर, तहसील बरही में 785.0 मिमी, विजयराघवगढ़ में 708.8 मिमी, बहोरीबंद मे 646.0 मिमी, स्लीमनाबाद में 1102.5 मिलीमीटर और वर्षामापी केन्द्र ढीमरखेड़ा मे 1199.9 मिलीमीटर कुल 947.5 मिलीमीटर अर्थात 37.30 इंच वर्षा दर्ज की गई है।

राष्ट्रीय कृमि मुक्ति दिवस का आयोजन आज

कटनी, (स्वतंत्रमत)। मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी ने द्वारा बताया गया कि, राष्ट्रीय कृमि मुक्ति दिवस का आयोजन वर्ष मे एक बार किया जाता है जिसमे समस्त विघालयो एवं आंगनबाड़ी केंद्र के माध्यम से 1 से 19 वर्ष के बच्चों किशोर, किशोरियों को एल्बेडाजोल 400 मिली ग्राम गोली का सेवन कराया जाता है।भारत सरकार के निर्देशानुसार फिक्स डे ट्रेटजी के अंतर्गत इस वर्ष भी डे डी वार्मिंग के लक्ष्य की प्राप्ति हेतु प्रदेश के साथ- साथ जिले मे 10 सितम्बर 2024 को राष्ट्रीय कृमि मुक्ति दिवस तथा 13 सितम्बर 24 को माकअप दिवस का आयोजन किया जावेगा। इस अभियान के अंतर्गत शासकीय, शासकीय अनुदान प्राप्त शालाओं, आदिवासी, आश्रम शालाओं, प्रायवेट, प्रायवेट अनुदान प्राप्त शालाओं , केंद्र शासित शालाओं, मदरसों, स्थानीय निकाय की शालाओं, आगनबाड़ी केंद्रों तथा किशोर न्याय अधिनियम 2015 अंतर्गत संचालित चाइल्ड केयर इंस्टीट्यूट मे 1 से 19 वर्ष आयु के समस्त बच्चों का कृमिमुक्ति दिवस पर कृमिनाशक दवा का वितरण किया जायेगा, ताकि मिट्टी जनित कृमि सक्रमण की रोकथाम की जा सके।

भारी मात्रा में अवैध शराब लिए आरोपी को कोतवाली पुलिस ने किया गिरफ्तार

07 कार्टूनों में रखे देशी प्लेन मदिरा के 350 पाव जब्त

कटनी, (स्वतंत्रमत)। पुलिस अधीक्षक अभिजीत कुमार रंजन भापुसे द्वारा आगामी त्यौहारों को लेकर पूर्ण सतर्कता बरतने व अवैध नशे के विरूद्ध प्रभावी कार्यवाही किए जाने हेतु निर्देशित किया गया है। इसी तारतम्य में थाना प्रभारी कोतवाली निरी. आशीष कुमार शर्मा को मुखबिर से सूचना प्राप्त हुई कि एक 19-20 साल का लड़का बैलट घाट के पास झाड़ियों में देशी शराब के कार्टून छिपाकर रख रहा है और मौका देखकर उन्हें बेचने की फिराक के लगा है। मुखबिक की सूचना पर तत्काल वरिष्ठ अधिकारियों को अवगत कराते हुए मौके पर थाना कोतवाली से प्रआर अजीत मिश्रा को हमराह स्टाफ के रवाना किया गया। जो मुखबिर के बताए स्थान पर एक लड़का जो

लाल रंग की टी-शर्ट पहने था झाड़ियों में छिप गया। जिसे हमराह स्टाफ की मदद से घेराबंदी कर पकड़ा गया। नाम पता पूछने पर अपना नाम सूजल प्रजापति पिता ओमप्रकाश प्रजापति उम्र 19 वर्ष निवासी आधारकाप कटनी का होना बताया। आसपास तलाश करने पर झाड़ियों में सफेद रंग की बोरी से के देशी शराब के 07 कार्टून मिले जिन्हें खोलकर चैक करने पर प्रत्येक कार्टून में 180 मिली के 50-50 पाव देशी प्लेन मदिरा के रखे हुए थे।

आरोपी के कब्जे से जप्त शराब की कुल मात्रा 63 लीटर है जिसकी कुल कीमत 24500 रू है। आरोपी का कृत्य धारा 34(2) आबकारी अधिनियम का घटित करना पाए जाने पर विधिवत मौके से गिरफ्तार कर थाना लाया गया एवं थाना कोतवाली कटनी में अपक्रं. 671/24 धारा 34 (2) आबकारी अधिनियम का पंजीबद्ध किया जाकर विवेचना में लिया गया है। आरोपी के विरूद्ध पूर्व से थाना कोतवाली कुल 02 अपराध पंजीबद्ध होना पाए गए है। गिरफ्तार आरोपी का नाम सूजल प्रजापति पिता ओमप्रकाश प्रजापति उम्र 19 वर्ष निवासी आधारकाप कटनी जप्त मादक पदार्थ मात्रा व कीमत-350 पाव देशी प्लेन मदिरा 63 ली कीमती 24500 रू पुलिस कार्यावाही में विशेष भूमिका पुलिस अधीक्षक अभिजीत कुमार रंजन के निर्देशन में एवं अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक डॉ. संतोष डेहरिया, नगर पुलिस अधीक्षक के मार्गदर्शन में थाना प्रभारी कोतवाली आशीष कुमार शर्मा, अजीत मिश्रा, अभिषेक राय, राहुल तिवारी एवं मयंक सिंह की अहम भूमिका रही।

दिल्ली पब्लिक स्कूल में आज से वार्षिक क्रीड़ा उत्सव का आयोजन

कटनी, (स्वतंत्रमत)। दिल्ली पब्लिक स्कूल में वार्षिक क्रीड़ा उत्सव की शुरुवात हुई, जिसमें कक्षा तीसरी एवं चौथी के विद्यार्थियों के लिए बैडमिंटन प्रतियोगिता दो राउंड में आयोजित की गई। कार्यक्रम की शुरुआत माँ सरस्वती की प्रतिमा के सामने दीप प्रज्वलित कर, पुष्प अर्पित कर एवं सरस्वती वंदना गाकर की। बच्चों का प्रदर्शन कड़ी शानदार एवं काबिले तारीफ था। बच्चों के चेहरे खुशी से फूले नहीं समा रहे थे, सभी अपनी-अपनी बारी का बेसब्री से इंतजार कर रहे थे। खेलना हमारे शारीरिक दक्षता और क्षमता को बढ़ाता है। यह हमारे हृदय को मजबूत बनाता है, रक्त परिसंचरण को बढ़ाता है और मोटापे को कम करता है। खेलने से हमारे शरीर की मांसपेशियाँ मजबूत होती हैं, हड्डियाँ मजबूत होती हैं और हमारा ऊर्जा स्तर बढ़ता है। खेल हमारे मानसिक विकास के लिए भी महत्वपूर्ण है। विद्यार्थी जीवन में अनुशासन पढ़ाई का जितना महत्व है उतना ही महत्व खेल कूद का भी हैं। विद्यालय में बच्चों को खेलों के माध्यम से कई तरह के कौशल सिखाते हैं और टीमवर्क को प्रोत्साहित करते हैं।

समर्थन मूल्य पर धान, ज्वार एवं बाजरा उपार्जन हेतु किसान स्वयं के मोबाइल से घर बैठे कर सकेंगे पंजीयन

कटनी, (स्वतंत्रमत)।

खरीफ विपणन वर्ष 2024-25 में समर्थन मूल्य पर धान, ज्वार एवं बाजरा उपार्जन के लिये किसान पंजीयन प्रक्रिया का निर्धारण कर दिया गया है। किसान 19 सितम्बर से 4 अक्टूबर तक पंजीयन करा सकते हैं। कलेक्टर ने किसानों से आग्रह किया है कि निर्धारित समय में पंजीयन करा लें, जिससे किसी भी प्रकार की असुविधा नहीं हो। उन्होंने बताया है कि किसान पंजीयन की व्यवस्था को सहज और सुगम बनाया गया है। किसान स्वयं के मोबाईल से घर बैठे पंजीयन कर सकेंगे। किसानों को पंजीयन केन्द्रों में लाईन लगाकर पंजीयन कराने की समस्या से मुक्ति मिलेगी। किसानों के मोबाईल से पंजीयन करने की सुविधा के अतिरिक्त अन्य व्यवस्थाएँ भी सुनिश्चित की गई हैं। पंजीयन की नि:शुल्क व्यवस्था ग्राम पंचायत और जनपद पंचायत कार्यालयों में स्थापित सुविधा केन्द्र पर, तहसील कार्यालयों में स्थापित सुविधा केन्द्र पर सहकारी समितियों एवं सहकारी विपणन संस्थाओं द्वारा संचालित पंजीयन केन्द्र पर तथा एम.पी. किसान एप पर भी की गई है। पंजीयन की सशुल्क व्यवस्था एम.पी. ऑनलाईन कियोस्क, कॉमन सर्विस सेन्टर कियोस्क, लोक सेवा केन्द्र और निजी व्यक्तियों द्वारा संचालित साइबर कैफे पर की गई है। इसके लिए प्रति पंजीयन अधिकतम 50 रूपये से अधिक शुल्क नहीं लिया जाएगा। किसान पंजीयन के लिए भूमि संबंधी दस्तावेज़ एवं किसान के आधार कार्ड एवं अन्य फोटो पहचान पत्रों का समुचित परीक्षण कर उनका रिकार्ड रखा जाना अनिवार्य होगा। सिकमी,बटाईदार,कोटवार एवं वन पट्टाधारी किसान के पंजीयन की सुविधा केवल सहकारी समिति एवं सहकारी विपणन सहकारी संस्था द्वारा संचालित पंजीयन केन्द्रों पर उपलब्ध होगी। इस श्रेणी के शत-प्रतिशत किसानों का सत्यापन राजस्व विभाग द्वारा किया जाएगा।

उपार्जित फसल के भुगतान हेतु बैंक खाता

किसान द्वारा समर्थन मूल्य पर विक्रय उपज का भुगतान प्राथमिकता के आधार पर किसान के आधार लिंक बैंक खाते में किया जाएगा। किसान के आधार लिंक बैंक खाते में भुगतान करने में किसी कारण से समस्या उत्पन्न होने पर किसान द्वारा पंजीयन में उपलब्ध कराये गए बैंक खाते में भुगतान किया जा सकेगा। किसान पंजीयन के समय किसान को बैंक खाता नंबर और आई एफ एस सी कोड की जानकारी उपलब्ध करानी होगी। अक्रियाशील बैंक खाते, संयुक्त बैंक खाते एवं फिनो, एयरटेल, पेटीएम, बैंक खाते

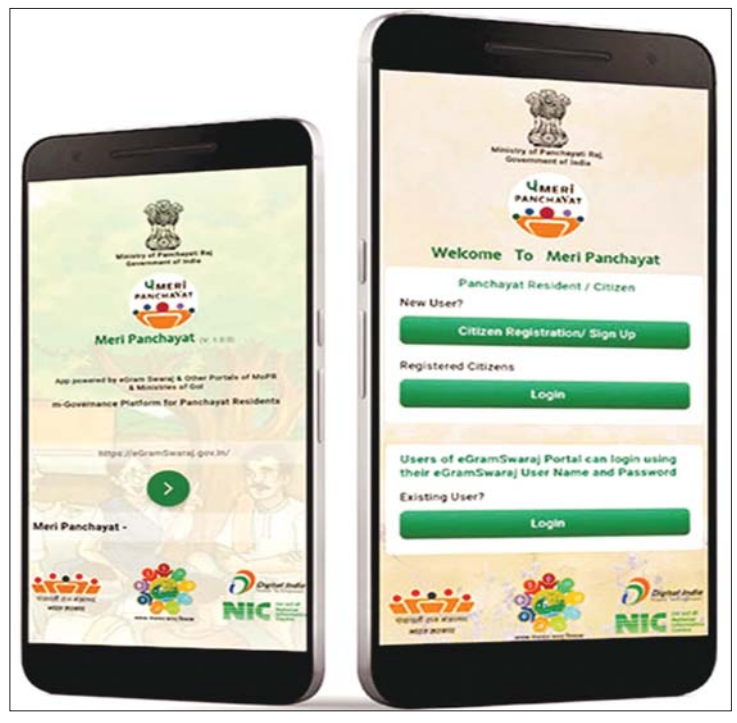

पंजीयन में मान्य नहीं होंगे। पंजीयन व्यवस्था में बेहतर सेवा प्राप्त करने के लिए यह जरूरी होगा कि किसान अपने आधार नंबर से बैंक खाता और मोबाईल नंबर को लिंक कराकर उसे अपडेट रखें।

जिला और तहसील स्तर पर स्थापित आधार पंजीयन केन्द्रों को क्रियाशील रखा जाए ताकि किसान वहां जाकर आसानी से अपना मोबाईल नंबर एवं बायोमेट्रिक अपडेट करा सके। इस कार्य के लिए पोस्ट ऑफिस में संचालित आधार सुविधा केन्द्र का भी उपयोग किया जा सकता है। आधार नंबर से बैंक खाता लिंक कराने के लिए बैंकों के साथ भी समन्वय आवश्यक होगा। किसान के आधार लिंक बैंक खाते के सत्यापन हेतु पंजीयन के दौरान ही 1 रूपये का ट्रांजेक्शन मध्यप्रदेश राज्य आपूर्ति निगम द्वारा ई-उपार्जन, जे आई टी पोर्टल के माध्यम से कराया जाएगा।

पंजीयन कराने और फसल बेचने के लिए आधार नंबर का वेरिफिकेशन कराना अनिवार्य होगा। वेरीफिकेशन आधार नंबर से लिंक मोबाईल नंबर पर प्राप्त ओ टी पी से या बायोमेट्रिक डिवाईस से किया जा सकेगा। किसान का पंजीयन केवल उसी स्थिति में हो सकेगा जबकि किसान के भू-अभिलेख के खाते एवं खसरे में दर्ज नाम का मिलान आधार कार्ड में दर्ज नाम से होगा। भू-अभिलेख और आधार कार्ड में दर्ज नाम में विसंगति होने पर पंजीयन का सत्यापन तहसील कार्यालय से कराया जाएगा।

सत्यापन होने की स्थिति में ही उक्त पंजीयन मान्य होगा। विगत रबी एवं खरीफ के पंजीयन में जिन किसानों के मोबाइल नंबर उपलब्ध हैं, उन्हें एसएमएस से सूचित करने के निर्देश दिये गये हैं। गांव में डोडी पिटवाकर ग्राम पंचायतों के सूचना पटल पर पंजीयन सूचना प्रदर्शित कराने तथा समिति/ मंडी स्तर पर बैनर लगवाने के निर्देश भी दिये गये हैं। किसान पंजीयन की सभी प्रक्रियाएँ समय-सीमा में पूर्ण करने के निर्देश संबंधित अधिकारियों को दिये गये हैं।

एशियन चैंपियंस ट्रॉफी में भारत ने जापान को 5-1 से हराया

सुखजीत और अभिषेक ने दो मिनट में 2 गोल किए; अगला मुकाबला मलेशिया से

हुलुनरबुइर (वार्ता)

भारत ने सोमवार को एशियन चैंपियंस ट्रॉफी 2024 टूर्नामेंट के अपने दूसरे मैच में जापान को 5-1 से हराया। यह टूर्नामेंट में भारत की लगातार दूसरी जीत है और इसी के साथ वह तालिका में छह अंक के साथ शीर्ष पर है। अपने पहले मुकाबले में रविवार को भारत ने मेजबान चीन को 3-0 से हराया। डिफेंडिंग चैंपियन भारत की ओर से सुखजीत सिंह ने 2 अभिषेक, संजय और उत्तम सिंह ने 1-1 गोल किया। जबकि जापान की तरफ से काउंटर अटैक में मात्सुमोतो काजुमासा ने गोल किया।

शुरुआती 2 मिनट में भारत ने दो गोल किए

भारतीय टीम ने इस मुकाबले के शुरुआती 2 मिनट में ही दो गोल दागकर जापान को बैकफुट पर भेज दिया। टीम के लिए सुखजीत सिंह ने पहला और अभिषेक ने दूसरा गोल किया। टीम ने शुरुआती दोनों गोल फील्ड गोल किए। दूसरे क्वार्टर की शुरुआत भी गोल के साथ हुई। मैच के 17वें मिनट में भारत को पेनाल्टी कॉर्नर मिला। जिसे संजय ने गोल में तब्दील कर भारत की बढ़त को 3-0 कर दिया।

तीसरे क्वार्टर में जापान ने किया पहला गोल

शुरुआती दो क्वार्टर में कई मौके गंवाने के बाद आखिरकार तीसरे क्वार्टर की शुरुआत में जापान ने अपना पहला गोल किया। मात्सुमोतो काजुमासा ने मैच के 41वें मिनट में फील्ड गोल कर अपनी टीम का खाता खोला।

आखिरी क्वार्टर में भारत के किए दो गोल

भारत ने आखिरी क्वार्टर में मैच को एकतरफा कर दिया। उत्तम और सुखजीत ने एक के बाद एक दो गोल किए। मैच के 54वें मिनट में उत्तम सिंह ने फील्ड गोल किया। जबकि मैच के आखिरी मिनट में सुखजीत सिंह ने मैच में अपना दूसरा गोल दागते हुए भारत की बढ़त को 5-1 कर दिया।

पॉइंट्स टेबल में भारत पहले नंबर पर-एशियाई चैंपियंस ट्रॉफी के पॉइंट्स टेबल पर भारत पहले नंबर पर है। उसके 2 मैच में 2 जीत के साथ 6 पॉइंट्स है। दूसरे नंबर पर साउथ कोरिया है। उसके 2 मैच में 2 हार के साथ 2 पॉइंट्स है। ये 2 पॉइंट्स कोरिया को बाकी टीम से गोल डिफरेंस कम होने की वजह से मिला है। पाकिस्तान 2 पॉइंट्स के साथ तीसरे स्थान पर है।

एशियाई चैंपियंस ट्रॉफी 2024 के लिए भारतीय पुरुष हॉकी टीम

गोलकीपर: कृष्ण बहादुर पाठक, सूरज करकेरा। **डिफेंडर:** जरमनप्रीत सिंह, अमित रोहिदास, हरमनप्रीत सिंह (कप्तान), जुगराज सिंह, संजय, सुमित। **मिडफील्डर्स:** राज कुमार पाल, नीलकंठ शर्मा, विवेक सागर प्रसाद (उप कप्तान), मनप्रीत सिंह, मोहम्मद राहील मौसीन। **फॉरवर्ड:** अभिषेक, सुखजीत सिंह, अरिजीत सिंह हुंदल, उत्तम सिंह, गुरजोत सिंह।

राइवल पकिस्तान से भारत का मुकाबला 14 सितंबर को होगा। टूर्नामेंट का फाइनल 17 सितंबर को खेला जाएगा।

इटली के जैनिक सिनर ने जीता यूएस ओपन

करियर का दूसरा ग्रैंड स्लैम टाइटल जीता, अमेरिका के टेलर फ्रिट्ज को हराया

न्यूयॉर्क । दुनिया के नंबर-1 टेनिस खिलाड़ी जैनिक सिनर ने यूएस ओपन का मेंस सिंगल्स टाइटल जीत लिया है। इटैलियन स्टार ने अमेरिका के टेलर फ्रिट्ज को 6-3, 6-4, 7-5 से हराया। वे यूएस ओपन जीतने वाले इटली के पहले पुरुष खिलाड़ी बने हैं। साल 2015 में इटली की फ्लाविया पैनेटा ने विमेंस सिंगल्स का टाइटल जीता था। 23 साल के सिनर ने करियर का दूसरा ग्रैंड स्लैम टाइटल जीता है। उन्होंने 2024 की शुरुआत में ऑस्ट्रेलिया ओपन भी जीता था। सिनर ने जीत के बाद एक्स पर लिखा- शुक्रिया न्यूयॉर्क, 2 हफ्तों के शानदार प्रदर्शन के बाद यहां अपना दूसरा ग्रैंड स्लैम जीतना विशेष रहा। समर्थन के लिए आप सभी का धन्यवाद।

2 घंटे से ज्यादा चला मुकाबला

न्यूयॉर्क में रविवार देर रात शुरु हुआ फाइनल मुकाबला 2 घंटे 16 मिनट तक चला। इसमें टॉप सीड सिनर का दबदबा देखने को मिला। उन्होंने पहले सेट को 6-3 से जीता। फिर दूसरे सेट को 6-4 से जीतते हुए बढ़त बनाई और आखिरी सेट को 7-5 से जीतते हुए मैच अपने नाम किया।

फ्रिट्स के पास खिताब जीतने का मौका था

दूसरी ओर अमेरिका के टेलर फ्रिट्स पहला ग्रैंड स्लैम टाइटल जीतने से चूक गए। 18 साल बाद कोई अमेरिका का खिलाड़ी यूएस ओपन में मेंस सिंगल्स के फाइनल में पहुंचा था। उनसे पहले 2006 में एंडी रॉडिक ने यह कारनामा किया था। फ्रिट्ज के पास पहला ग्रैंड स्लैम जीतने का मौका था, लेकिन वे कामयाब नहीं पाए। साल 2003 के बाद से यूएस ओपन पुरुष सिंगल्स में अमेरिका का कोई खिलाड़ी खिताब को जीत नहीं पाया है।

सिनर के लिए शानदार साल

सिनर के लिए साल 2024 शानदार रहा। उन्होंने जनवरी में ऑस्ट्रेलिया ओपन जीतकर इसकी शुरुआत की। उसके बाद मियामी ओपन, सिनसिनाटी ओपन, हाले ओपन और रॉटर्डम ओपन में जीते। अब सिनर ने साल का आखिरी ग्रैंड स्लैम भी जीत लिया है।

दक्षिण अफ्रीका ने अफगानिस्तान और आयरलैंड के साथ होने वाली सीरीज के लिए टीम की घोषणा की

केपटाउन (वार्ता)। संयुक्त अरब अमीरात (यूएई) की मेजबानी में दक्षिण अफ्रीका ने अफगानिस्तान और आयरलैंड के साथ होने वाली एकदिवसीय और टी-20 श्रृंखला के लिए टीम की घोषणा की है। दक्षिण अफ्रीका के सफेद गेंद के प्रमुख कोच रॉब वाल्टर ने टीम की घोषणा करते हुए कहा कि ऑलराउंडर एंडिले सिमेलेने को पहली बार टीम में शामिल किया गया है इसके अलावा, टी-20 खेल चुके ऑलराउंडर जेसन स्मिथ और स्पिनर नकबा पीटर एकदिवसीय टीम में पर्दापण करेंगे।

श्रीलंका ने तीसरे टेस्ट मैच में इंग्लैंड को आठ विकेट हराया

ओवल (वार्ता)। पथुम निसंका (नाबाद 127) की शतकीय और उनकी एंजोल मैथ्यू (नाबाद 33) के साथ तीसरे विकेट के लिये करीब 111 रनों की अवजित साझेदारी के दम पर श्रीलंका ने तीसरे टेस्ट मैच के चाथे दिन सोमवार को इंग्लैंड को आठ विकेट से हरा दिया है। श्रीलंका को जीत के लिए 219 रनों के लक्ष्य मिला था। श्रीलंका ने कल के एक विकेट पर 94 के स्कोर से आगे खेलना शुरु किया 20वें ओवर में गस ऐटकिंसन ने कुल मेंडिस (39) को आउट कर पवेलियन भेज दिया। इसके बाद पथुम निसंका ने एंजोल मैथ्यूज ने शानदार खेल का मुजाहिरा करते हुए श्रीलंका को आठ विकेट से जीत दिला दी। इससे पहले तीसरे दिन पथुम निसंका और डी करुणारत्ने ने संभल शुरुआत की लेकिन अभी टीम का स्कोर 39 रन पहुंचा था कि क्रिस वोक्स ने कुरणारत्ने को अपनी ही गेंद पर कैच आउट कर पवेलियन भेज दिया। तीसरे दिन का खेल समाप्त होने के समय श्रीलंका का स्कोर एक विकेट पर 94 रन था। कुसल मेंडिस और निसंका के बीच दूसरे विकेट के लिए 69 रनों की साझेदारी हुई।

गस ऐटकिंसन ने मैच के चौथे दिन कुसल मेंडिस को बशीर के हाथों कैच आउटकरा श्रीलंका को दूसरा झटका दिया। चौथे नंबर पर बल्लेबाजी करने आये एंजोल मैथ्यू ने निसंका के साथ धैर्यपूर्ण पारी खेलते हुए अपनी टीम को जीत दिला दी। निसंका ने (नाबाद 111) और एंजोल मैथ्यू (नाबाद 32) रनों की पारी खेली।

अफगानिस्तान बनाम न्यूजीलैंड टेस्ट मैच का पहले दिन का खेल रद्द

ग्रेटर नोएडा (वार्ता)। न्यूजीलैंड और अफगानिस्तान के बीच एकमात्र टेस्ट के पहले दिन सोमवार को मैदान गीली होने के कारण खेल रद्द कर दिया गया। आज यहां अधिकारियों ने दिन भर कई बार निरीक्षण करने के बाद मैदान के खिलाड़ियों के उतरने के लिए सही नहीं पाये जाने पर दिन के खेल को रद्द करने का फैसला किया। हालांकि पूरे दिन मौसम साफ रहा और धूप रही, लेकिन मैदान से पानी निकासी की सुविधाएं के अभाव के कारण दिन के खेल रद्द किया गया।

एसबीआई फाउंडेशन ने की आशा छात्रवृत्ति 2024 की घोषणा

नयी दिल्ली (वार्ता) देश के सबसे बड़े बैंक भारतीय स्टेट बैंक की सीएसआर शाखा एसबीआई फाउंडेशन ने अपने प्रमुख आशा छात्रवृत्ति कार्यक्रम के तीसरे संस्करण की घोषणा की है जो देश भर में वंचित पृष्ठभूमि के 10,000 मेधावी छात्रों को सहायता देगा। बैंक ने आज यहां जारी बयान में कहा कि कक्षा 6 से स्नातकोत्तर स्तर तक के छात्र अब एक वर्ष में 15,000 रुपये से लेकर 20,00,000 रुपये तक की छात्रवृत्ति प्राप्त कर सकते हैं। यह कार्यक्रम स्कूली छात्रों, स्नातक, स्नातकोत्तर के साथ-साथ भारत में आईआईटी और आईआईएम में नामांकित छात्रों के लिए विशेष श्रेणियां प्रदान करता है। विशेष रूप से, एससी और एसटी छात्रों के लिए डिज़ाइन की गई 'विदेश में अध्ययन' श्रेणी दुनिया भर के प्रतिष्ठित संस्थानों से मास्टर्स और उससे ऊपर की पढ़ाई करने में उनके लिए एक बड़ी सहायताके रूप में कार्य करेगी। छात्रवृत्ति के लिए आवेदन 1 अक्टूबर 2024 तक किया जा सकता है। छात्रवृत्ति की पात्रता और समयसीमा के बारे में विस्तृत जानकारी वेबसाइट पर उपलब्ध है, और छात्र हेल्पलाइन पर भी पूछताछ कर सकते हैं।

योगासन के खिलाड़ी एशियन खेलों में लेंगे हिस्सा

जबलपुर (स्वतंत्र मत)। भारत मंडपम नई दिल्ली में आयोजित एशियाई ओलंपिक परिषद् की 44वीं आमसभा में योगासन खेल को एशियाई खेलों में शामिल करने का ऐतिहासिक निर्णय लिया गया। यह निर्णय भारतीय खेल विशेषत: योगासन खिलाड़ियों के लिए गर्व का विषय है। अधिकारियों और कई सदस्य देशों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। भारत सरकार और योगासन भारत ने इस निर्णय के लिए विशेष प्रयास किए, जिसके परिणामस्वरूप योगासन को एक खेल के रूप में मान्यता दी गई और इसे एशियाई खेलों में स्थान मिला। आमसभा में भारत के राजा रणधीर सिंह को

ओसीए के अध्यक्ष के रूप में चुना गया। उन्होंने कहा कि वर्ष 2026 में जापान के नागोया में होने वाले एशियाई खेलों का कैलेंडर पूर्व में ही तैयार कर लिया गया है, इसलिए 2026 के एशियाई खेलों में योगासन को प्रदर्शन खेल के रूप में सम्मिलित किये जाने का निर्णय लिया गया। इसे एशियाई खेलों में शामिल करना एशिया की प्राचीन विरासत को सम्मान देने का एक महत्वपूर्ण कदम है। भारतीय ओलंपिक संघ की अध्यक्ष पीटी ऊषा ने जून में ओसीए अध्यक्ष को योगासन को एशियाई खेलों में शामिल करने हेतु प्रस्ताव पत्र के माध्यम से भिजवाया था। खेल मंत्री मनसुख मांडविया ने भी इस मौके पर अपनी खुशी जाहिर की और कहा कि यह हमारे लिए गर्व की बात है कि योग, जो भारत की सांस्कृतिक धरोहर है, अब योगासन के रूप में एशियाई खेलों का हिस्सा बनेगा। आमसभा में हरियाणा, गुजरात एवं महाराष्ट्र के योगासन खिलाड़ियों द्वारा योगासन खेल में सम्मिलित अलग-अलग इवेंट्स का अद्भुत प्रदर्शन किया गया। इस अवसर पर वर्ल्ड योगासन के महासचिव डॉ जयदीप आर्य, योगासन भारत के अध्यक्ष उदित सेठ, एशियन योगासन के अध्यक्ष डॉ संजय मालपानी, महासचिव उमंग डॉन, कोषाध्यक्ष उमेश नारंग एवं योगासन भारत के कोषाध्यक्ष रचित कौशिक उपस्थित रहे।

गोयल ने ऑटो कंपोनेंट क्षेत्र को निर्यात 100 अरब डॉलर तक पहुंचाने का दिया लक्ष्य

नयी दिल्ली, (वार्ता) वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री पीयूष गोयल ने सोमवार को विश्वास जताया कि भारत का ऑटो कंपोनेंट क्षेत्र 2030 तक 100 अरब डॉलर के निर्यात लक्ष्य को हांसिल कर लेगा और यह क्षेत्र रोजगार देने वाले प्रमुख क्षेत्रों में शामिल होगा। श्री गोयल राजधानी में ऑटोमोटिव कंपोनेंट विनिर्माताओं के मंच एकमा के 64वें वार्षिक सत्र को सम्बोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि भारत सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) के हिसाब से दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनने की ओर बढ़ रहा है और देश का वाहन- कलपुर्जा बनाने वाला क्षेत्र दुनिया में इस समय भी तीसरे नंबर पर है और इसे विश्व में पहला स्थान हासिल करने का प्रयास करना चाहिये। उन्होंने इस क्षेत्र के उद्यमियों को यह लक्ष्य हासिल करने के लिये एक वृहद् योजना निर्धारित करने का आग्रह किया। उन्होंने कहा कि इस क्षेत्र को तकनीकों में सुधार के साथ-साथ सहज ढंग से अपना विस्तार करने का प्रयास करना चाहिये और दुनिया के अन्य कंपनियों के साथ जुड़ना चाहिये। श्री गोयल ने ऑटो कंपोनेंट उद्योग को अनुसंधान एवं विकास (आरएंडडी) कार्य पर अधिक ध्यान देने का आग्रह करते हुये कहा कि उन्हें सरकार द्वारा स्थापित किये जा रहे एक लाख करोड़ रुपये के कोष एएनआरए (राष्ट्रीय अनुसंधान प्रतिष्ठान) का लाभ चाहिये और वाहन निर्माण क्षेत्र में शैक्षणिक संस्थानों के साथ निजी सरकारी भागीदारी में सहयोग करना चाहिये।

लिवाली की बदौलत शेयर बाजार में तेजी लौटी

मुंबई (वार्ता)। विश्व बाजार के मिलेजुले रुख के बीच स्थानीय स्तर पर एफएमसीजी, बैंकिंग, वित्तीय सेवाएं और कंज्यूमर ड्यूरेबल्स समेत पांच समूहों में हुई लिवाली की बदौलत आज शेयर बाजार में तेजी लौट आई।

बीएसई का तीस शेयरों वाला संवेदी सूचकांक सेंसेक्स 375.61 अंक की छलांग लगाकर 81,559.54 अंक और नेशनल स्टॉक एक्सचेंज (एनएसई) का निफ्टी 84.25 अंक चढ़कर 24,936.40 अंक पर बंद हुआ।

हालांकि दिग्गज कंपनियों के विपरीत बीएसई की मझौली और छोटी कंपनी के शेयरों पर

बिकवाली का दबाव रहा। इससे मिडकैप 0.28 प्रतिशत उतरकर 48,367.32 अंक और स्मॉलकैप 0.65 प्रतिशत लुढ़ककर 55,614.34 अंक पर आ गया। इस दौरान बीएसई में कुल 4181 कंपनियों के शेयरों में कारोबार हुआ, जिनमें से 2390 में बिकवाली जबकि 1650 में लिवाली हुई वहीं 141 में कोई बदलाव नहीं हुआ। वहीं, निफ्टी की 26 कंपनियों में तेजी जबकि 24 में गिरावट रही।बीएसई के पांच समूहों में बढ़त का रुख रहा। इससे सीडी 0.04, एफएमसीजी 1.65, वित्तीय सेवाएं 0.64, बैंकिंग 1.15 और कंज्यूमर ड्यूरेबल्स समूह के शेयर 0.73 प्रतिशत चढ़ गया। वहीं, ऊर्जा 1.22, इंडस्ट्रियल्स 0.56, आईटी 0.61, दूरसंचार 0.57, कैपिटल गुड्स 0.49, धातु 0.77, तेल एवं गैस 1.63, पावर 0.42 और टेक समूह के शेयरों में 0.37 प्रतिशत की गिरावट रही। अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर मिलाजुला रुख रहा। यूरोपीय केंद्री बैंक (ईसीबी) के ब्याज दर में कटौती की संभावना से यूरोपीय शेयर बाजार में तेजी रही, जिससे ब्रिटेन का एफ़टीएसई 0.76 और जर्मनी का डैक्स 0.69 प्रतिशत मजबूत रहा।

टोक्यो में दूसरा भारत-जापान वित्त संवाद संपन्न

नयी दिल्ली (वार्ता) जापान के अंतर्राष्ट्रीय मामलों के वित्त उप मंत्री अत्सुशी मिमुरा तथा भारत के वित्त मंत्रालय के आर्थिक कार्य विभाग के सचिव अजय सेठ ने टोक्यो में दूसरा भारत-जापान वित्त संवाद में भाग लिया जिसमें भारत में निवेश के और विस्तार की दिशा में विभिन्न वित्तीय विनियामक मुद्दों पर चर्चा की गई। वित्त मंत्रालय ने सोमवार को यहां जारी बयान में कहा कि छह सितंबर को आयोजित इस संवाद में जापानी प्रतिनिधिमंडल में वित्त मंत्रालय तथा वित्तीय सेवा एजेंसी के प्रतिनिधि शामिल थे। चर्चा में भारतीय पक्ष से वित्त मंत्रालय, भारतीय रिजर्व बैंक, भारतीय प्रतिभूति एवं विनिमय बोर्ड (सेबी), पेंशन निधि विनियामक एवं विकास प्राधिकरण, भारतीय बीमा विनियामक एवं विकास प्राधिकरण तथा अंतर्राष्ट्रीय वित्तीय सेवा केंद्र प्राधिकरण के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। प्रतिभागियों ने दोनों देशों की व्यापक आर्थिक स्थिति पर अपने विचार साझा किए। उन्होंने अन्य देशों में सहयोग, द्विपक्षीय सहयोग तथा अंतर्राष्ट्रीय मुद्दों पर चर्चा की। प्रतिभागियों ने विनियमन और पर्यवेक्षण, वित्तीय डिजिटलीकरण, साथ ही दोनों देशों में अन्य नीतिगत पहलों सहित वित्तीय क्षेत्र के मुद्दों पर भी अपने विचार साझा किए।

सोना, चांदी में गिरावट

इंदौर (वार्ता)। स्थानीय सर्राफा बाजार में सोना तथा चांदी सस्ती बिकी। आज सिक्का पूर्ववत ऊंचा बताया गया। विदेशी बाजार में सोना 2502 डालर व चांदी 2815 सेन्ट प्रति औंस बिकी। उल्लेखनीय है कि सोना- चांदी के भाव में देर रात तक फेरबदल होता रहता है। सोना 73400 रुपये प्रति 10 ग्राम। चांदी 83100 रुपये प्रति किलोग्राम।

शक्कर में पूछपरख,तेलों में तेजी, दाल मजबूत

इंदौर, (वार्ता)। सियागंज किराना बाजार में शक्कर में पूछपरख सुधार लिए बताई गई। खाद्य तेलों में तेजी दर्ज की गई। आज मूंगफली तेल महंगा बिका। तिलहन में मजबूती रही। दलहन तथा दाल में बढ़त हुई।

चावल में उठाव सामान्य वत बना रहा। सियागंज किराना बाजार में शक्कर में पूछपरख बताई गई। आज शक्कर में चार गाड़ी की

आवक हुई। खोपरा बूरा दिसावर के साथ मजबूत रहा। इसमें लिवाली रही, इससे यह सौ रुपये महंगी बिकी। साबूदाना में लिवाली रही। खाद्य तेलों में लिवाली से तेज़ी रही। आज मूंगफली तेल में 40 रुपये ऊंचे बोले गए। पाम तेल में सुधार रहा। आने वाले दिनों में खाद्य तेलों में मांग बढ़ने के आसार हैं। तिलहनों में सरसों में लिवाली से सुधार देखा गया। संयोगितागंज अनाज मंडी में दलहन जिन्सों में दाल मिलों की मांग रही। दालें मांग से मजबूती लिए रही। चावल में मांग बनी रही। शक्कर 3920 से 3960 रुपये प्रति क्विंटल। खोपरा गोला 150 से 170 रुपये प्रति किलोग्राम।

खोपरा बूरा 2700 से 4700 रुपये प्रति 15 किलोग्राम। हल्दी खडी 220 से 285 रुपये प्रति किलोग्राम। साबूदाना 6400 से 6900, पैकिंग में 7200 से 7300 रुपये प्रति क्विंटल। सरसों निमाड़ी 5400 से 5800, सोयाबीन 4500 से 4600 रुपये प्रति क्विंटल।

कार्यालय नगर पालिक निगम जबलपुर (म.प्र.)

निविदा सूचना

निम्नलिखित कार्य हेतु केन्द्रीयकृत प्रणाली में पंजीकृत ठेकेदारों से ऑनलाईन निविदायें आमंत्रित की जाती है। निविदा का विस्तृत विवरण वेबसाइट https://mptender.gov.in पर देखा जा सकता है।

क्र.	टेण्डर क्रमांक जारी दिनांक	कार्य का नाम	लागत राशि एवं समयावधि	निविदा प्रपत्र का मूल्य एवं EMD	निविद की अंतिम तिथि
1	2	3	4	5	6
01	Tender ID 2024_UAD_368707_1 PRO 185 Date 09.09.2024	संभाग क्र. 01 गढ़ा वीर दुर्गादास राठौर नया वार्ड क्र.71 अंतर्गत कोरी मोहल्ला में गोपाल रैकवार के घर से मेर सिंह के घर तक एम-30 सड़क एवं नाली निर्माण कार्य।	6.68 लाख तीन माह	2,000 6680/-	24.09.2024
02	Tender ID 2024_UAD_368707_2 PRO 185 Date 09.09.2024	संभाग क्र. 01 गढ़ा वीर दुर्गादास राठौर नया वार्ड क्र.71 अंतर्गत तेवर से श्याम लाल कोरी के घर से मेन रोड की ओर एम 30 सी.सी. सड़क एवं नाली निर्माण कार्य।	8.49 लाख तीन माह	2,000 8490/-	24.09.2024

नोटः- निविदा से संबंधित किसी भी प्रकार के संशोधन का प्रकाशन ऑनलाईन की वेबसाइट https://mptender.gov.in पर ही किया जावेगा पृथक से समाचार पत्र में प्रकाशन नहीं किया जावेगा।

कार्यपालन यंत्री
नगर पालिक निगम जबलपुर

पंजाब और हरियाणा को पीछे छोड़ेगा बुंदेलखण्डः डॉ. यादव

बीना में लाड़ली बहनों के खातों में 1574 करोड़ रुपए का अंतरण

भोपाल। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि बुंदेलखण्ड, पंजाब और हरियाणा को विकास में पीछे छोड़ेगा। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने पराक्रम और शौर्य की धरती बुदेलखंड के लिए विकास का बहुत बड़ा निर्णय लेकर केन-बेतवा नदी जोड़ो परियोजना की सौगात दी है। बुंदेलखण्ड में आईटी पार्क बनाया जाएगा। विकास का कारवां अब बुंदेलखण्ड और मध्यप्रदेश की धरती से होकर गुजरेगा। मध्यप्रदेश में नए जिलों और संभागों के गठन के लिए म.प्र. प्रशासनिक इकाई पुनर्गठन आयोग प्राप्त कर प्रतिवेदन देगा। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि प्रदेश में 22 हजार से अधिक थानों की सीमा बदलने का कार्य किया गया। आमजन की सुविधा के लिए बीना सहित अन्य नए जिले और संभाग बनाने की दिशा में कार्यवाही परिसीमन आयोग की अनुशंसा अनुसार की जाएगी। सागर में इसी माह रीजनल इंडस्ट्री कॉन्क्लेव में देश भर के उद्योगपति आएंगे। प्रदेश में सभी क्षेत्रों में विकास के कार्य किये जा रहे है। कार्यक्रम में मंत्रीगण, सांसद, विधायक और अन्य जन प्रतिनिधियों के साथ आम नागरिक बड़ी संख्या में उपस्थित थे। मुख्यमंत्री डॉ. यादव आज सागर जिले के बीना में लाड़ली बहना योजना की हितग्राही बहनों के खाते में 1574 करोड़ रुपए, सामाजिक सुरक्षा पेंशन के हितग्राहियों को 332. 43 करोड़ रुपए की राशि के अंतरण एवं विकास कार्यों के भूमिपूजन एवं लोकार्पण कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे। कार्यक्रम का मंत्री गोविन्द सिंह, पूर्व मंत्री गोपाल भार्गव, सांसद लता वानखेड़े एवं बीना विधायक निर्मला सप्रे ने भी संबोधित किया।

एडीएम-एएसपी अपने कार्यालयों में रहेंगे

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि बीना में आम जनता की सुविधा के लिए एडीएम और एडीशनल एस.पी अपने कार्यालयों में रहेंगे। निकट स्थित प्राचीन नगर एरण में संस्कृति विभाग की ओर से एरण उत्सव का आयोजन किया जाएगा। लघु एवं वृहद उद्योगों के माध्यम से इस अंचल के युवाओं को लाभान्वित किया जाएगा। नए उद्योग शुरू होने से लोगों को रोजगार मिलेंगे और पलायन जैसी स्थितियां नहीं बनेंगी। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने नया आईटीआई प्रारंभ करने सहित अनेक नए कार्यों के लिए घोषणा की।

नागरिक जमीन न बेचें, नक्शा बदलेगा

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि केन-बेतवा परियोजना के साथ ही बीना परियोजना इस क्षेत्र का नक्शा बदल देगी। समृद्धि का लाभ नागरिकों को मिलेगा। बीना सिंचाई परियोजना से 262 जुड़ेंगे। क्षेत्र में अनेक नई सड़कें भी बनाई जाएंगी। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में समय बदला है। हमारा मध्यप्रदेश पीछे नहीं रहेगा। हमारा प्रदेश देश का नम्बर वन राज्य बनेगा।

नए उद्योगों से विकास दरवाजे खुलेंगे

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि हाल ही में इंदौर-मनमाड़ रेल लाइन मंजूर की गई है, इससे मध्यप्रदेश के निमाड़ और मालवा अंचल ही नहीं बल्कि चंबल क्षेत्र और अन्य इलाकों से बंदरगाहों तक सीधे माल पहुंचाने का नेटवर्क बनेगा। नई रेल लाइन और औद्योगिक विकास के लिए किए जा रहे प्रयासों से मध्यप्रदेश में विकास के नए दरवाजे खुलेंगे। प्रत्येक संभाग में उद्योगों का विकास किया जा रहा है। युवाओं की क्षमता का उपयोग प्रदेश के हित में होगा। सागर में भी इसी माह रीजनल इंडस्ट्री कॉन्क्लेव हो रही है। सागर, इंदौर और भोपाल से विकास में पीछे नहीं रहेगा।

सरकार के जनकल्याणकारी कदम

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने राज्य सरकार के जनकल्याण के महत्वपूर्ण कदमों की चर्चा करते हुए कहा कि प्रदेश में गंभीर रोगियों को विमान से बड़े नगरों में उपचार के लिए भेजने की व्यवस्था की गई है। इसके साथ मध्यप्रदेश सरकार एयर कार्गो लाने जैसे बड़े कदम उठा रही है। इससे दुनिया भर में व्यापार-व्यवसाय किया जा सकेगा। गौ-वंश की सुरक्षा और सम्मान के लिए गौ-शालाएं बनाने और दस गाय से अधिक पालने पर एवं दुग्ध उत्पादन पर बोनस राशि देने का संकल्पित है सरकार। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि लाड़ली बहना योजना कभी बंद नहीं होगी। सरकार का यह प्रयास है कि आने वाले समय में बहनें प्रतिमाह दो हजार रुपए से लेकर पांच हजार रुपए तक की आय अर्जित करें। बहनों को स्व-रोजगार और लघु व्यवसाय के लिए आवश्यक सहयोग दिया जाएगा।

भाजपा का सदस्यता अभियान व्यक्ति को राष्ट्र प्रथम की भावना देता है : जयंत मलैया

बांदकपुर मंडल में वृहद सदस्यता अभियान का हुआ आयोजन

दमोह। भारतीय जनता पार्टी के संगठन पर्व के राष्ट्रव्यापी सदस्यता अभियान पूर्व मंत्री एवं दमोह विधायक जयंत मलैया, मंडल प्रभारी एवं जिला मीडिया प्रभारी राघवेंद्र सिंह परिहार, मंडल अध्यक्ष बृजेश सिंह ने दमोह विधानसभा क्षेत्र के बांदकपुर ग्रामीण मंडल में वृहद सदस्यता अभियान का आयोजन किया गया। आयोजन के पूर्व विधायक जयंत मलैया सहित सभी ने श्री जागेश्वरनाथ प्रभु के दर्शन कर पुण्य लाभ अर्जित किया। विधायक जयंत मलैया ने इस अवसर पर बताया कि भाजपा के करोड़ों कार्यकर्ता पार्टी की नीतियों पर आस्था व्यक्त करते हुए पुन: सदस्यता अभियान के अंतर्गत पार्टी में शामिल हो रहे हैं उन्होंने कहा कि इस अभियान के अंतर्गत बूथ स्तरीय सदस्यीय टीम तैयार की गई है जो आमजन के बीच जाकर केंद्र और राज्य सरकार की जनकल्याणकारी योजनाओं की जानकारी प्रदान करेगी। यह सदस्यता अभियान व्यक्ति को राष्ट्रप्रथम की भावना, जन सेवा के संकल्प, अंत्योदय के प्रण और विकसित भारत आत्मनिर्भर भारत के विजन के साथ जोड़ने का आंदोलन है। जिला मीडिया प्रभारी राघवेंद्र सिंह परिहार ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और मुख्यमंत्री मोहन यादव के सब का साथए सबका विकास सबके विश्वास के तर्ज पर पात्र लाभार्थियों को अंतिम पायदान तक बिना भेदभाव के लाभ दिया जा रहा है उन्होंने सदस्यता के पांच तरीकों का उल्लेख किया 8800002024 पर मिस कॉल करके, क्यूआर कोड स्कैन करके, नमो ऐप के माध्यम से, ऑफलाइन फॉर्म भरकर और अन्य डिजिटल माध्यमों से शामिल हो सकते हैं उन्होंने याद दिलाया कि पिछली बार मिस्ड कॉल के जरिए भाजपा ने 18 करोड़ से अधिक नए सदस्य जोड़े थे जिसमें पार्टी को विश्व की सबसे बड़ी पार्टी बनने का गौरव प्राप्त हुआ।

व्यापारियों से भाजपा में जुड़ने का आव्हानः-बैठक उपरांत पूर्व वित्त मंत्री जयंत मलैया ने बांदकपुर के हाट बाजार में व्यापारियों से भेंट कि बांदकपुर के विकास संबंधी विभिन्न विषयों पर व्यापारियों से चर्चा की और उनके सुझाव को गंभीरता पूर्वक सुना। इस दौरान विधायक ने व्यापारी वर्ग से भारतीय जनता पार्टी के सदस्यता अभियान के माध्यम से भाजपा से जुड़ने का आव्हान किया। पूर्व मंडल अध्यक्ष अभिलाष हजारी, संतोष रोहित, मंडल महामंत्री पूना बाइ, उपाध्यक्ष पप्पू सिंह, महिला मोर्चा जिला उपाध्यक्ष सुनीता सोनी, महिला मोर्चा मंडल अध्यक्ष रीता दुबे, महामंत्री तुलसा प्रजापति, शिकेन्द्र गुप्ता, हेमराज सिंह, युवा मोर्चा मंडल अध्यक्ष रधुवीर रजक, सरपंच सुनील डबुल्या, सीएल गौतम, सलैया सरपंच आनंद सिंह, धीर सिंह, भुजबल सिंह, अरविंद रजक, मुकेश सिंह, श्रीकांत गुप्ता सहित विकास जैन मंडल के कार्यकर्ताओं ने सदस्यता अभियान में सहभागिता निभाई।

गर्भवती महिला की जबलपुर में इलाज के दौरान मौत

हटा। रनेह थाना क्षेत्र के बंधा निवासी 19 वर्षीय गर्भवती महिला की जबलपुर में इलाज के दौरान मौत हो जाने का मामला सामने आया है। जानकारी अनुसार रीना पति सुनील अहिरवार 19 निवासी बंधा थाना रनेह पांच माह की गर्भवती थी जिसे शुक्रवार को इलाज के लिए सिविल अस्पताल हटा परिजनों द्वारा लाया गया जहां से हालत गंभीर होने पर जिला अस्पताल रैफर किया गया था, जहां खून की कमी पर महिला को खून चढ़ाया गया लेकिन हालत में सुधार नहीं होने पर जबलपुर रैफर कर दिया गया जहां दो दिन इलाज चला इसके बाद उसकी मौत हो गई। परिजन उसे लेकर अपने गांव आ गए। महिला नवविवाहित थी इसलिए परिजनों ने थाना रनेह में सूचना दी। पुलिस ने मर्ग कायम कर पोस्टमार्टम के लिए हटा सिविल अस्पताल भेजा जहां दो डाक्टरों की पैनल टीम ने पोस्टमार्टम किया। जानकारी अनुसार गर्भवती महिला कुछ दिनों पूर्व ही दिल्ली से मजदूरी कर अपने गांव आई थी। तबीयत खराब होने पर उसे दमोह में पहले एक निजी क्लीनिक पर स्त्री रोग विशेषज्ञ से इलाज लिया। यहां बता दें कि महिला की शादी मई में हुई थी। इस संबंध में रनेह थाना प्रभारी चंदन सिंह का कहना है कि नव विवाहिता महिला की जबलपुर में इलाज के दौरान मौत हो गई थी परिजन अस्पताल से बिना पोस्टमार्टम के ले आए थे थाना में सूचना के बाद मर्ग कायम कर पोस्टमार्टम कराया गया है। इस संबंध में बीएमओ डॉ उमाशंकर पटेल का कहना है कि बंधा निवासी एक गर्भवती महिला हटा इलाज के लिए आई थी गंभीर हालत में रैफर किया गया था। रनेह पुलिस एवं परिजनों ने महिला का पोस्टमार्टम कराया है।

भिंड में दूध बेचने वालों को पंजीयन कराना अनिवार्य

भिंड (वार्ता) मध्यप्रदेश के भिंड जिले में घर घर जाकर दूध बेचने वालों को अपना पंजीयन खाद्य विभाग में कराने के निर्देश दिए गए हैं। आधिकारिक सूत्रों के अनुसार दूध बेचने वालों को खाद्य विभाग की ओर से पंजीयन कराने पर एक पहचान पत्र जारी किया जाएगा। पूरे जिले में यह आवश्यक किया गया है। दूध की गुणवत्ता बरकरार रखने और इसमें मिलावट रोकने के उद्देश्य से यह कदम उठाया गया है। माना जा रहा है कि जिले में लगभग तीन से चार हजार व्यक्ति नागरिकों को दूध की आपूर्ति करते हैं।

भारतीय किसान संघ ने विभिन्न मांगों को लेकर सौंपा ज्ञापन

हटा। भारतीय किसान संघ ने कलेक्टर के नाम एक ज्ञापन तहसीलदार प्रवीण त्रिपाठी को सौंपा। जिसमें उल्लेख किया गया कि अति वर्षा के कारण उड़द और मूंग की फसल खराब हो गई है जिसका सर्वे कराकर मुआवजा दिया जाए। हटा कृषि मंडी चालू कराई जाए, किसानों को सिंचाई हेतु विधुत ट्रांसफार्मर क्षमता अनुसार उपलब्ध कराए जाए। पूर्व में खरीदी उड़द वर्ष 2018-19 की राशि दी जाए। सोयाबीन का समर्थन मूल्य 61 सौ रुपए किया जाए। इस मौके पर किसान संघ के आशीष चौबे, वीरेंद्र उपाध्याय, संतोष लोधी, नरेंद्र पटेल, राघवेन्द्र राजपूत, दुर्गेश, कडोरी आदि की उपस्थिति रही।

ग्वालियर-भोपाल-ग्वालियर इंटरसिटी एक्सप्रेस में लगेंगे 05 अतिरिक्त कोच

भोपाल (वार्ता)। मध्यप्रदेश के भोपाल और ग्वालियर स्टेशन के बीच चलने वाली इंटरसिटी एक्सप्रेस में रेलवे ने 09 सितंबर से अतिरिक्त कोच लगाने का निर्णय लिया है। पश्चिम मध्य रेलवे (पमरे) के भोपाल रेल मंडल के प्रवक्ता ने आज बताया कि आगामी त्योहारी सीजन में यात्रियों की सुविधा और प्रतीक्षा सूची को ध्यान में रखते हुए अतिरिक्त यात्री यातायात को क्लियर करने के उद्देश्य से गाड़ी संख्या 12198 / 12197 ग्वालियर-भोपाल-ग्वालियर इंटरसिटी एक्सप्रेस में 09 सितंबर से 31 दिसंबर तक सामान्य श्रेणी के 05 अतिरिक्त कोच अस्थायी रूप से लगाने का निर्णय लिया गया है। इस गाड़ी में अब कुल 21 कोच होंगे, जिसमें 16 सामान्य श्रेणी, 1 वातानुकूलित कुर्सीयान, 2 द्वितीय श्रेणी कुर्सीयान और 2 एसएलआरडी कोच हैं।

आकाश विजयवर्गीय बल्लाकांड में बरी

इंदौर (वार्ता)। इंदौर की विशेष अदालत ने आज यहां पूर्व विधायक आकाश विजयवर्गीय को लगभग पांच वर्ष पहले नगर निगम के अधिकारियों के साथ कथित मारपीट के मामले में बरी कर दिया। विशेष अदालत ने साक्ष्यों के अभाव में भारतीय जनता पार्टी के कद्दावर नेता कैलाश विजयवर्गीय के पुत्र आकाश विजयवर्गीय को निर्दोष करार दिया। इस मामले में यहां एमजी रोड थाने में प्राथमिकी दर्ज कराने वाले नगर निगम के कर्मचारियों ने अदालत के समक्ष अपने बयान में कहा कि उन्होंने आकाश विजयवर्गीय को बल्ला मारते हुए नहीं देखा। अदालत ने इस मामले की सुनवायी पूर्ण करने के बाद आज का दिन फैसले के लिए सुरक्षित रख लिया था। दरअसल लगभग पांच वर्ष नगर निगम का अमला एक स्थान पर अतिक्रमण हटाने गया था। तत्कालीन भाजपा विधायक आकाश विजयवर्गीय ने इस दौरान कथित तौर पर क्रिकेट के बल्ले से नगर निगम के कर्मचारी के साथ मारपीट कर दी थी।

पीएमएएजीवाई में चुने गए 7 हजार 307 गाँव

यहाँ 5 साल तक चलेंगे विकासमूलक काम, धार जिले में 689 गाँवों में जारी हैं 1 हजार 634 निर्माण कार्य

भोपाल । जनजातीय वर्ग के सामाजिक व आर्थिक हितों की रक्षा एवं इनकी बसाहटों के समग्र विकास के लिये भारत सरकार द्वारा विशेष केन्द्रीय सहायता के अंतर्गत प्रधानमंत्री आदि आदर्श ग्राम योजना (पीएमएएजीवाई) संचालित की जा रही है। इस योजना में मध्यप्रदेश के 47 जिलों के जनजातीय बहुल 7 हजार 307 गांव चुने गये हैं। योजना के तहत पाँच सालों में इन चयनित गांवों में विभिन्न क्षेणी के विकासमूलक कार्य कराये जाएंगे। प्रधानमंत्री आदि आदर्श ग्राम योजना के अंतर्गत वित्त वर्ष 2021-22 एवं 2022-23 में बड़वानी, भोपाल, बुरहानपुर, छतरपुर, दमोह, गुना, खण्डवा, नरसिंहपुर, राजगढ़, सिंगरौली, विदिशा, रीवा, झाबुआ, धार एवं श्योपुर कुल 15 जिलों के 2 हजार 523 गांवों में 133 करोड़ 14 लाख 62 हजार रूपये की लागत से बुनियादी सुविधाओं के विस्तार के साथ-साथ शैक्षणिक एवं कौशल उन्नयन से जुड़े 6 हजार 50 कार्य कराये गये हैं। अनूपपुर, मुरैना, सतना, सीधी, देवास, बैतुल, श्योपुर, सीधी, मंडला, उमरिया, नीमच, रतलाम, अलीराजपुर, मंदसौर एवं खरगोन कुल 15 जिलों के 1 हजार 675 गांवों में 4 हजार 27 विकास कार्यों के लिये 302 करोड़ 53 लाख 58 हजार रुपये की भेजी गई कार्ययोजना को वित्त वर्ष 2024-25 में भारत सरकार से मंजूरी मिल गई है। अब कार्ययोजना के अनुसार यहाँ स्वीकृत निर्माण कार्य कराये जा रहे हैं।

धार जिले के सर्वाधिक गाँवों में चल रहे हैं निर्माण कार्यः- प्रधानमंत्री आदि आदर्श ग्राम योजना में चयनित धार जिले में प्रदेश में सर्वाधिक 689 गांवों में वर्तमान में 1 हजार 634 से अधिक निर्माण कार्य कराये जा रहे हैं। भारत सरकार से इन कामों के लिये

136 करोड़ 35 लाख 12 हजार रूपये मंजूर किये गये हैं। मंजूर राशि में से 12 करोड़ 50 लाख 78 हजार रूपये की विकास राशि अबतक व्यय की जा चुकी है। भारत सरकार द्वारा मंजूर विकास राशि से इन 689 गांवों में आंगनवाड़ी भवनों, शासकीय उचित मूल्य की दुकानों, स्कूलों/छात्रावासों/आश्रम शालाओं में अतिरिक्त कक्षों, शौचालय, किचन शेड, भोजन कक्ष, विद्युतीकरण, पेयजल सुविधाओं का विस्तार, फर्नीचर, रंगाई-पुताई कार्य, उप स्वास्थ्य केन्द्रों/जन आरोग्य केन्द्रों में अतिरिक्त कक्षों, बाउंड्रीवाल निर्माण, सार्वजनिक शौचालय, पानी निकासी के लिये ड्रेनेज निर्माण कार्य कराये जा रहे हैं।

गांवों को मॉडल विलेज के रूप में विकसित करनाः- प्रधानमंत्री आदि आदर्श ग्राम योजना को 5 वित्त वर्षों (2021-22 से 2025-26) में क्रियान्वित किया जाना है। इस योजना का उद्देश्य विशिष्ट जनजातीय आबादी बहुल गांवों को एक आदर्श ग्राम (मॉडल विलेज) के रूप में विकसित करना है। वर्ष 2011 की जनगणना के आधार पर कम से कम 50 प्रतिशत जनजाति आबादी और कम से कम 500 की जनजाति आबादी वाले 36 हजार 428 से अधिक गांवों को इस योजना में कवर किया जाना है। योजना से 4 करोड़ 22 लाख जनजातीय आबादी लाभान्वित होगी। योजना में चुने गये सभी गांवों का एकीकृत सामाजिक-आर्थिक विकास किया जायेगा।

20 लाख 38 हजार रुपये प्रति गांव के मान से धनराशिः- योजना में सड़क संपर्क दूरसंचार संपर्क , विद्यालय, आंगनबाड़ी केंद्र, स्वास्थ्य उप-केंद्र, पेयजल सुविधा, जल निकासी और ठोस अपशिष्ट प्रबंधन आदि कार्य कराये जायेंगे। प्रधानमंत्री आदि आदर्श ग्राम योजना के तहत प्रशासनिक खर्चों सहित अनुमोदित गतिविधियों के लिए गैप फिलिंग के रूप में 20 लाख 38 हजार रुपये प्रति गांव के मान से धनराशि दी जा रही है। पीएमएएजीवाई में चिन्हित गांवों में बुनियादी ढांचे के विकास एवं सेवाओं के लिए अनुसूचित जनजाति घटक फंड व मौजूदा संसाधनों के समन्वित उपयोग के लिए भी प्रोत्साहित किया जा रहा है। चयनित गांवों में ग्राम विकास योजना से मंजूर शिक्षा, स्वास्थ्य, पेयजल, सड़क, आजीविका, वन-धन विकास, जल संरक्षण, कौशल विकास, संचार सुविधाओं का विकास एवं गांवों तक पहुंच मार्ग आदि कार्य कराये जायेंगे।

कार्यालय आयुक्त
नगर पालिक निगम, जबलपुर
पत्र क्रमांक/ संपदा (लीज)/2024/250
दिनांक-06/09/2024
::- लीज होल्ड भूखण्ड को भूमि स्वामी अधिकार में संपरिवर्तन हेतु सूचना ::-
सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि नगर निगम म्यु. लीज प्लाट क्रमांक-38/1, राईट टाऊन एक्सटेंशन स्थित लीज होल्ड भूखंड भाग क्षेत्रफल-3867 वर्गफूट (रहवास-2517 + व्यापारिक-1350) की श्री प्रमोद किशोर तिवारी पिता श्री नवल किशोर तिवारी पट्टेधारक हैं। लीज रहवास + व्यापारिक उपयोग हेतु दिनांक-02-04-2012 से 30 वर्षों के लिए अर्थात् दिनांक 01-04-2042 तक के लिए नवीनीकृत है। पट्टेधारी द्वारा उक्त लीज होल्ड भूखंड को भूमि स्वामी अधिकार (फ्री-होल्ड) में संपरिवर्तन किये जाने हेतु निर्धारित प्रारूप-3 में आवेदन सह शपथ पत्र प्रस्तुत किया गया है। अतः भूखंड को भूमि स्वामी अधिकार (फ्री-होल्ड) में संपरिवर्तन किये जाने के संबंध में जिस किसी को आपत्ति हो, तो इस प्रकाशन तिथि से 15 दिन के भीतर अपनी आपत्ति प्रमाण सहित कमरा नंबर- 23, संपदा शाखा में प्रस्तुत करें।
उपायुक्त (संपदा)
नगर पालिक निगम, जबलपुर

ब्राह्मण सभा के अध्यक्ष पर 2 अवैध शराब के मामले दर्ज

समाज के युवा वर्ग ने निष्पक्ष जांच के लिए दमोह में सौंपा ज्ञापन

दमोह। प्रगतिशील ब्राह्मण सभा के अध्यक्ष महेश पुरानी पर पिछले पंद्रह दिनों में दो अलग-अलग थानों में अवैध शराब के मामले दर्ज होने के विरोध में युवा वर्ग के लोगों ने अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक दमोह को एक ज्ञापन सौंपा है जिसमें उल्लेख किया गया है कि ब्राह्मण समाज के अध्यक्ष महेश पुरानी को अन्य प्रतिद्वंद्वी शराब ठेकेदारों द्वारा परेशान किया जा रहा है जिसमें उनकी सय हिंडोरिया थाना में अपराध क्रमांक 0367/24 एवं पटेरा थाना में अपराध क्रमांक 0204/24 पंजीबद्ध किया गया है जो पूर्णत: निराधार है। वह सामाजिक कार्यकर्ता हैं समाज में सक्रिय भागीदारी रखते हैं इसलिए उन पर दर्ज मामलों की जांच कराई जाए ज्ञापन सौंपने वालों में अनिल प्यासी, मनोज देवलिया, मनीष कुसमया, शुलभ दुबे, संस्कार तिवारी सहित अनेक ब्राह्मण समाज के युवाओं की उपस्थिति रही। एएसपी संदीप मिश्रा ने बताया कि प्राप्त ज्ञापन की जांच एसडीओपी पथरिया को सौंपी गई है। यहां बता दें कि पटेरा थाना के कुडई गांव में एक सप्ताह में दो बार बड़ी मात्रा में अवैध शराब पकड़ी गई थी जिसमें एक जगह से ही 98 पेटी शराब जप्त की थी जो करीब 882 लीटर 4 लाख 90 हजार रुपए कीमत की बताई गई थी। लगातार दो बार एक ही गांव में बड़ी मात्रा में शराब पकड़े जाने पर पुलिस की कार्यवाही पर सवालिया निशान लग रहा था इसके पूर्व कुछ दिनों पहले हिंडोरिया थाना क्षेत्र में चार पहिया वाहन से बड़ी मात्रा में शराब जप्त की गई थी।

कार्यालय म.प्र. गृह निर्माण एवं अधोसंरचना विकास मंडल, संभाग क्रमांक-2, धनवंतरी नगर जबलपुर
भूखण्ड लीज/हस्तांतरण / नामांतरण हेतु सूचना
सर्व साधारण सूचित किया जाता है कि सुभाष नगर महाराजपुर जबलपुर में भूखण्ड क्रमांक LIG-160 श्री समरजीत राय पिता श्री सुरजीत राय के नाम आबंटित है, जिसका विक्रय विलेख दिनांक 21/03/2016 को निष्पादित हो चुका है। उक्त भूखण्ड श्री समरजीत राय द्वारा दिनांक 08/02/2019 को विक्रय विलेख के माध्यम से श्रीमती नीलम राय जयसवाल पति श्री जितेन्द्र जयसवाल को विक्रय किया है अतः श्रीमती नीलम राय जयसवाल के द्वारा उक्त भूखण्ड उनके नाम लीज हस्तांतरण / नामांतरण हेतु ऑनलाईन दस्तावेज/आवेदन इस कार्यालय में प्रस्तुत किये गये है। यदि किसी व्यक्ति को हस्तांतरण / नामांतरण बावत् आपत्ति हो तो इस सूचना के प्रकाशित होने से 15 दिवस के अंदर लिखित में वैद्य आपत्ति प्रस्तुत कर सकते है। निर्धारित आवधि के पश्चात हस्तांतरण / नामांतरण की कार्यवाही कर दी जावेगी। जिस पर किसी का कोई दावा मान्य नहीं होगा।
सम्पदा प्रबंधक म.प्र.गृह निर्माण एवं अधोसंरचना विकास मंडल संभाग क्र. 2, धनवंतरी नगर जबलपुर

कार्यालय म.प्र. गृह निर्माण एवं अधोसंरचना विकास मंडल, संभाग क्रमांक-2, धनवंतरी नगर जबलपुर
भूखण्ड लीज/हस्तांतरण / नामांतरण हेतु सूचना
सर्व साधारण सूचित किया जाता है कि कामधेनु नगर पनागर जबलपुर में भूखण्ड क्रमांक EWS-22 श्री नितिन पटारिया पिता श्री दिलीप पटारिया के नाम आबंटित है, जिसका विक्रय विलेख दिनांक 09/02/2024 को निष्पादित हो चुका है। उक्त भूखण्ड श्री नितिन पटारिया द्वारा दिनांक 18/07/2024 को विक्रय विलेख के माध्यम से श्रीमती सियाबाई प्रजापति पति श्री संतोष प्रजापति को विक्रय किया है अतः श्रीमती सियाबाई प्रजापति के द्वारा उक्त भूखण्ड उनके नाम लीज हस्तांतरण / नामांतरण हेतु ऑनलाईन दस्तावेज/आवेदन इस कार्यालय में प्रस्तुत किये गये है यदि किसी व्यक्ति को हस्तांतरण / नामांतरण बावत् आपत्ति हो तो इस सूचना के प्रकाशित होने से 15 दिवस के अंदर लिखित में वैद्य आपत्ति प्रस्तुत कर सकते है। निर्धारित आवधि के पश्चात् हस्तांतरण / नामांतरण की कार्यवाही कर दी जावेगी। जिस पर किसी का कोई दावा मान्य नहीं होगा।
सम्पदा प्रबंधक म.प्र.गृह निर्माण एवं अधोसंरचना विकास मंडल संभाग क्र. 2, धनवंतरी नगर जबलपुर

कार्यालय म.प्र. गृह निर्माण एवं अधोसंरचना विकास मंडल, संभाग क्रमांक-2, धनवंतरी नगर जबलपुर
भवन लीज हस्तांतरण / नामांतरण हेतु सूचना
सर्व साधारण सूचित किया जाता है कि सुभाष नगर महाराजपुर जबलपुर में भवन क्रमांक एल.आई.जी. 339 श्री शिवेन्द्र कुमार शुक्ला पिता श्री महेन्द्र कुमार शुक्ला के नाम आबंटित है, जिसका विक्रय विलेख दिनांक 09/12/2015 को निष्पादित हो चुका है। उक्त भवन श्री शिवेन्द्र कुमार शुक्ला द्वारा दिनांक 20/06/2024 को विक्रय विलेख के माध्यम से श्री कुलदीप सिंह ठाकुर पिता श्री संत प्रताप सिंह को विक्रय किया है अतः श्री कुलदीप सिंह ठाकुर के द्वारा उक्त भवन उनके नाम लीज हस्तांतरण / नामांतरण हेतु ऑनलाईन दस्तावेज/आवेदन इस कार्यालय में प्रस्तुत किये गये है यदि किसी व्यक्ति को लीज हस्तांतरण / नामांतरण बावत् आपत्ति हो तो इस सूचना के प्रकाशित होने से 15 दिवस के अंदर लिखित में वैद्य आपत्ति प्रस्तुत कर सकते है। निर्धारित आवधि के पश्चात् लीज हस्तांतरण/नामांतरण की कार्यवाही कर दी जावेगी। जिस पर किसी का कोई दावा मान्य नहीं होगा।
सम्पदा प्रबंधक म.प्र.गृह निर्माण एवं अधोसंरचना विकास मंडल संभाग क्र. 2, धनवंतरी नगर जबलपुर

क्षेत्रीय कार्यालय, मध्य प्रदेश प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड, जबलपुर
लोक सुनवाई की आम सूचना
सर्वसबंधितो को सूचित किया जाता है कि भारत सरकार पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय नई दिल्ली की पर्यावरण प्रभाव आंकलन अधिसूचना क्रमांक एस.ओ. 1533 दिनांक 14.9.2006 यथा संशोधित के प्रावधानों के अन्तर्गत मेसर्स जबलपुर सीमेंट इण्डस्ट्रीज (प्रा.) लिमि. खसरा नं. 297/1, 297/2, 298/2, 300/1, 300/2, 301/1,301/2,3 ग्राम जोगीढाना, तहसील एवं जिला जबलपुर, क्लिंकर ग्राइंडिंग 500 टी.पी.डी. से क्षमता का विस्तार कर 3500 टी.पी.डी. करने हेतु पर्यावरण स्वीकृति के लिये भारत सरकार पर्यावरण एवं वन मंत्रालय नई दिल्ली द्वारा गठित राज्य स्तरीय विशेषज्ञ आंकलन समिति भोपाल से पर्यावरणीय स्वीकृति प्राप्त करने के अनुक्रम में लोक सुनवाई कराने हेतु म.प्र. प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड भोपाल मे आवेदन प्रस्तुत किया गया है। उक्त परियोजना से संबंधित ई.आई.ए. रिपोर्ट एवं परियोजना का कार्यकारी सारांश हिन्दी व अग्रेजी में सॉफ्ट कापी सहित का अवलोकन (1) कार्यालय कलेक्टर जबलपुर, (2) कार्यालय जिला पंचायत, जबलपुर (3) कार्यालय जिला व्यापार एवं उद्योग केन्द्र जबलपुर, (4) कार्यालय ग्राम पंचायत ग्राम जोगीढाना, तहसील एवं जिला जबलपुर, (5) अतिरिक्त प्रधान मुख्य संरक्षक, केन्द्रीय पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय, केन्द्रीय पर्यावरण भवन लिंक रोड क्रमांक 3 राजयोग भवन के पास ई-5 अरेरा कॉलोनी भोपाल (6) मुख्यालय म.प्र. प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड, ई-5 अरेरा कॉलोनी भोपाल एवं (7) क्षेत्रीय कार्यालय म.प्र. प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड प्लॉट नं 455/456 विजयनगर जबलपुर मे कार्यालयीन समय मे किया जा सकता है तथा इसे बोर्ड की बेवसाइड www.mppcb.nic.in पर भी देखा जा सकता है। जिस किसी व्यक्ति को उक्त उद्योग के क्षमता विस्तार पर्यावरणीय विषयक के संबंध में कोई सुझाव, विचार, टीका टिप्पणी एवं आपत्ति प्रस्तुत करना हो तो वह इस सूचना के जारी होने के दिनांक से 30 दिवस के अन्दर क्षेत्रीय अधिकारी म.प्र. प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड विजय नगर जबलपुर(म.प्र.) के कार्यालय में मौखिक अथवा लिखित रूप से कार्यालयीन समय मे प्रस्तुत की जा सकती है। इस परियोजना के लिए लोक सुनवाई दिनांक 15.10.2024 दिन मंगलवार को प्रातः 11:00 बजे मेसर्स जबलपुर सीमेंट इण्डस्ट्रीज (प्रा.) लिमि. ग्राम जोगीढाना, तहसील एवं जिला जबलपुर के परिसर में आयोजित की जायेगी जिसमे सुझाव, विचार, टीका/टिप्पणी एवं आपत्ति दर्ज कराई जा सकती है।
क्षेत्रीय अधिकारी
जबलपुर

गेस्ट टीचर और स्टूडेंटस पर बनाता है दबाव

पुलिस मैडम! हमें नहीं चाहिए गंदा प्रिंसिपल

बरगी नगर संकुल प्राचार्य पर शिक्षिका-छात्राओं ने लगाए गंभीर आरोप

जबलपुर (स्वतंत्र मत)

जिले के एक शासकीय स्कूल का ऐसा मामला सामने आया है, जहां का प्राचार्य विगत कई सालों से स्कूल में पढ़ाने वाली अतिथि शिक्षिका को शारीरिक संबंध बनाने के लिए दबाव डालता आ रहा हैं। वहीं स्कूल में पड़ने वाली छात्राओं से भी अश्लील बातें करता है। ताज्जुब की बात तो यह है की पीड़ित शिक्षिका महिला द्वारा इस बात की शिकायत विभाग के अधिकारी से भी की। परंतु इसके बाद भी पुलिस द्वारा कोई कार्यवाही नहीं की गई। इस बात की खबर जब कांग्रेस पार्टी के कार्यकर्ताओं को लगी, तो उन्होंने पीड़ित महिला एवं स्कूल में पढ़ने वाली दर्जनों छात्रों के साथ एसपी कार्यालय पहुंचकर शिकायत दर्ज करवाई। पुलिस कप्तान कार्यालय पहुंची अतिथि शिक्षिका का अंजलि कुशाल ने बताया कि वे पिछले 11 सालों से शासकीय माध्यमिक उच्च शिक्षा विद्यालय बरगी नगर में पदस्थ है। पिछले कई सालों से स्कूल के संकुल प्राचार्य किशन रायखेड़े द्वारा उन्हें शारीरिक संबंध बनाने के लिए दबाव बनाया जा रहा है। वहीं स्कूल की छात्राओं ने बताया कि उन्हें प्राचार्य से डर लगता है। प्राचार्य द्वारा आए दिन छात्राओं से दूर्व्यवहार किया जाता है।

डीईओ ने नहीं लिया था संज्ञान

कांग्रेस अध्यक्ष सौरभ शर्मा ने बताया कि विगत कुछ दिनों से उच्चतर माध्यमिक विद्यालय बरगी में अय्याश प्रिंसिपल के द्वारा एक अतिथि शिक्षका को अवैध संबंध बनाने के लिए मानसिक रूप से प्रताड़ित किया जा रहा है और इसकी शिकायत जब जिला शिक्षा अधिकारी को की गई तो वह भी मूक दर्शक बनकर प्रिंसिपल का ही साथ दे रहा है, जो साफ जाहिर करता है कि किस तरह जिले का जिला शिक्षा अधिकारी एक शासकीय स्कूल के प्रिंसिपल के सामने कितना बोना है। लगातार शिकायत करने के बाद भी वह उस प्रिंसिपल का ही साथ दे रहा है, ना तो उसने इसके लिए कोई जांच कमेटी बनाई और ना ही उसने प्राचार्य के खिलाफ कोई भी ठोस कदम उठाया।

प्राचार्य पर जल्द हो कार्यवाही

जब यह मामला एनएसयूआई के संज्ञान में आया, तो कार्यकर्ता बरगी नगर पहुंचे एवं वहां उन्होंने पीड़ित शिक्षिका एवं पीड़ित छात्राओं को साथ लेकर विद्यालय का घेराव किया। उन्होंने जिला शिक्षा अधिकारी घनश्याम सोनी को घटनास्थल पर बुलाया। लेकिन उनके द्वारा कोई स्पष्ट जवाब नहीं मिलने पर बरगी थाने का घेराव किया एवं वहां पर उन्होंने मांग रखी कि तत्काल प्रभाव से आरोपी अय्याश प्राचार्य के खिलाफ शिकायत दर्ज की जाए। कांग्रेस ने बताया कि कुछ घंटों तक प्रदर्शन करने के बाद भी पुलिस के द्वारा कोई भी कार्रवाई का आश्वासन नहीं मिला। पीड़ित महिला एवं स्कूल की छात्राओं ने एडिशनल एसपी को शिकायत सौंपते हुए कार्यवाही की गुहार लगाई है। इस दौरान कांग्रेस जिला अध्यक्ष सौरभ नाटी शर्मा सहित दर्जनों की संख्या में कांग्रेस कार्यकर्ता एवं स्कूल की शिक्षिका, छात्राएं उपस्थित रहीं।

दो मिनिट में बनने वाली मैगी घंटों में ले लेती जान

मैगी से बिलबिला कर निकली इल्लियां

पतंजलि स्टोर से खरीदी, नेशनल कंज्यूमर फोरम में की शिकायत

जबलपुर (स्वतंत्र मत)

नेसले कम्पनी के मैगी नूडल्स बच्चों से लेकर बड़ों तक को खाने में बहुत पसंद आती है। लोग इसे बड़े चाव से अलग-अलग तरीकों से बनाकर खाते हैं। परंतु जबलपुर में एक शख्स के साथ कुछ ऐसा हुआ, जिसनें अब आगे से अपने परिवार के सदस्यों को मैगी खिलाने से तौबा कर ली है। दरअसल कंटगी क्षेत्र निवासी अंकित सेंगर ने बताया कि विगत 3 दिन पहले उन्होंने पड़ोस की दुकान पारस पतंजलि से मैगी नूडल्स खरीदी थी। जब उन्होंने घर लाकर मैगी पानी में डाली तो उसमें से सफेद रंग के कीड़े बाहर निकलकर तैरने लगे। उन्होंने घबराकर तुरंत गैस को बंद किया और सीधे किराना दुकान के संचालक के पास शिकायत लेकर पहुंचें। जहां पर दुकानदार ने कहा कि ये कंपनी का प्रोडक्ट है।

पैकेट में दर्ज थी 2025 की एक्सपाइरी डेट- इस मामले में अंकित सैंगर ने बताया कि जब उन्होंनें मैगी नूडल्स खरीदी थी, तो उसमें पैकेजिंग डेट मई 2024 और इसकी एक्सपाइरी डेट जनवरी 2025 दर्ज है । इस बात की शिकायत उन्होंने नेशनल कंज्यूमर फोरम में की है। उन्होंने बताया कि पानी में नूडल्स डालते ही कीड़े तैरने लगे थे । शिकायत करने पर उन्हें बताया गया कि आज मंगलवार को जबलपुर फूड सेफ्टी ऑफिसर घर आकर सैंपल लेंगे। साथ में यह भी कहा गया कि नेस्ले कंपनी की टीम भी कॉन्टैक्ट करेगी।

पहले भी लग चुका मैगी पर बैन

इससे पहले भी जून 2015 में मैगी पर तय लिमिट से ज्यादा केमिकल होने के आरोप के बाद पूरे देश में 6 महीने के लिए बैन लगा दिया गया था। उस दौरान नेसले कंपनी को 38,000 टन मैगी नूडल्स को वापस मंगाकर नष्ट करना पड़ा था। इसके बाद नवंबर 2015 में प्रतिबंध में ढील दी गई थी । इसी साल अप्रैल में नेशनल कंज्यूमर डिस्प्यूट्स रिड्रेसल कमीशन ने नेस्ले इंडिया लिमिटेड के पक्ष में मैगी नूडल्स की बिक्री के खिलाफ सरकार की 2015 की याचिका खारिज की थी। कंपनी नेस्ले ने 4 अप्रैल को स्टॉक एक्सचेंज फाइलिंग में इस बात की जानकारी दी थी। इस मामले में सरकार ने नेस्ले से 284.55 करोड़ रुपए का मुआवजा और 355.41 करोड़ रुपए का हर्जाना भी मांगा था।

कुंडेश्वरधाम में आयोजित हुआ साक्षरता समारोह

जबलपुर (स्वतंत्र मत)। उत्कृष्ट विद्यालय कुण्डेश्वरधाम में साक्षरता समारोह का आयोजन किया गया। जिसमें विधायक संतोष बरकड़े ने भारत सरकार की अभिनव योजना उल्लास नव भारत साक्षरता कार्यक्रम के अंतर्गत उत्कृष्ट कार्य करने वाले अक्षर साथियों, नोडल अधिकारी, संकुल सह समन्वयक, जनशिक्षकों को प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया। इस दौरान सभी से इस आदिवासी बाहुल्य विकास खंड को संपूर्ण साक्षर बनाने का आव्हान किया गया। जिला सह समन्वयक प्रकाश चंदेल और विकास खंड सह समन्वयक नेतराम झारिया द्वारा साक्षरता कार्यक्रम की संपूर्ण जानकारी से अवगत कराया गया। इस अवसर पर जिपं के पूर्व उपाध्यक्ष खिलाड़ी सिंह आर्मो, शिवांशु जायसवाल, सहायक संचालक सुश्री पूनम बरकड़े संकुल प्राचार्य डीएस उर्रेती व अन्य अधिकारी व गणमान्यल नागरिक उपस्थित थे।

जबलपुर के छात्रों ने किया इसरो का भ्रमण

जबलपुर (स्वतंत्र मत)। भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन के तत्वधान में विक्रम साराभाई अंतरिक्ष उपयोग केंद्र में राष्ट्रीय अंतरिक्ष दिवस कार्यक्रम का आयोजन किया गया। उक्त कार्यक्रम में भारत के कई राज्यों के छात्रों ने इसरो सेंटर से विभिन्न जानकारियां प्राप्त की जिसमें ज्ञान गंगा इंस्टीट्यूट आफ टेक्नोलॉजी के दो छात्र तनिश चौरसिया, आदित्य श्रीवास्तव एवं डीन अकादमिक डॉ रुचि पांडे सम्मिलित हुए। भ्रमण के दौरान छात्रों को चंद्रयान-3 के मुख्य प्रयोग हुई अंतरिक्ष अनुप्रयोग केंद्र के उपकरण रोवर पेलोड, लेजर अल्टीमेट, के-बैंड अल्टीमीटर एवं इसरो के आगामी मिशन गगनयान-1, वीनस ऑर्बिटर मिशन (शुक्र यान), एनआईएसएआर मार्स ऑर्बिटर मिशन 2 (मंगलयान-2), चंद्र ध्रुवीय अन्वेषण मिशन के संबंध में विशेष जानकारी वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं इंजीनियर द्वार दी गई कार्यक्रम के मुख्य अतिथि गुजरात यूनिवर्सिटी की वाइस चान्सेलर डॉ. नीरजा ए. गुप्ता एवं कार्यक्रम के मुख्य संगठनकर्तृता अंतरिक्ष अनुप्रयोग केंद्र के संचालक नीलेश एम. देसाई, पर्यावरण शिक्षक पद्मश्री से सम्मानित कार्तिकेय साराभाई एवं वरिष्ठ वैज्ञानिक आरती सरकार द्वारा योजनाबद्ध हुआ।

तकनीकी कर्मचारी संघ ने पीडब्ल्यूडी मंत्री से की

कंपनियों की नीतियों में एकरूपता की मांग

जबलपुर (स्वतंत्र मत)

मध्य प्रदेश विद्युत मंडल तकनीकी कर्मचारी संघ के प्रांतीय महासचिव हरेंद्र श्रीवास्तव ने बताया कि मध्यप्रदेश की सभी बिजली कंपनियों की नीतियों में एकरूपता लाए जाने की मांग को लेकर संघ प्रतिनिधियों ने विगत दिनों प्रदेश के पीडब्ल्यूडी मंत्री राकेश सिंह को एक ज्ञापन सौंपा था, जिस पर तत्काल अंजान लेते हुए ऊर्जा मंत्री को पत्र लिखकर तकनीकी कर्मचारी संघ की मांग का निराकरण करने का आग्रह किया है। सभी बिजली कंपनियां ऊर्जा विभाग के अंतर्गत आती हैं, लेकिन इनकी नीतियों में काफी असमानता और विसंगतियां है, जिसे देखते हुए संघ ने मांग की है कि सभी बिजली कंपनियों की नीतियों में एकरूपता लाई जाए। समझा जाए तो मध्यप्रदेश पूर्व क्षेत्र विद्युत वितरण कंपनी के संविदा कर्मी अरविंद साहू को करंट लगने की वजह उससे दोनों हाथ कट गए थे, इसके बाद पूर्व क्षेत्र कंपनी प्रबंधन के द्वारा 21 अगस्त 2023 को संविदा का अनुबंध बढ़कर नौकरी दी गई है। दूसरी ओर मध्यप्रदेश पावर ट्रांसमिशन कंपनी के अंतर्गत इंदौर में 132 केवी सब-स्टेशन के अंदर 14 दिसंबर 2021 को करंट लगने की वजह से संविदा परीक्षण सहायक अनूप सिंह परते के दोनों पैर काट दिए गए थे। लेकिन पावर ट्रांसमिशन कंपनी प्रबंधन द्वारा अमानवीय रुख अपनाते हुए कार्य के दौरान दिव्यांग हुए संविदा परीक्षण सहायक का संविदा अनुबंध आज तक नहीं बढ़ाया गया। वो आज भी पत्नी एवं बच्चों को लेकर दर-दर भटक रहा है।

ऊर्जा मंत्री से की जायेगी चर्चा- इस मामले को लेकर संघ प्रतिनिधि मंडल के द्वारा पावर ट्रांसमिशन कंपनी के प्रबंध संचालक सुनील तिवारी से रू-ब-रू वार्ता भी की गई थी, इसमें उन्होंने कहा था कि जो भी होगा हर संभव मदद की जायेगी। मंत्री सिंह को जो ज्ञापन सौंपा गया था, उस पर उन्होंने तत्काल संज्ञान लेते हुए ऊर्जा मंत्री तोमर को पत्र लिखकर तकनीकी कर्मचारियों की समस्याओं का निराकरण करने का आग्रह किया है।

उद्योग समन्वय समिति की बैठक 12 को

जबलपुर (स्वतंत्र मत)। जिला स्तरीय लघु उद्योग संवर्धन बोर्ड की बैठक 12 सितंबर को सुबह 11.30 बजे कलेक्टर कार्यालय के सभाकक्ष में होगी। कलेक्टर दीपक सक्सेना की अध्यक्षता में आयोजित इस बैठक में राज्य शासन की क्लस्टर विकास योजनाए औद्योगिक क्षेत्र रिछाई में प्रस्तावित बाउंड्रीवाल एवं नाली निर्माण कार्य, एक्जीबिशन सेंटर के संचालन के सबन्ध में चर्चा होगी।

कॉफी विथ एक्सपर्ट्स कार्यक्रम आज

जबलपुर (स्वतंत्र मत)

नये बिजनेस आइडिया के साथ नया उद्यम स्थापित करने के इच्छुक उद्यमियों के लिये कलेक्टर कार्यालय में स्थापित किये गये निवेश प्रोत्साहन केंद्र में आज शाम 4 बजे से फूड प्रोसेसिंग सेक्टर पर कॉफी विथ एक्सपर्ट्स कार्यक्रम आयोजित किया जायेगा। निवेश प्रोत्साहन केंद्र के सहायक नोडल अधिकारी तथा महाप्रबंधक जिला व्यापार एवं उद्योग केंद्र विनीत रजक के अनुसार निवेश प्रोत्साहन केंद्र की स्थापना के बाद कॉफी विथ एक्सपर्ट का यह दूसरा कार्यक्रम होगा। कार्यक्रम में एक जिला एक उत्पाद.हरा मटर पर विशेष रूप से चर्चा की जायेगी। चर्चा में विशेषज्ञ के रूप में कृषि, उद्यानिकी, पशुपालन एवं वाणिज्यिक कर विभाग तथा नाबार्डए बैंक एवं कृषि विश्वविद्यालय के अधिकारी वित्त सलाहकार और उद्यमी शामिल होंगे।

जिले की 3 लाख 89 हजार 382 बहनों के खाते में पहुंची लाडली बहना की राशि

जबलपुर (स्वतंत्र मत)

मुख्यरमंत्री डॉ. मोहन यादव ने महिला सशक्तिकरण के लिए प्रदेश के 1.29 करोड़ लाडली बहनों को 5474 करोड़ एवं 55 लाख सामाजिक सुरक्षा पेंशन हितग्राहियों को 332.43 करोड़ रूपये का अंतरण किया है। महिला सशक्तिकरण के लिए जागृति की मिसाल बनते मध्याप्रदेश में अब तक लाडली बहना योजना में 24, 499 करोड़ राशि का अंतरण किया गया है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने सोमवार को सागर जिले के कृषि उपज मंडी बीना से यह राशि लाभार्थी बहनों के खाते में जमा की। इसमें जिले के 3 लाख 89 हजार 382 लाडली बहनों के खाते में 47 करोड़ 42 लाख 17 हजार 500 रूपये की राशि का सिंगल क्लिक के माध्य म से अंतरण किया गया। इसके साथ ही जिले के 1 लाख 62 हजार 108 सामाजिक सुरक्षा पेंशन हितग्राहियों के खाते में 9 करोड़ 72 लाख से अधिक की राशि का अंतरण किया गया।

चरक जयंती पर हुये स्वास्थ्य जागरुकता कार्यक्रम

जबलपुर (स्वतंत्र मत)। आयुर्वेद के जनक आचार्य चरक जयंती के अवसर पर आमजन मानस के बेहतर स्वास्थ्य के लिए विभिन्न कार्यक्रम आयोजित हुए। जिसमें (आपतास आयुर्वेद ट्रस्ट) कर्नाटक की संस्था द्वारा राष्ट्रीय भारतीय चिकित्सा पद्धति आयोग (एनसीआईएसएम) विश्व आयुर्वेद परिषद, राष्ट्रीय आयुर्वेद विद्यापीठ, नई दिल्ली, मोरारजी देसाई राष्ट्रीय योग संस्थान के समर्थन एवं मार्गदर्शन में एक राष्ट्रीय स्तरीय प्रतियोगिता विषय आयुग्राम 2.0 बदलाव के लिए चरक, गांव-गांव स्वास्थ्य और आयुर्वेद की अलख जगाने के लिए आयोजित की गई। जिसमें देश भर से 57 कॉलेज की 82 टीमों के 82 कोआर्डिनेटर और 1220 छात्र-छात्राएं प्रतिभागी रहे। जिसमें मध्यप्रदेश से केवल पूर्णायु आयुर्वेद चिकित्सालय एवं अनुसंधान विद्यापीठ बालिका महाविद्यालय की टीम चयनित की गई, जिसने देश में द्वितीय स्थान प्राप्त किया। प्रतियोगिता के लिए पूर्णायु महाविद्यालय की 15 छात्राओं की टीम आयुर्दा ने ग्राम हिनौता डगडगा का चयन किया। गांव में 7 दिवसीय शिविर में विभिन्न गतिविधियां जैसे नुक्कड़ नाटक, रैली, सभाओ के माध्यम से आंगनबाड़ी, शासकीय स्कूल, यहां तक की घर-घर जाकर लोगों को स्वस्थ जीवनशैली एवं आयुर्वेद चिकित्सा के बारे मे जागरुक किया।

विक्टोरिया अस्पताल में पंखा लेकर पहुंच रहे मरीज

आईसीयू, वार्डो में महीनों से बंद पड़े एसी-पंखे

जबलपुर (स्वतंत्र मत)

रविवार-सोमवार की दरम्यानी रात कांग्रेस के दर्जनों कार्यकर्ता जिला अस्पताल विक्टोरिया जा पहुंचे। उस दौरान डॉक्टर्स से लेकर अस्पताल का कई स्टॉफ अपने घर जा चुका था। वहीं मरीज अपने वार्डो में आराम कर रहे थे। वहीं कुछ मरीज आईसीयू में भी भर्ती थे। इस दौरान अचानक ही एक दर्जन से अधिक कांग्रेस कार्यकर्ता जिला अस्पताल के आईसीयू वार्ड में पहुंच गए। उन्होंने देखा कि आईसीयू वार्ड में लगे सभी एसी बंद है, पंखे भी ना के बराबर काम कर रहे हैं। मरीजों की समस्या को देखते हुए कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने आईसीयू वार्ड के बाहर ही भीड़ लगा दी। जानकारी मिलते ही सीएमएचओ के साथ ओमती थाना पुलिस मौके पर पहुंची। कांग्रेस कार्यकर्ताओं का आरोप है कि आईसीयू में एसी बंद होने के कारण मरीज परेशान हो रहे हैं।

विभागीय लापरवाही, मरीज हलाकान- मौके पर पहुंचे कार्यकर्ताओं ने जब पूछताछ की तो उन्हें पता चला की अस्पताल में लगभग 3 महीनें से ऐसी और पंखे खराब पड़े हुए है। मरीजों के परिजनों को अपने खुद के पंखे लाकर रखना पड़ रहा है। वहीं मौके पर पहुंचे कांग्रेस के नगर अध्यक्ष सौरभ शर्मा का कहना है कि जिला अस्पताल का आईसीयू वार्ड जनरल वार्ड से भी बदतर स्थिति में पहुंच गया है। आईसीयू वार्ड उसे कहते हैं जहां पर अति गंभीर मरीज भर्ती होते हैं, लेकिन यहां पर स्वास्थ्य विभाग की लापरवाही के चलते मरीज परेशान होने को मजबूर है। वहीं मामले की जानकारी लगते ही मौके पर सीएमएचओ डॉ. संजय मिश्रा भी पहुंच गए। उन्होंने शीघ्र की समस्या का निदान करने की बात कही है।

धान पंजीयन, खरीदी का निराकरण करेंगी टीम

जबलपुर (स्वतंत्र मत)। खरीफ विपणन वर्ष 2024.25 में ज्वार, बाजरा एवं धान उपार्जन में किसानों की पंजीयन एवं खरीदी प्रक्रिया में आने वाली तकनीकी समस्याओं के निराकरण के चार सदस्यों के टेक्निकल सपोर्ट ग्रुप का गठन कलेक्टर दीपक सक्सेना ने किया है। टेक्निकल सपोर्ट ग्रुप में जिला सूचना विज्ञान अधिकारी आशीष शुक्ला, पनागर में पदस्थ कनिष्ठ आपूर्ति अधिकारी पल्लवी जैन, कलेक्टर कार्यालय की खाद्य शाखा के कम्प्यूटर ऑपरेटर रत्नेश साहू एवं विपणन संघ के कम्प्यूटर ऑपरेटर आशीष पांडेय को शामिल किया गया है।

हितकारिणी प्रकाशन लिमिटेड के लिए **प्रकाशक एवं मुद्रक- राम असरानी** द्वारा प्रेस काम्पलेक्स सिविक सेंटर जबलपुर से प्रकाशित एवं हितकारिणी प्रिंटिंग प्रेस, सिविक सेंटर जबलपुर से मुद्रित. **प्रबंध सम्पादक- सुबोध दुबे, सम्पादक- राजेन्द्र मिश्रा, स्थानीय सम्पादक- महेश महदेल** * *पीआरबी एक्ट के तहत समाचार चयनार्थ उत्तरदायी। ई-मेल-**smatjbp1@ gmail.com,** फोन- 0761-2411414, 4032436 समस्त विवाद जबलपुर न्यायालयाधीन. पोस्टल रजि. नं. एसएसपी जबलपुर/13/2023-25, **RNI No. 64561/96.**